FARID
BOOK DEPOT
Maktab_e_Ashraf
ईमान अफ़रोज़
वाक़िआत
बयान फ़रमूदा : मुबल्लिगे इसलाम
हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब
मद्दा ज़िल्लहुल आली

لَقَدۡ کَانَ فِیۡ قَصَصِہِمۡ عِبۡرَۃٌ لِّاُولِی الۡاَلۡبَابِ ؕ

इन हज़रात के वाक़िआत में दानिशमन्दों के लिए इबरत है। (क़ुरआन)

ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत

(बयाने फ़रमूदा)

मुबल्लिगे इस्लाम हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब मद्दा ज़िल्लहुल आली

मुरत्तिब

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ जाम

FARID BOOK DEPOT (PVT.) LTD.
Corp.off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones:23247075,23289786, 23289159 Fax:23279998

ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत

बयाने फ़रमूदाः मौलाना तारिक़ जमील मद्दा ज़िल्लहु

मुत्तिबः मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ जाम

साइज़ : 23x36/16

बाएहतिमामः मुहम्मद नासिर

(नाशिर)

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
Corp.off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Phones:23247075, 23289786, 23289159 Fax:23279998

IMAN AFROZ WA'QIAAT

By : Tariq Jameel Sb.

Pages : 225 Edition In Hindi : 2014

OUR BRANCHES:

Delhi: Farid Book Depot (P) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi- 6
Ph.: 23265406, 23256590

Farid Book Depot (P) Ltd.
168/2, Jha House, Basti Hazrat Nizamuddin(W),
New Delhi - 110013

Mumbai: Farid Book Depot (P) Ltd.
208, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009 Ph.:022-23731786, 23774786

Printed at : **Farid Enterprises, Delhi-2**

गुज़ारिशः क़ारईने हज़रात से गुज़ारिश है कि फ़रीद बुक डिपो (प्राइवेट) लिमिटेड के बानी अलहाज फ़रीद ख़ान साहब मरहूम की मग़फ़िरत के लिए दुआ फ़रमाएं। अल्लाह उनको ग़रीक़े रहमत और जन्नतुल फ़िरदौस में आला मक़ाम अता फ़रमाए—आमीन

फ़ेहरिस्त

अर्ज़े नाशिर

हिन्दुस्तान में सलतनते मुग़लिया के ज़वाल और अंग्रेज सामराज के क़ब्ज़े से हिन्दुस्तानी मुआशरा बुरी तरह मुतास्सिर हुआ। चुनांचे तहज़ीब व तमद्दुन, मआशरत, सियासत, अदालत, अख़्लाक़ियात, मआशियात और मज़हब इस क़दर मुतास्सिर हुए कि हिन्दुस्तान को अपनी शिनाख़्त क़ाइम रखना मुशकिल हो गई। इन हालात में हिन्दुस्तान के हर तब्क़ए फ़िक्र ने अपने अन्दाज़ में हिन्दुस्तान को आज़ाद कराने में अपना तरीक़ा अपनाया। अव्वल उल्माए हक़ ने अंग्रेज़ से आज़ादिये वतन के लिए मैदाने कारज़ार में पंजा–आज़माई की लेकिन अंग्रेज़ को जो माद्दी बरतरी हासिल थी उल्मा को ख़ातिर ख़्वाह कामयाबी ना मिली तो उल्माए हक़ ने मज़हबे इस्लाम और दीनी उलूम की तरवीज व इशाअत का प्रोग्राम बनाया ताकि मुसलमानों को बिल्ख़ुसूस और तमाम इंसानों को बिल्उमूम दीनी उलूम से रौशनास कराया जा सके। चुनांचे हुज्जतुल इस्लाम मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रह॰ ने दारुल–उलूम देवबन्द की बुनियाद रख कर मुसलमानों को नया सबक़ दिया। चुनांचे हज़रत नानौतवी रह॰ फ़रमाते हैं कि हमने अपनी तहरीक पर इल्मी चादर चढ़ा दी है। यह सिलसिला ऐसा चला कि आज सैंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों दीनी इदारे पूरी दुनिया में इशाअते मज़हब का काम बतरीक़ अहसन सरअन्जाम दे रहे हैं और आज सामराज इस नतीजे पर पहुंचा है कि यह दीनी मदारिस मज़हबे इस्लाम के क़िले हैं। चुनांचे आज मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से दीनी इदारों पर क़दग़न लगाई जा रही है। यह थी हमारे अकाबिर उल्माए हक़ की बसीरत और हिक्मत कि बज़ाहिर मौलवी बनाने

वाले इदारे दीने इस्लाम के क़िले साबित हुए। दारुल उलूम देवबन्द के बतन से ऐसे ऐसे सपूत और नाबग़ा रोज़गार शख़्सियात पैदा हुईं कि जिन पर ज़माना फ़ख़्र करता है। इसी इदारे से शैख़ुल हिन्द मौलाना महमूद हसन रह०, शैख़ुल इस्लाम सय्यद हुसैन अहमद मदनी रह०, ख़ातिमुल मुहद्दिसीन हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह०, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०, हजरत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी रह०, हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद मियाँ, मौलाना हिफ़ज़ुर्रहमान सैवहारवी रह०, हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी रह०, हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हसन रह०, शैख़ुल अदब हज़रत मौलाना एज़ाज़ अली रह०, हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर रायपुरी रह० और दीगर सैंकड़ों अकाबिर जिन्होंने तालीम व तरबियत, दर्स व तदरीस, तसनीफ़ व तालीफ़, वअज़ व नसीहत, सियासत, अदब, सुलूक व तसव्वुफ़ और ख़िताबत में अपने अपने जौहर दिखाए। इस इदारे के फ़ैज़ याफ़्ता दाइये क़ुर्आने बानी तब्लीग़ी जमाअत हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास देहलवी रह० ने मुन्फ़रिद और अनोखे अंदाज़ में मुसलमानों को क़ुर्आन और इत्तिबाए सुन्नत में रंगने के लिए तब्लीग़ी जमाअत की बस्ती निज़ामुद्दीन में दाग़ बैल डाली। चुनांचे आज जहां दीनी इदारे एक बहुत बड़ा फ़रीज़ा सरअन्जाम दे रहे हैं वहां तब्लीग़ी जमाअतों की शक्ल में बस्ती बस्ती, गली गली, नगर नगर मुसलमानों को भूला हुआ सबक़ याद दिला रही है। सैंकड़ों नहीं बल्कि हज़ारों लाखों मुसलमान इस मेहनत के नतीजे में दुनिया व आख़िरत की कामयाबी के लिए रवां दवां है। यह भी एक हक़ीक़त है कि हज़ारों ग़ैर मुस्लिम इसी दावत के नतीजे में उम्मते अहमद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दामन से वाबस्ता हुए। बस्ती

निज़ामुद्दीन से तरतीब पाने वाला क़ाफ़िला दुनिया के कोने कोने में पहुंच चुका है और आज तमाम अकाबिरे हक़ की काविश और हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास रह० देहलवी की मेहनत बराबर फल दे रहे हैं। यह कहना भी बेजाना होगा की दीनी इदारों को तल्बाए दीने हक़ की नई कुमक यही तब्लीग़ी जमाअत फ़राहम कर रही है। अल्लाह तआला से दिली दुआ है तब्लीग़ी जमाअत और तब्लीग़ी जमाअत के अकाबिर, इन्सानों व दीगर मख़्लूक़ात के शर से महफ़ूज़ रहें। आमीन।

यक़ीनन तब्लीग़ी जमाअत अपने अन्दर मज़बूत निज़ाम रखने और उसूलों की पाबन्दी की वजह से ही कामयाब है। तब्लीग़ी जमाअत में कभी भी किसी शख़्सियत की सहर-अंगेज़ी को ख़ातिर में नहीं लाया और ना ही कभी किसी शख़्सियत की मरहूने मिन्नत रही है बल्कि तब्लीग़ी जमाअत के अकाबिर दीने इस्लाम की रौशनी में उसको बुरा समझते हैं। क्योंकि जो जमाअतें शख़्सियात की वजह से क़ाइम है वह शख़्सियात या शख़्स के उठ जाने या चले जाने से इख़्तिलाफ़ व नज़ाअ का न सिर्फ़ शिकार हो जाती हैं बल्कि अक्सर अपना वजूद भी खो देती हैं जबकि तब्लीग़ी जमाअत अपने निज़ाम, उसूलों और इख़्लास से तय पाने वाले तरीक़ों की वजह से दिन बदिन तरक़्क़ी की मनाज़िल तय कर रही है। इसलिए किसी शख़्सियत के उठ जाने या चले जाने के बावजूद अपनी मंज़िल की तरफ़ रवां दवां है।

तब्लीग़ी जमाअत का यह ऐजाज़ है कि जिस तरह वह अपने अन्दर एक मज़बूत निज़ाम और उसूल रखती है उसी तरह हर दौर में तब्लीग़ी जमाअत ऐसे ऐसे अकाबिर और शख़्सियात मयस्सर रही हैं जो अपनी लगन, इख़्लास, तक़्वा लिल्लाहियत की वजह से ना

सिर्फ़ तब्लीग़ी हल्के में बल्कि मुसलमानों के तमाम मकातिबे फ़िर्क ख़ुसूसन अह्ले सुन्नत वलजमाअत (देवबंद) और आम इन्सानों में इज़्ज़त की निगाह से देखे गये और उन्होंने हर मजलिस व हल्के में अपना रंग जमाया जैसा कि ख़ुद बानी तब्लीग़ी जमाअत हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास देहलवी रह॰ और बादहु हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह॰ शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह॰, हज़रत मौलाना इनामुल हसन रह॰ हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर पालनपुरी रह॰, हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन रह॰ और पाकिस्तान में अमीर मुहतरम अल्हाज हाजी अब्दुल वहाब साहब मद्दा ज़िल्लहु।

आज कल अपनी सहरअंगेज़ी, मेहनत और इख़्लास की वजह से हज़रत मौलाना तारिक़ जमील मद्दा ज़िल्लहु हैं जिनके बयान में जहाँ इख़्लास, तड़प, दर्द होता है वहाँ क़ुर्आन व हदीस से भरपूर दलाइल, इब्रत व मुइज़्ज़त से लबरेज़ वाक़िआत और उम्मते मुस्लिमा की बेहिसी व बेकसी पे दर्द मंदाना अपील जो न सिर्फ़ तब्लीग़ी हल्क़ों बल्कि तमाम मुसलमानों में मक़्बूले आम हैं वहां तब्दीली का ज़रिआ भी हैं। सुना है मौलाना तारिक़ जमील साहब जो एक ज़मीनदार घराने से तअल्लुक़ रखते हैं डॉक्टर बनने के लिए घर से निकले तब्लीग़ी भाइयों की दावत से रायवन्ड आये और फ़िर ऐसे आये की डॉक्टर नहीं बल्कि दीने इस्लाम के नामवर मुबल्लिग़ बन गए।

मौलाना तारिक़ जमील साहब के बयानात आडियो, वीडियो कैसिट के अलावा किताबी शक्ल में मुख़्तलिफ़ इदारों ने अपने अपने अन्दाज़ में शाये किये हुए हैं। ज़ेरे नज़र किताब "ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत" तक़ारीर में बयान कर्दा वाक़िआत हैं जो

मौलाना अपनी बात समझाने के लिए मुनासिब मौक़े पर बयान करते हैं। वाक़िआत, तमासील, अशआर और मुशाहिदात बात को समझाने में बहुत अहमियत रखते हैं और यह क़ुर्आन का उस्लूब है। इसी वजह से तमाम वाक़िआत को अलग किताबी शक्ल दी गई है ताकि कम वक़्त में ज़्यादा इस्तिफ़ादा मुम्किन हो सके। ज़ेरे नज़र किताब "ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत" की मुन्फ़रिद ख़ुसूसियात ये हैं।

1—अब तक होने वाले बयानात में तमाम वाक़िआत

2—वाक़िआत में बयान कर्दा आयात पर ऐराब

3—तमाम क़ुर्आनी आयात की सूरत का नाम और आयत नम्बर

4—वाक़िआत में तक्रार नहीं है हाँ अगर किसी वाक़िए से मुख़्तलिफ़ नतीजा अख़ज़ किया हो तो इस्तिफ़ादे और इस्लाह की ग़र्ज़ से शामिल किया गया है।

उम्मीद है क़ारईन किराम इस मेहनत को क़दर की निगाह से देखेंगे। नीज़ इल्तिमास है कि अगर कोई ख़ामी, कोताही, ग़ल्ती महसूस फ़रमाएं तो मुरत्तिब को मुत्तला फ़रमाएं ताकि आईन्दा ऐडिशन में इस्लाह हो सके।

मुहम्मद यूसुफ़

यकुम रमज़ानुल मुबारक 1425हि०

बमुताबिक16 / अक्तूबर 2004ई०

हज़रत अली में चालिस आदमियों की ताक़त

हज़रत अली रज़ि॰ से बढ़ कर कौन कमाई कर सकता था ख़ैबर के दरवाज़े को अकेले पकड़ कर उठा कर फैंक दिया ऐसे ताक़तवर थे कि ख़ैबर के दरवाज़े को जैसे चालिस आदमी खोलते थे उसे पकड़ा और उठा के फैंक दिया वह कमाई नहीं कर सकते थे? दो बेटियों को रोटी नहीं खिला सकते थे। वह किस बात पर कुर्बान हो रहे हैं हमारे लिए कुर्बान हो रहे हैं कि हमने कल्मे को सारे इन्सानों तक पहुंचाना है चार दिन की भूक बर्दाश्त कर लो कोई बात नहीं हज़रत अली रज़ि॰ सर्दी में बाहर फिर रहे हैं परेशान हैं इतने में हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी बाहर निकले आपने फ़रमाया ऐ अली रज़ि॰ इस सर्दी में क्या कर रहे हो? अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं क्या करूं, भूक इतनी सख़्त लगी हुई है कि घर में बैठा नहीं जाता और ऊपर से सर्दी सर्दी में भूक भी ज़्यादा लगती है आपने फ़रमाया अली रज़ि॰! मैं भी भूका हूँ मुझे भी भूक ने घर से निकाला है आगे चले तो कुछ सहाबा रज़ि॰ बैठे थे आप स॰ ने पूछा यहाँ क्या कर रहे हो? कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! भूक की शिद्दत ने घर से निकाल दिया है फ़रमाया अच्छा भाई! अब तो कुछ करना पड़ेगा एक खजूर का दरख़्त सामने खड़ा है सर्दी का ज़माना है सर्दी में खजूरें कहाँ से आती हैं आप स॰ ने फ़रमाया कि ऐ अली! जाओ इस खजूर से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि हमें खजूर खिलाओ। हज़रत अली रज़ि॰ दौड़े दौड़े गये खजूर के दरख़्त से खजूर गिराने का कहा तो खजूर के पत्तों में से ताज़ा ताज़ा खजूरें गिरने लगीं हम से तो

खजूरें ही अच्छी थीं कि अल्लाह के रसूल की बात को मानती थीं हज़रत अली रज़ि॰ की झोली भर गई आप उठा के लाए कि भाई खाओ, सबको खिलाया खुद भी खाया उनको भी खिलाया पेट भर गया कुछ बच गईं फ़रमाया जाओ ये फ़ातिमा रज़ि॰ को भी दे के आओ वह भी कई दिनों से भूकी है भूक पर उम्मत को उठाया।

हुजूर स॰ ने फ़रमाया आज के बाद मैं तेरा बाप और आयशा रज़ि॰ तेरी माँ

हज़रत बशीर इब्ने अकरमा रज़ि॰ एक सहाबी हैं उनके बाप अल्लाह के रास्ते गये वहाँ शहीद हो गए माँ पहले इन्तिक़ाल कर गई थीं। यह अकेले थे। जब लश्कर वापस आया तो अपने बाप से मिलने के शौक़ में मदीने से बाहर जाकर खड़े हो गए कि बाप को जाकर मिलूंगा तो जब सारा लश्कर गुज़रा तो बाप नज़र नहीं आया। तो फिर भागे हुजूर स॰ की तरफ़ आप स॰ आगे आगे जा रहे थे पैदल ही थे। आगे जाकर खड़े हो गये। या रसूलुल्लाह स॰ मेरे बाप नज़र नहीं आ रहे। तो आप स॰ ने नज़रें चुरा लीं। فاعرض عنی तो आप ज़ब्त ना कर सके और आँसू बहने लगे तो हज़रत बशीर फ़रमाते हैं मैं आप की टांगों से लिपट गया और मैंने रोना शुरू कर दिया कि या रसूलुल्लाह स॰ मेरी माँ पहले चली गई बाप भी चला गया अब मेरा दुनिया में कोई नहीं है तो हुजूर स॰ ने फ़ौरन फ़रमाया اما ترضا ان يكون رسول الله اباكم وعائشة امك क्या तू राज़ी नहीं कि आज के बाद अल्लाह का रसूल स॰ तेरा बाप और आयशा तेरी माँ हो।

तो हम अपने पहलों की कहानियाँ पढ़ें डाईजेस्ट ना पढ़ें। सहाबा रज़ि॰ की जिंदगियां पढ़ें उन्होंने किस तरह अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और लोग हम से कहते हैं लिखा हुआ है कि बीवी

छोड़के चले जाना मैं उनसे कहता हूँ जहाँ लिखा है वहां आप पढ़ते नहीं और जहाँ आप पढ़ते हैं वहाँ लिखा नहीं जंग अख़बार में तो नहीं लिखा होगा। और डाईजेस्ट में तो नहीं लिखा होगा। यह तो क़ुर्आन में लिखा होगा हदीस में लिखा होगा। सहाबा की सीरत में लिखा होगा। कैसे कैसे उन्होंने अल्लाह के कल्मे को फैलाने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाई और इन नस्लों तक इस्लाम पहुंचाया। तो आप भाई बहनें भी इसका इरादा करें कि आज के बाद ऐ अल्लाह तेरी मान कर चलेंगे और तेरे हुक्मों पर चलेंगे।

सारा घर लुटा दिया क्या इसी का नाम इस्लाम है?

एक साथी रूस की जमाअत में गया पीछे उसको सौलह (16) लाख का नुक़्सान हुआ वो वापस आया तो उसके सारे रिश्तेदारों ने उसका जीना हराम कर दिया तबलीग़ करता रह और भी कर सारा घर लुटा दिया इसी का नाम इस्लाम है कि अपने बच्चे दर दर भीक मांगते रहें वह नीम पागल हो गया एक दफ़ा हम गश्त कर रहे थे बाज़ार में सूकड़ मंडी में, तो वहाँ वह भी बैठा हुआ था और जो मंडी का ताजिर था वह कहने लगा कि मौलवी साहब यह कोई तबलीग़ है इस बेचारे का सारा घर लुट गया सौलह लाख का नुक़्सान हुआ मैंने उस से कहा तुझे मुबारक हो! वह हैरान हुआ, उन्होंने कहा मौलवी साहब यह क्या कह रहे हो मैंने कहा इज्माली बात तो यह है कि यह नुक़्सान उसके मुक़द्दर में था।

مـا اصـابـك لم يكن ليخطئك وما اخطئك لم يكن ليصيبك رفعت القلام ويجفت الصحف

नबी का फ़रमान है जो तक्लीफ़ आने वाली है उसे कोई हटा नहीं सकता। जो राहत आने वाली है उसको कोई रोक नहीं सकता। यह तक्लीफ़ आनी थी। कारोबार में घाटा आना था।

तम्हारी इस मंडी में रोज़ाना घाटे पड़ते हैं। लाखों के घाटे पड़ते हैं तुमने कभी शोर मचाया तुमने कभी कहा कि उसके बच्चे भूके मर रहे हैं सूदी कारो बार करते करते जब वक़्त आता है दीवालिये निकल जाते हैं। ये तब्लीग़ में गया था इसका नुक़्सान हुआ इसलिए शोर मचा रहे हो इसका नुक़्सान होना था लेकिन यह मुबारक शख़्स है कि इसका नुक़्सान सहाबा किराम रज़ि॰ के नुक़्सान से मुशाबह हो गया।

सब बस्ती वाले बरबाद हो गए

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का एक बस्ती पर गुज़र हुआ देखा तो सब बरबाद हुए पड़े हैं हज़रत ईसा ने फ़रमाया कि इन पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसा है। فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ (सूरह अलफ़ुजरात आयत14)

तेरे रब के अज़ाब का कोड़ा बरसा लेकिन आज के कुफ़्र पर अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा क्यों नहीं बरस रहा? इसलिए कि आज मज़बूत इस्लाम दुनिया में नहीं है। आज खरे कल्मे वाले कोई नहीं हैं। जिस ज़माने में जब जिंस वक़्त में माज़ी में मुस्तक़्बिल में हाल में जबभी यह कल्मे वाले कल्मे की हक़ीक़त को सीख लेंगे तो अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बड़ी से बड़ी माद्दी ताक़त पर बरसेगा। चाहे वो ऐटम की ताक़त हो, चाहे वो तलवार की ताक़त हो, चाहे वो हुकूमत की ताक़त हो, अल्लाह के अज़ाब का कोड़ा बरसेगा जब कल्मे वाले वजूद में आऐंगे। हज़रत ईसा फ़रमाने लगे यह सब अल्लाह की नाफ़रमानी की वजह से हलाक हुए हैं और आपको ये पता है कि हज़रत ईसा अलै॰ की आवाज़ पर मुर्दे ज़िंदा होते थे आपने निदा की कि ऐ बस्ती वालो! जवाब आया लब्बैक या नबी अल्लाह।

हुजूर स॰ को देखना, और माँ बाप के पास रहना दीन है

हज्जतुल विदा के बाद आप स॰ दो ढाई महीने भी ज़िंदा नहीं रहे हज्जतुल विदा के बाद आप स॰ ने मुआज़ रज़ि॰ को फ़रमाया मुआज़ यमन जाओ वहाँ जाओ और عسى ان لاتلقى بعد عامى هذا अब तू आएगा मुझे नहीं पाएगा · لعلك تمر بمسجدى هذا जब तू आएगा मस्जिद तो होगी मैं नहीं हूँगा हुजूर स॰ को देखना दीन है और माँ बाप के पास रहना दीन है। उनकी ख़िदमत करना दीन है। उनके लिए कमाई करना दीन है लोगों को दीन के मसाइल बताना भी दीन है। और मुआज़ बिन जबल रज़ि॰ भी अह्ले फ़त्वा में से थे हूजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ना उनके अहकाम सुनना ये सारी दीनी अवामिर हैं लेकिन आप खुद इस दीन को कुर्बान करवा कर कह रहे हैं कि यमन जा यमन जा।

बताओ भाई पूरी दुनिया में जमाअत भेजनी है क्या करें?

हज़रत मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रहमतुल्लाह के सामने छः या सात आदमी होते थे उनसे कहते हाँ भाई! बताओ पूरी दुनिया में जमाअत भेजनी है, क्या करें? इसमें शरीक एक आदमी ने मुझे बताया कि हमने कहा ये क्या शैख़ चिल्ली के मंसूबे बना रहे हैं छः आदमी हैं और कहते हैं कि पूरी दुनिया में जमाअतें भेजनी हैं इनका दिमाग़ तो ख़राब नहीं हो गया या हमारा दिमाग़ ख़राब है सारी दुनिया को सामने रख कर सोच रहे हैं और तरतीब दे रहे हैं कि सारे आलम में जमाअतें भेजनी हैं सारे आलम में

कल्मा फैलाना है क्या करें अगर हम सारे आलम की फ़िक्र नहीं करते तो हमें ख़त्मे नुबूवत वाला नूर नहीं मिल सकता और अब अल्लाह की निगाह बदल जाएगी इस पर अब ज़ाए करना। एक है कुर्बान करना जमाअत में गया माँ को तक्लीफ़ हो गई ये ज़ाए नहीं ये कुर्बानी हो रही है बाप को परेशानी हो गई बच्चे रो रहे हैं बीवी परेशान है और ताने दिये जा रहे हैं कि ये देखो भाई ये कौनसी तब्लीग़ है? ये कुर्बानी है ये जो रोना है ये अल्लाह के अर्श के दरवाज़े खुलवाएगा।

कल्मा सीखो इस्लाम वाले बन जाओ

हज़रत शरजील बिन हस्ना रज़ि० एक दुब्ले पत्ले से सहाबी रज़ि० हैं वहि कातिब थे यानी लिखते थे मिस्र में एक किला फ़तह नहीं हो रहा था कुछ दिन ज़्यादा गुज़र गये जब मुहासरा शुरू हुआ रोज़ाना मुहासरा करते थे एक दिन जब शरजील बिन हस्ना रज़ि० को बहुत जोश आया घोड़े को ऐड़ी लगा के आगे बढ़े और फ़सील के क़रीब जा के फ़रमाया ऐ क़बीतो! सुनो हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं अगर उसका तुम्हारे इस क़िले को तोड़ने का इरादा हो जाए तो आन की आन में तोड़ सकता है और लाइलाहा इल्लल्लाह। अल्लाहुअक्बर। कह कर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आ गिरा उन्होंने ये कल्मा सीखा हुआ था कल्मा पढ़ कर जब उंगली उठाई तो सारा क़िला ज़मीन के साथ मिल गया मैं आपको पक्की रिवायतें बता रहा हूँ अपनी तरफ़ से नहीं सुना रहा वह कल्मा सीखा हुआ था ये वह गधे नहीं थे कि जिसने शेर की खाल को पहन रखा था हम गधे हैं कि जिन्होंने शेर की खाल को पहन रखा है और कहते हैं कि हम इस्लाम वाले हैं अभी तो हमने कल्मा सीखा नहीं है।

दुनिया की मुहब्बत और बुरों की सोहबत ने हलाक कर दिया

हज़रत ईसा ने फ़रमाया तुम्हारा गुनाह क्या था और तुम किस सबब कि वजह से हलाक हो गये? आवाज़ आई। हमारे दो काम थे जिसकी वजह से हम हलाक हुए एक तो हमें दुनिया से मुहब्बत थी एक तवाग़ियत के साथ मुहब्बत थी हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया कि तवाग़ियत के साथ मुहब्बत से क्या मतलब आवाज़ आई बुरे लोगों का साथ देते थे और बुरों की सोहबत में बैठते थे पूछा दुनिया की मुहब्बत से क्या मतलब? आवाज़ आई दुनिया से मुहब्बत इस तरह थी जैसे माँ बच्चे से मुहब्बत करती है जब दुनिया आती थी तो हम ख़ुश होते थे और जब दुनिया हाथ से निकलती थी तो हम ग़मगीन होते थे हलाल हराम का ख़्याल किये बग़ैर दुनिया कमाते थे और जाएज़ और नाजाएज़ का ख़्याल किये बग़ैर दुनिया ख़र्च करने में भी जाएज़ व नाजाएज़ को नहीं देखते थे इस पर हमारी पकड़ हुई हज़रत ईसा अलै॰ ने फ़रमाया फिर तुम्हारे साथ क्या हुआ आवाज़ आई रात को हम सब अपने घरों में सोये हुऐ थे जब सुबह हुई तो हम सब हाविया में पहुंच चुके थे पूछा ये हाविया क्या है? कहा गया कि हाविया ये सिज्जीन है पूछा ये सिज्जीन क्या है आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी! सिज्जीन वह कैदख़ाना है जिसका एक अंगारा सातों ज़मीनों से बड़ा है और हमारी अरवाह को उनमें दफ़न कर दिया है हमारी रूहों को उनके अन्दर दफ़न किया है और उसमें दफ़न पड़े हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम ही एक बोल रहे हो दूसरे क्यों नहीं बोलते? आवाज़ आई ऐ अल्लाह के नबी! तमाम को आग की लगामें चढ़ी हुई हैं वो नहीं बोल सकते मेरे मुंह में लगाम नहीं है मैं

इसलिए बोल रहा हूँ फ़रमाया तू क्यों बचा हुआ है? कहने लगा मैं हाविया के किनारे पर बैठा हुआ हूँ और मेरे मुंह में लगाम नहीं है वजह इसकी ये है कि में उनके साथ तो रहता था लेकिन उन जैसे काम नहीं करता था तो उनके साथ रहने की वजह से मैं भी पकड़ा गया मैं किनारे पर बैठा हूँ लेकिन लगाम नहीं चढ़ी पता नहीं कि नीचे गिरता हूँ या अल्लाह तआला अपने करम से मुझे बचाता है मुझे इसकी ख़बर नहीं है।

अल्लाह से दुआ मांगो कि कल्मा ज़िन्दा हो जाए

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम इस कल्मे को लेकर उठते हैं और सामने पूरी दुनिया बातिल है हज़रत नूह अलैहिस्सलाम और हुज़ूरे अक्रम स॰ में एक चीज़ मुश्तरक है हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को भी सारी दुनिया की तरफ़ नबी बना कर भेजा गया और आप स॰ को भी सारी दुनिया की तरफ़ भेजा गया सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उस ज़माने में दुनिया सिर्फ़ उतनी ही थी जिसमें हज़रत नूह अलै॰ भेजे गये लेकिन हुज़ूर स॰ को क़यामत तक का ज़माना दे दिया गया और आप स॰ क़यामत तक के लिए इन्सानों के रसूल बना दिये गये हज़रत नूह अलै॰ सिर्फ़ अपने ज़माने के नबी थे और वह ज़मानए वहि थी जिसमें वह सारी इन्सानियत थी और कहीं इंसानियत नहीं थी एक अकेले नूह अलैहिस्सलाम इस कल्मे की दावत को लेकर उठे हैं और इस हाल में उठे हैं رَبِّ اِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَّنَهَارًا (सूरह नूह आयत5) या अल्लाह मैं कल्मे को लेकर दिन में भी फिरा रात में भी। कल्मा ज़िन्दा हो जाए इसकी अल्लाह से दुआ मांगो فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِيْ اِلَّا فِرَارًا (सूरह नूह आयत6) नूह अलै॰ कह रहे हैं कि या अल्लाह दावत देता रहा ये मुझसे भागते

रहे हैं इन्हें में तेरी तरफ़ बुलाता रहा ये मुझसे दूर होते रहे मैंने जब भी दावत दी।

وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا (सूरह नूह आयत7)

मैं इन्हें तेरी तरफ़ पुकारता ये मुंह पर पर्दे डालते कानों में उंगलियां देते मुझसे भागते लेकिन ऐ अल्लाह! मैं इसके बावजूद दावत देता रहा।

चौदा कंगरे टूटे और बुतकदे की आग बुझ गई

"नोशैरवान" हैरान है कि मेरे बुतकदे की आग कैसे बुझ गई और मेरे महल के चौदह कंगरे कैसे टूट कर गिर पड़े उनका एक बड़ा पादरी आया और कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा है कि दरयाए फ़रात ख़ुश्क हो गया है और अरब घोड़े ईरानी घोड़ों को भगा के ले जा रहे हैं वह हैरान वह परेशान है कि ये क्या हुआ इस ज़माने में एक ईसाई आलिम था उसको बुलाया उससे ताबीर पूछी उस आलिम ने कहा मेरा एक मामूं शाम में रहता है उससे जाके पूछता हूँ शाम में आकर पूछता है उसने उसके पूछे बग़ैर ही कहा कि मुझे पता है और मैं जानता हूँ कि उसने तुझको किसलिए भेजा है उसने तुझे इसलिए भेजा है कि उसके बुतकदे की आग बुझ गई और उसके चौदह कंगरे टूट के गिर गए उसे जा के बता दो कि जब नबी ज़ाहिर होगा और लकड़ी को लेकर चलेगा आपकी सुन्नते मुबारका थी कि असा हाथ में रख कर चला करते थे जो लकड़ी लेकर चलेगा और कुर्आन की तिलावत हर तरफ़ गूंजने लगेगी।

सुन लो मेरे भाइयो! ज़रा ग़ौर से सुन लो कि ये अलामत क्या बता रही है कि किस वक़्त दुनिया में दीन उठेगा जब कुर्आन की

तिलावत कसरत से होने लग जाएगी जिसके हाथ में लाठी होगी तो फिर याद रखना शाम भी उसका बन जाएगा ईरान भी उसका बन जाएगा फिर आलसासान की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी और कै़सर की हुकूमत भी ख़त्म हो जाएगी और उस नबी का कल्मा बुलंद हो के रहेगा।

तीन आदमी अपने पेशाब में ग़र्क़ हो गए

जब कल्मा अन्दर में आता है तो बातिल ऐसे टूटता है जैसे तुम अन्डे के छिल्के को तोड़ते हो जैसे अल्लाह ने क़ौमे नूह के बातिल को तोड़ा एक भी ना बचा तीन आदमी ग़ार में छिपे उन्होंने कहा यहाँ तो कोई नहीं आएगा, पानी आएगा ना कोई और आएगा, ऊपर से पत्थर रख लिया। और ग़ार में छुप गये मुतमईन हुए अल्लाह अगर चाहता तो पानी को बाहर से भी दाख़िल कर सकता था वह अपनी कुदरत को दिखाना चाहता है तीनों को पेशाब ऐसे ज़ोर का पेशाब कि रोक नहीं सके, पेशाब के लिए बैठ गये अल्लाह तआला ने पेशाब को जारी कर दिया पेशाब बन्द नहीं हुआ निकलता जा रहा है हत्ता कि वह तीनों अपने पेशाब में ग़र्क़ होकर मर गए अल्लाह ने किसी को ना छोड़ा और अपने कल्मे वाले की बात को सच्चा किया और अपने कल्मे वाले नूह को जैसे उसने कहा था رَبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا (सूरह नूह आयत26) या अल्लाह! एक भी चलता हुआ मत छोड़, अल्लाह ने कहा मेरे नूह! देख ले तेरे कल्मे पर मैंने एक को भी ज़िन्दा नहीं छोड़ा सब मरे पड़े हैं सब बरबाद हुए पड़े हैं।

गुनाह से तौबा और आसमान पर चराग़ाँ

जब आदमी तौबा करता है तो आसमान पे ऐसी चराग़ाँ होती है जैसे किसी ने लाइटें जलाई हों तो फ़रिश्ते कहते हैं क्या हुआ

भाई ये रोशनियाँ क्यों हैं तो एक फ़रिश्ता ऐलान करता है। भाई आज एक बंदे ने अपने मौला से सुलह कर ली है तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि इस खुशी में आसमान पर चराग़ाँ करो कि मेरा बंदा आ गया है। तो भाई हम चाहे पुलिस वाले हों, चाहे ज़मीनदार हों, चाहे ताजिर हों, मसला तो हम सब का अल्लाह ही से जुड़ा हुआ है लिहाज़ा हम अपने अल्लाह को मनाने के लिए अल्लाह की तरफ़ रुजू करें और तौबा करें।

तीन सौ साल की उम्र में बच्चे का बालिग़ होना

कौमे आद पर हवा का तूफ़ान आया सारी कौम कैसी गिरी हुई पड़ी है। खुजूर के तनों की तरह कटे हुए पड़े हैं। हवा आई दुनिया की सबसे ताक़तवर क़ौम को तोड़ फोड़ कर रख दिया कि अल्लाह तआला इतने ताक़त वाले हैं की ज़मीन व आसमान उसकी मुट्ठी में है जिसने बड़ी बड़ी क़ौमों को पटख़ दिया क़ौमे आद के बारे में तो अल्लाह तआला फ़रमाता हैं कि क़ौमे आद तुमसे पहले गुज़री है जिनके चालिस पचास हाथ लम्बे क़द होते थे। उन जैसा मैंने पैदा ही नहीं क्या। तीन सौ साल की उम्र में जाकर बालिग़ होते थे। छः सौ, आठ सौ, नौ सौ साल औसत उनकी उम्र होती थी, बीमार नहीं होते थे, बुढ़ापा नहीं आता था, बाल सफ़ेद नहीं होते थे, दाँत नहीं टूटते थे, कमर नहीं टेढ़ी होती थी। सबके सब कुचले गये।

हज़रत लूत की क़ौम पर आसमान से पत्थरों की बारिश

हज़रत लूत की क़ौम में जब वो बुरा फ़ेल फैला और वह औरतों को छोड़कर लवातत का शिकार हुए वह ऐसी बदबख़्त क़ौम थी जिन्होंने ऐसे काम को शुरू क्या जो कभी किसी ने किया ही

नहीं था इसलिए जो अज़ाब क़ौमे लूत पर आया है किसी क़ौम पर नहीं आया जितने अज़ाब क़ौमे लूत पर आए किसी क़ौम पर नहीं आए सबसे पहले अल्लाह जल्ला जलालहु ने जिब्रईल अलैहिस्सलाम को भेजा कि उन बदबख़्तों को उठाओ, उन्होंने "पर" की नोक पर उठाया और पहले आसमान तक पहुंचाया यहाँ तक कि फ़रिश्तों ने इस बस्ती के मुर्ग़ों की अज़ानें सुनीं फिर उल्टा के ज़मीन की तरफ़ फैंका, ऊपर से पत्थरों की बारिश से उनके चेहरे मस्ख़ कर दिये और आँखें धंस गईं चेहरे मस्ख़ कर दिये और आँखें घंसा दीं आँखें धंस गईं चेहरे मस्ख़, पत्थरों की बारिश ज़मीन को جعلنا عاليها (अलक़ुर्आन) ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का हिस्सा ऊपर और फिर हमेशा के लिए पानी के अज़ाब में मुब्तला कर दिया गया वह बहीरा मौत जो है सत्तर मील एक झील है जिसमें कोई जानदार नहीं रह सकता जो उसमें जाता है मर जाता है आज तक वह इस अज़ाब में जल रहे हैं कल्मे की ताक़त ने क़ौमे लूत की ताक़त को तोड़ के दिखा दिया।

हज़रत इब्राहीम अलै. की बीवी सारा और ज़ालिम बादशाह

हज़रत इब्राहीम अलै. की बीवी सारा को ज़ालिम बादशाह ने ग़लत इरादा से पकड़ लिया तो अल्लाह ने सारा मंज़र इब्राहीम की तसल्ली के लिए खोल कर दिखा दिया और इब्राहीम अलै. देख रहे हैं कि वह हाथ बढ़ाता तो हाथ शल होकर नीचे गिर जाता, थोड़ी देर के बाद वह फिर हाथ बढ़ाता तो हाथ शल होकर नीचे गिर पड़ता। (सारे ज़ालिमों को अल्लाह नहीं पकड़ सकता?) क़ादिर है ताक़तवर है।

शाह अब्दुल अज़ीज़ रह॰ (साबिक़ वली अहद सऊदी हुकूमत) ने चोरों को ख़त्म कर दिया

नमाज़ ज़िंदा करो अल्लाह के वास्ते मस्जिदों को आबाद करो। अपनी कमाइयों से हराम को ख़ारिज कर दें अगर कमाई कम पड़ गई ज़रूर कम पड़ेगी तो परेशान नहीं होना नमाज़ पढ़ कर अल्लाह से मांगो। फिर देखो। अल्लाह कैसी कैसी राहें खोलता है। शाह अब्दुल अज़ीज़ रह॰ ने सारे शहर से चोरों को ख़त्म कर दिया था सूलियों पर लटका दिया था एक सऊदी ने मुझे बताया कि सुल्तान अब्दुल अज़ीज़ रह॰ जब मक्के आता था तो बैतुल्लाह की दीवार के साथ टैक लगा कर बैठ जाता और उसके हाथ में तलवार होती और वह मुसल्सल रोता रहता। अब्दुल अज़ीज़ रह॰ के उस्ताद ने पूछा। क्यों इतना रोता है। कहने लगा कि मैंने सब को चोरी से रोक दिया। अब उन्हें रोज़ी कहाँ से खिलाऊँ? तो अल्लाह के सामने आ के रो रहा हूँ कि या अल्लाह तेरा हुक्म तो मैंने ज़िन्दा कर दिया देखो फिर अल्लाह ने बिठा के खिलाना शुरू कर दिया। सात समन्दर पार से मख़्लूक़ आई और उनकी ज़मीन से तेल के चशमे निकाल दिये। ये हराम छोड़ने और हलाल पर आने की बरकत है आज उनको समझ नहीं आ रही कि अपने पैसे कैसे संभालें। क्या अब भी कोई कहेगा कि हम कहाँ से खाऐंगे?

बकरी और हिरनी ने हुज़ूर स॰ की नुबूवत की गवाही दी

एक सहाबी रज़ि॰ बकरी को घसीट कर ज़बह करने के लिए ले जा रहे हैं हुज़ूरे अक्रम स॰ ने सहाबी रज़ि॰ से फ़रमाया तू इसको नर्मी से ले जा और बकरी से कहा कि तू अल्लाह के हुक्म

पर सब्र कर। तो बकरी ने में-में करना बन्द कर दिया। हिरनी को पता है कि मुझे ज़बह किया जाएगा लेकिन वह नबी की बात पर दौड़ती हुई आ रही है और अपने बच्चे को छोड़ के आ रही है आप स. ने उसे बांध दिया और ख़ुद वहीं खड़े हो गये थोड़ी देर हुई तो सहाबी रज़ि. आ गए जो शिकार करके लाए थे आपने फ़रमाया भाई! मैं एक सिफारिश करता हूँ, मैं एक दरख़्वास्त करता हूँ सहाबी रज़ि. ने कहा या रसूलुल्लाह स.! मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हिरनी को खोला आप स. के हवाले किया आप स. ने उसकी रस्सी को छोड़ा कि चली जा अपने बच्चों के पास।

हक़ आया बातिल गया

यमन में एक काहिन कभी घर से बाहर नहीं निकलता था जिस दिन हुज़ूरे अक्रम स. पैदा हुए तो वह काहिन घबरा के घर से बाहर निकला कि ऐ अह्ले यमन! आज से बुतों का ज़माना ख़त्म हो गया जिस दिन आप स. पैदा हुए बड़े बड़े बुतख़ानों के बुतों से आवाज़ आई कि हमारा ज़माना ख़त्म अब नबी स. का ज़माना शुरू हो गया बुतों के तोड़ने वाले का ज़माना आ गया और आप स. के हाथों बुत टूटे आप स. बैतुल्लाह का तवाफ़ फ़रमा रहे हैं, तीन सौ साठ बुत उस वक़्त बैतुल्लाह में थे आप स. चलते जा रहे हैं और बुत को इशारा करते हैं। جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا (सूरह बनी इस्राईल आयत81) और इशारा करते ही बुत टूट कर गिरता है बार बार इशारा फ़रमाते हैं और बुत टूट के गिरते हैं तीन सौ साठ बुत जो बैतुल्लाह में रखे थे हाथ के इशारे से गिर गए। हालांकि उस वक़्त कमान हाथ में थी कमान को किसी बुत से लगाया नहीं बल्कि इशारा करते चले जा रहे थे और बुत टूटते चले जा रहे थे कि बुतों को तोड़ने वाले का ज़माना

आ गया।

हुजूर स. को देखकर एक यहूदी की कैफ़ियत

एक यहूदी मक्के की गलियों में शोर मचाता फिरता है आज कोई बच्चा पैदा हुआ है? बताओ कोई बच्चा पैदा हुआ है? किसी ने कहा फ़लां का लड़का पैदा हुआ है, पूछा कि उसका बाप ज़िंदा है। कहा हाँ। कहने लगा नहीं, नहीं कोई ऐसा बच्चा बताओ कि जिसका बाप मरा हुआ हो कहा कि हाँ अब्दुल मुत्तलिब का पौता पैदा हुआ है कहा हाँ मुझे दिखाओ जब देखा तो चीख़ निकली, अरे बनू इस्राईल से नुबूवत निकल गई और ऐ कुरैश की जमाअत! तुम नुबूवत को आज हम से ले गये एक दिन आएगा ये टक्कर लेगा जिसकी टक्कर की आवाज़ मश्रिक़ और मग़्रिब में सुनाई देगी अभी तो आप स. पैदा हो रहे हैं वह अभी शुरू नहीं किया मोजिज़ा दलीले नुबूवत है करामत दलीले विलायत है और दावत मक़्सदे नुबूवत है। और इत्तिबा सुन्नते मक़्सद की विलायत है मक़्सद की ताक़त मोजिज़े की ताक़त से ज़्यादा होती है। मक़्सद की ताक़त करामत की ताक़त से ज़्यादा होती है। मोजिज़ा दलालत के तौर पर होता है। और मक़्सद असल के तौर पर होता है आप जिसको लेकर आए वो मक़्सद दावत था कि मैं दाई हूँ شَاهِدًاوَّ مُبَشِّرًاوَّ نَذِيْرًا،وَدَاعِيًااِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا (सूरतुल अहज़ाब आयत46) मैं दाई हूँ दाई दावते नुबूवत, नुबूवत का मक़्सद कल्मे की तरफ़ बुलाना, मोजिज़ा दलालते नुबूवत, मोजिज़े में वह ताक़त नहीं जो मक़्सद में ताक़त है और आप के मोजिज़े की ताक़त ये है कि उंगली के इशारे से चाँद के दो टुक्ड़े हुए जब आपके मोजिज़े की यह ताक़त है कि चाँद दो टुक्ड़े हुआ तो आपका जो मक़्सद था कल्मे की दावत जब वह मक़्सद वजूद में

आयेगा तो मेरे भाइयों उसकी ताक़त का कौन अन्दाज़ा कर सकता है।

जंगल में झाड़ियों का आपस में मिल जाना

एक मरतबा आप स० जंगल में तशरीफ़ ले जा रहे हैं फ़ारिग़ होने के लिए छोटी छोटी झाड़ियां थीं जिसके पीछे पर्दा नहीं होता था। आप स० ने हज़रत जाबिर रज़ि० से फ़रमाया ऐ जाबिर रज़ि०! जाओ उन झाड़ियों से कहो कि अल्लाह का रसूल कहता है कि मेरे लिए आपस में जुड़ जाओ। हज़रत जाबिर रज़ि० झाड़ियों के पास जा रहे हैं और उनसे कह रहे हैं कि अल्लाह का रसूल फ़रमा रहे है कि मेरे लिए आपस में जमा हो जाओ झाड़ियां भागती हुई आंई और आपस में जुड़ गईं अब पर्दा हो गया, आप स० फ़ारिग़ हुए खड़े हुए झाड़ियां फिर चलते चलते अपनी जगह पर जा के खड़ी हो गईं।

पानी पीछे पीछे माँ बच्चा आगे आगे

क़ौमे नूह पर पानी बरसा हमने ज़मीन से चशमे निकाले, आसमान से पानी बरसाया और कायनात के चप्पे चप्पे पर पानी को फैलाया। एक इन्सान ना बचा, हदीस में आता है अगर अल्लाह तआला किसी पंर तरस खाता तो उस औरत पे रहम खाता जो पानी को देख कर बच्चे को लेकर निकली। मासूम बच्चा दूध पीता उसको ले के निकली, पानी पीछे वह आगे, एक टीले पर चढ़ी। पानी उस पर आया फिर उससे ऊंचे पर चढ़ी। पानी वहां पहुंचा। अपनी बस्ती के सबसे ऊंचे पहाड़ पर चढ़ गई। पानी नीचे से ऊपर चढ़ रहा है यहाँ तक कि उसके पाँव को पानी ने पकड़ लिया और उसके सीने तक आया। उसने बच्चे को ऊपर कर

लिया गर्दन तक आया उसने बच्चे को गर्दन से ऊपर कर लिया कि मैं मर जाऊं, बच्चा बच जाए, लेकिन पानी की लहर ने बच्चे को हाथ से छीन कर उसे भी ग़र्क़ किया। उस औरत को भी ग़र्क़ किया। अल्लाह ने किसी को ना छोड़ा। बेफ़रमानों के क़िस्से अल्लाह सुनाता है कि मैं कैसे बेफ़रमानों को पकड़ता हूँ।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त पाक साफ़ दिल में रहता है।

हम गंदा कपड़ा उठा कर फैंक देते हैं, गंदे बिस्तर से उठ जाते हैं ऐसे ही गंदे दिल को अल्लाह उठा के फैंक देता है। सुब्हान अल्लाह हम भी कैसे ज़ालिम हैं अपने लिए तो साफ़ सुथरा कमरा पसंद किया हुआ है। साफ़ सुथ्रा लिबास पसंद किया हुआ है। अपने लिए रोज़ाना नहाना पसंद किया हुआ है। अल्लाह न कपड़ा देखे, न रंग देखे, न कमरा देखे, न मकान देखे, जहाँ अल्लाह ने रहना है वह तो दिल है अल्लाहुअक्बर। अल्लाह फ़रमाते हैं न मैं ज़मीन में आता हूँ न आसमान में आता हूँ कहाँ आता हूँ अपने बन्दे के दिल में आता हूँ न मुझे ज़मीन सहारती है न आसमान सहारता है, मेरे बन्दे का दिल मुझे सहारता है। जिस दिल में अल्लाह ने आना था उस दिल को तूने दुनिया की मुहब्बत से गंदा कर दिया। दुनिया की मुहब्बत से, माल की मुहब्बत से, ज़ेवर कपड़े की मुहब्बत से गंदा कर दिया, ख़राब कर दिया, बरबाद कर दिया, ऐसे दिल को अल्लाह धुत्कारता है, फटकार देता है। अल्लाह सोने को नहीं देखता चाँदी को नहीं देखता कपड़े को नहीं देखता हुस्न व जमाल को क्या देखे। हाँ दिल को देखता है कि दिल में कौन है मैं या मेरा ग़ैर।

पहले तेरी बच्चियों को गर्म तेल में डालूँगा फिर तुझे

फ़िरऔन की एक बांदी थी, उसने कल्मा पढ़ लिया मुसलमान हो गई। ईमान नहीं छुपता, पैसा नहीं छुपता, उसके ईमान का पता लग गया। फ़िरऔन ने बुला लिया। उसकी दो बेटियाँ थीं एक दूध पीती हुई और दूसरी चलती हुई। तेल मंगाया फिर कढ़ा मंगाया। फिर आग जलाई] फिर वह तेल खौलने लगा फिर दरबार सजाया और उसको बुलाया फिर उससे कहने लगा इख़्तियार करो ये तेल का खौलता हुआ लावाया मुल्क और माल दौलत और रिज़्क़ से तेरा मुंह भर दूंगा। बोल क्या बोलती है। मुझे मानेगी तो सब कुछ दूंगा। मूसा अलै॰ के रब को मानेगी तो इस खौलते हुए तेल में जाना पड़ेगा। पहले तेरी बच्चियों को डालूंगा फिर तुझे डालूंगा उसने पता है क्या कहा? कहा ये तो मेरी दो बेटियाँ हैं और होतीं तो वह भी फैंक देती। तू कर जो करना है। फ़िरऔन ने बड़ी बच्ची को उठा कर तेल में डाल दिया। वह सारी जल गई। माँ ऐसे फड़क गई। माँ तो माँ है नां देखो मैं यूं कहा करता हूँ अल्लाह ने अपनी मुहब्बत को जो तशबीह दी है नां अपने बंदों को। माँ की मुहब्बत से दी है। बाप की मुहब्बत से नहीं दी ये नहीं कहा कि बाप से सत्तर गुना ज़्यादा प्यार करता हूँ बल्कि ये कहा माँ से सत्तर गुना ज़्यादा प्यार करता हूँ। तो माँ को ज़्यादा ही प्यार होता है तो जब उसने देखा नां तो उसका कलेजा हिल गया। तो अल्लाह नें रहम खाकर आँखों से ग़ैब का पर्दा हटा दिया उसने बच्ची की रूह को निकलते देखा और रूह रौशन चमकदार थी माँ। सब्र। जन्नत तय्यार हो चुकी है। उसने कहा जन्नत बस वह आई जन्नत और फिर दूध पीता बच्चा तो ज़्यादा क़रीब होता है नां

फ़िरऔन ने फिर उस नन्ही मुन्नी जान को निकलते देखा वह कह रही थी अम्मां अम्मां सब्र। सब्र। जन्नत। जन्नत। तय्यार हो चुकी है। फिर उसने उसकी माँ को भी उठाकर फैंक दिया। जब सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैतुल मक़्दिस में दो रकअत नमाज़ पढ़कर आसमान की तरफ़ जा रहे थे जब आप स॰ ऊपर उठे तो नीचे से जन्नत की ख़ुशबू आई तो आप स॰ ने पूछा जिब्रईल - اشم رائحة الجنة मैं जन्नत की ख़ुशबू सूंघ रहा हूँ तो अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह फ़िरऔन की बाँदी की क़ब्र से ख़ुशबू आ रही है।

हर काम अल्लाह की रज़ा के लिए करो

अल्लाहुअक्बर! अन्दाज़ा लगाइए कि हज़रत अली रज़ि॰ यहूदी के सीने पर चढ़े हुए हैं और उसे क़त्ल करना चाहते हैं और वह मुंह पर थूकता है छोड़ के पीछे हट जाते हैं कहा कि दोबारा आओ यहूदी हैरान अरे क्यों? कहा कि पहले तुझे मैं अल्लाह और रसूल स॰ की वजह से क़त्ल कर रहा था जब तूने मेरे मुंह पर थूका तो मेरे नफ़्स का गुस्सा शामिल हो गया अब अल्लाह और रसूल स॰ की रज़ा नहीं थी अब अपने नफ़्स का गुस्सा था दोबारा आओ लेकिन यहूदी ने कल्मा पढ़ लिया आज तो मुसलमान को क़त्ल कर रहा है किस पर? कि उसने मुझे गाली दे दी तो उन आमाल के साथ उम्मत कहाँ से वजूद पकड़ेगी इस क़िस्से को सुन कर या पढ़ कर मैं हैरान हो जाता हूँ कि इतना तअल्लुक़ रसूलुल्लाह स॰ से कि थूका मुंह पर छोड़ के खड़े हो गये अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करूंगा पहले मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वजह से क़त्ल कर रहा था और अब मैं अपनी वजह से करूंगा।

जान जाए तो जाए मगर आप स० के नाम पर जाए

खन्दक का मौका खूब सर्दी, भूक और इधर अम्र जो कि काफ़िरों के पहलवान थे छलांग लगाते हुए मदीना मुनव्वरा आये और आवाज़ लगाई कि है कोई मेरे मुक़ाबले के लिए। हज़रत अली रज़ि० खड़े हुए या रसूलुल्लाह स० मैं तय्यार हूँ हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अरे! बैठ जा ये अम्र है अम्र जो एक हज़ार के बराबर शुमार किया जाता है हज़रत अली रज़ि० की उम्र चौबिस साल थी और वह (अम्र) लड़ाइयों में फिरता फिराता, आपने फ़रमाया कि बैठ जा ये अम्र है। फिर तीसरी मरतबा वह कहने लगा कि कोई है हज़रत अली रज़ि० ने कहा मैं हूँ आप स० ने फ़रमाया बैठो, आप रज़ि० ने अर्ज़ किया नहीं या रसूलुल्लाह! मुझे जाने दीजिए चाहे अम्र ही है क्या हुआ जान जाएगी तो आप के नाम पर तो जाएगी हज़रत अली रज़ि० आये अम्र ने पूछा कौन हो? कहा अली रज़ि० अब्दे मुनाफ़ कहा नहीं बिन अबी तालिब कहा भतीजा तो कहा हाँ अली रज़ि० ने कहा कि अम्र मैंने सुना है कि तुझे दो बातों की दावत दी जाए तो उस में से एक ज़रूर कुबूल करता है कहने लगा हाँ फ़रमाया मैं तुम्हें ये दावत देता हूँ कि अल्लाह व रसूल स० के साथ हो जा, नहीं नहीं यहाँ ये देखा जाएगा कि अल्लाह व रसूल स० किसके साथ हैं उसके साथ हो जा मुक़ाबले में चाहे बाप हो चाहे जमाअत है चाहे तिजारत है चाहे बीवी है मैं तो अल्लाह और उसके रसूल का गुलाम हूँ उसने घोड़े से छलांग लगाई ऐसे गुस्से में जैसे आग का शोला होता है और ज़ोर से हमलाआवर हुआ मिट्टी का गुबार उठा और दोनों छुप गए

सारे सहाबा फ़िक्रमंद हुए और ऐसे वक़्त में हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी दुआ में लग गए या अल्लाह! मदद फ़रमा इतने में हज़रत अली रज़ि॰ की तक्बीर की आवाज़ सुनाई दी क़त्ल अदू अल्लाह। अल्लाह का दुश्मन क़त्ल हो गया हज़रत अली रज़ि॰ की जो तलवार लगी तो अम्र के दो टुक्ड़े हो गए हज़रत अली रज़ि॰ ने खड़े खड़े शेअर पढ़े जिसका तर्जुमा ये है।

1– कि ऐ कुफ़्फ़ार की जमाअत पीछे हट जाओ तुम्हें पता चल गया है कि अल्लाह अपने अपने रसूल को और उसके मानने वालों को अकेला नहीं छोड़े हुए है।

2– वरना मेरे जैसा अम्र को क़त्ल नहीं कर सकता था। अल्लाह हमारे साथ है जिसने उसको क़त्ल कर के दिखा दिया कि मेरी ताक़त तुम्हारे साथ है।

आप स॰ ने सत्तर (70) मरतबा हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की नमाज़ जनाज़ा पढ़ीः हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ आगे कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और ये हज़रात हुज़ूरे अक्रम स॰ के साथ थे हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ आगे थे, वहशी की ज़द में आ गए दोनों हाथों में तलवार लेकर चल रहे थे की वहशी ने पत्थर के पीछे से बैठ कर जो निशाना मारा और आप स॰ के पेट में बरछा लगा आंतें और जिगर कटा आप रज़ि॰ गिरे और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ उसकी तरफ़ बढ़े हम्ज़ा रज़ि॰ वहशी की तरफ़ गिरते गिरते बढ़े तो वहशी कहने लगा कि मैं भागा कि कहीं मेरा ऊपर कोई हमला ना हो लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ को उल्टी आई और जान निकल गई, जब शुहदा की तलाश हुई आप स॰ ने फ़रमाया चचा कहाँ है? हम्ज़ा कहाँ हैं? देखा ज़िंदों में नहीं, ज़ख़्मियों में भी नहीं मेरा चचा मेरा चचा किसी ने कहा वह तो

शहीद हो गए जब हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और अपने चचा की लाश को देखा कि नाक कटा हुआ, कान कटे हुए, सीना फटा हुआ, कलेजा निकला हुआ, आंतें फटी हुइ, तो आप स॰ इतने रोए इतने रोए कि आप स॰ कि आप की हिच्कियाँ बंध गई। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रोने पर सहाबा रज़ि॰ भी रोने लग गए, सब रो रहे थे आप स॰ इतने ज़ोर से रो रहे थे यहाँ तक कि हज़रत ज़िब्रईल अलै॰ आसमान से आए और आ के यूं अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह स॰! अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि मेरे हबीब गम ना करो हमने आप स॰ के चचा को अपने अर्श पर लिखा है, اسد الله اسد رسوله حمزة हम्ज़ा अल्लाह और उसके रसूल के शेर हैं वहशी से कितना दुख उठाया होगा। सत्तर दफ़ा हम्ज़ा रज़ि॰ पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, जब मक्का फ़तेह हुआ तो वहशी के क़त्ल का हुक्म दिया कि जो वहशी को पाये क़त्ल करे लेकिन जब मदीना मुनव्वरा में आये तो वहशी पर भी तरस आया कि क़त्ल हुआ तो दोज़ख़ में चला जाएगा वहशी ताएफ़ चला गया वहशी के पास ख़ुसूसी तौर पर एक आदमी भेजा कि वहशी अल्लाह का रसूल कहता है कि कल्मा पढ़ ले मुसलमान हो जा जन्नत में चला जाएगा ये अख़्लाक़े नुबूव्वत थे वहशी कहने लगा मैं कल्मा पढ़ के क्या करूंगा? मैंने तो वह सारे काम किए हैं जिस पर तुम्हारे रब ने दोज़ख़ का कहा, क़त्ल, ज़िना, शिर्क, शराब, मैं क्या करूंगा उसने आकर जवाब दे दिया आप स॰ ने उसको दोबारा भेजा फिर दोबारा भेजा, किसके पास चचा के क़ातिल के पास।

बायज़ीद बुस्तामी रह. के सामने यहूदी आलिम की ज़बान बंद हो गई

यहूदियों के बहुत बड़े मज्मे में उनका एक आलिम तक़रीर कर रहा था हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह॰ जाकर उस मज्मे में बैठ गए उनके बैठते ही उनके आलिम की ज़बान बंद हो गई मज्मे में शोर हुआ कि हज़रत बोलते क्यों नहीं? आलिम ने कहा कोई हमारे मज्मे के अंदर आ गया है जिसकी वजह से मेरी ज़बान बंद हो गई دخل فينا محمدی हम में कोई मुहम्मदी आ गया है, ज़बान बंद। उन्होंने कहा उसे खड़ा करो क़त्ल करेंगे, कहा नहीं भाई! जो मुहम्मदी हो खड़ा हो जाए हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह॰ खड़े हो गए यहूदी आलिम ने कहा मैं सवाल करूंगा तू जवाब देगा बायज़ीद रह॰ ने कहा कि दूंगा हज़रत बायज़ीद ने फ़रमाया कि मैं एक सवाल करूंगा तू जवाब देगा, कहा दूंगा यहूदी आलिम ने सवालात शुरू कर दिये पहला सवाल किया।

1– एक बताओ जिसका दूसरा नहीं। फ़रमाया अल्लाह एक है उसके साथ दूसरा नहीं।

2– कहा दो (2) जिसका तीसरा ना हो फ़रमाया اليل والنهار दिन और रात इसका तीसरा नहीं।

3– कहा: (3) बताओ जिसका चौथा ना हो। फ़रमाया लोह व क़लम और कुर्सी ये तीन हैं इसका चौथा नहीं।

4– कहा चार (4) बताओ जिसका पांचवाँ ना हो। फ़रमाया। तौरात, ज़बूर, इंजील, और क़ुर्आन ये चार हैं इनका पांचवाँ नहीं।

5– कहा कि पांच (5) बताओ जिसका छटा नहीं। फ़रमाया। अल्लाह ने अपने बंदों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। छः नहीं।

6– कहा छः (6) बताओ जिसका सातवाँ नहीं फ़रमाया। خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ (सूरह अलफ़ुरक़ान आयत58) छः दिन में ज़मीन व आसमान बनाये हैं सात नहीं।

7– कहा कि सात (7) बताओ जिसका आठवाँ नहीं। फ़रमाया। اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا (सूरह नूह आयत 15–16) मेरा रब कहता है कि मेंने सात आसमान बनाये हैं इसलिये आसमान सात हैं इसका आठवाँ नहीं।

8– कहा: आठ (8) बताओ जिसका नवाँ ना हो। फ़रमाया وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ (सूरह अलहाक़्क़ा आयत17) मेरे रब के अर्श को आठ फ़रिश्तों ने पकड़ा हुआ है नौ ने नहीं।

9– कहा: वह नौ (9) बताओ जिसका दसवाँ नहीं। फ़रमाया وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ (सूरतुन्नमल आयत48) हज़रत ालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम में नौ बड़े बड़े बदमाश थे। दसवाँ नहीं था अल्लाह ने नौ कहा है।

10– कहा: वह दस (10) बताओ जिसका ग्यारहवाँ नहीं फ़रमाया: हज में कोई ग़ल्ती हो जाए तो अल्लाह ने हम पर सात रोज़े वहाँ रखने और तीन रोज़े घर पर रखने का हुक्म दिया تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ (सूरह अलबक़रा आयत196) ये दस हैं ग्यारह नहीं।

11– कहा: वह ग्यारह (11) बताओ जिनका बारह नहीं। फ़रमाया हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ग्यारह भाई थे बारह नहीं थे।

12– कहा: वह बारह (12) बताओ जिसका तेरा नहीं। फ़रमाया। साल में अल्लाह ने बारह महीने बनाए हैं तैरह नहीं।

13– कहा: वह तैरह (13) बताओ जिसका चौदह नहीं। फ़रमाया। رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِىْ سٰجِدِيْنَ (सूरह अलयूसुफ़ आयत4) हज़रत यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा मैंने ग्यारह सितारे देखे एक सूरज देखा एक चाँद देखा जो मुझे सज्दा कर रहे हैं ये तैरह हैं चौदह नहीं।

14– कहा: कि बताओ वह क्या चीज़ है जिसको खुद अल्लाह ने पैदा किया फिर उसके बारे में ख़ुद ही सवाल किया फ़रमाया हज़रत मूसा का डंडा। अल्लाह की पैदाइश......अल्लाह की पैदावार लेकिन खुद सवाल किया। وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى (सूरह ताहा आयत17) ऐ मूसा! तेरे हाथ में क्या है।

15– कहा: कि बताओ सबसे बेहतरीन सवारी। फ़रमाया, घोड़ा।

16– कहा: कि बताओ सबसे बेहतरीन दिन। फ़रमाया जुमा का दिन।

17– कहा: कि बताओ सबसे बेहतरीन रात। फ़रमाया लैलतुल क़द्र।

18– कहा: कि बताओ सबसे बेहतरीन महीना, फ़रमाया। माहे रम्ज़ानुल मुबारक।

19– कहा: कि बताओ वह कौनसी चीज़ है जिसको अल्लाह ने पैदा करके उसकी अज़मत का इक़रार किया फ़रमाया। अल्लाह ने औरत को मक्कार बनाया और उसके मकर को इक़रार किया। اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ (सूरह अल यूसुफ़ आयत28) औरत का मकर बड़ा ज़बरदस्त है हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने नहीं देखा कि बड़े बड़े अक़्लमंद के क़दम उखाड़ने वाली हो। और कोई चीज़ नहीं है सिवाए औरत के। बड़ों बड़ों की अक़्ल

पर पर्दा डाल देती है।

20– कहा बताओ वह कौनसी चीज़ है जो बेजान मगर सांस लेती है? फ़रमाया وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ (सूरह अलतकवीर आयत18) मेरा रब कहता है कि मुझे सुबह की कसम जब वह सांस लेती है।

21– कहा बताओ वह कौनसी चौदह चीज़ें हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने इताअत का हुक्म दे दिया और उनसे बात की। फ़रमाया सात ज़मीन सात आसमान। ثُمَّ اسْتَوٰى إِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا قَالَتَا اَتَيْنَا طَائِعِيْنَ (सूरह हमसज्दा आयत11) अल्लाह ने सात ज़मीनें सात आसमान बनाए और इन चौदह को ख़िताब फ़रमाया कि मेरे सामने झुक जाओ तो इन चौदह के चौदह ने कहा कि या अल्लाह! हम आपके सामने झुक रहे हैं।

22– कहा: बताओ वह कौनसी चीज़ है जिसे अल्लाह ने ख़ुद पैदा किया फिर अल्लाह ने उसे ख़रीद लिया? फ़रमाया अल्लाह तआला ने मुसलमानों को पैदा किया है और उनको ख़ुद ख़रीद लिया जन्नत के बदले में। اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (सूरह अलतौबा आयत111)

अरे मुसलमान अल्लाह की कसम ना तू बीवी का है, ना तू बच्चों का है, ना तू तिजारत का है, ना तू सदारत का है, ना तू हुकूमत का है, ना तू किसी जमाअत का है, तू अल्लाह और उसके रसूल का है अगर तू अल्लाह और उसके रसूल का बनके चलेगा तो ये सारा नक़्शा तेरे ताबे होकर चलेगा और अगर अल्लाह व रसूल से टकराएगा तो अल्लाह ज़लील व ख़्वार करके छोड़ेगा।

23– कहा: बताओ वह कौनसी क़ब्र है जो अपने मुर्दे को लेकर

चली? फ़रमाया हज़रत यूनुस अलै॰ की मछली जो अपने अंदर में हज़रत यूनुस अलै॰ को बैठा कर चालिस दिन तक फिरती रही और वह क़ब्र की तरह थी क़ब्र की तरह चल रही थी और क़ब्र है चल रही थी हज़रत यूनुस अलै॰ को मछली के पेट में बिठा कर ना मरने दिया ना भूका रखा, ना प्यासा रखा, ना बीमार किया, ना परेशान किया, बल्कि मछली को शीशे की तरह कर दिया, हज़रत यूनुस अलै॰ मछली के पेट में बैठकर सारे दरिया का तमाशा अंदर से बाहर का मंज़र देखते रहे। मछली का एक ही मेदा और उसमें गिज़ा भी आ रही है लेकिन हज़रत यूनुस अलै॰ अमानत हैं आराम से बैठे हैं मेदे की हरकत हज़रत यूनुस अलै॰ को तक्लीफ़ नहीं दे रही लेकिन मछली की गिज़ा भी खाई जा रही है हज़रत यूनुस अलै॰ अमानत बन कर बैठे हुए हैं।

25– कहा: बताओ वह कौनसी कौम है जिसने झूट बोला फिर भी जन्नत में जाएगी? फ़रमाया हज़रत यूसुफ़ अलै॰ के भाई وَجَــــآءُ وَعَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا (सूरह अलयूसुफ़ आयत18) हज़रत यूसुफ़ अलै॰ के भाई शाम को आये और बकरी का ख़ून कुर्ते के ऊपर मल कर आये और झूट बोला कि हज़रत यूसुफ़ अलै॰ को भेड़िया उठा के ले गया लेकिन हज़रत याकूब अलै॰ के इस्तग़फ़ार पर और उनकी तौबा करने पर अल्लाह उन्हें जन्नत में दाखिल फ़रमाऐंगे।

26– कहा: कि बताओ वह कौनसी कौम है जो सच बोलेगी फिर भी जहन्नम में जाएगी। फ़रमाया यहूदी और ईसाई एक बोल में सच्चे हैं यहूदी कहते हैं ईसाई बातिल पर हैं और ईसाई कहते हैं कि यहूदी बातिल पर हैं इस बोल में दोनों सच्चे हैं। وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ

لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ (सूरह अलबक़रा आयत113) दोनों सच्चे हैं इस बोल में लेकिन दोनों जहन्नम में जाएंगे।

बायज़ीद बुस्तामी रह. का यहूदी से एक सवाल

अब हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रह. ने फ़रमाया अब मेरा भी एक सवाल है मैं सिर्फ़ एक सवाल करूंगा जवाब दोगे। कहा दूंगा फ़रमाया مامفتاح الجنة मुझे बता दे जन्नत की चाबी? यहूदी आलिम ख़ामोश हो गए तो नीचे मज्मे से लोगों ने कहा बोलते क्यों नहीं? तुमने सवालों की बौछाड़ कर दी और वह हर एक का जवाब देता रहा और आप एक का भी जवाब नहीं दे रहे कहने लगा जवाब मुझे आता है मगर तुम मानोगे नहीं यही आज हम कहते हैं कि जनाब मुझे सारा पता है पता है तो मानते क्यों नहीं? कहते हैं क्या करें मजबूर हैं इसी मजबूरी को तोड़ने के लिए कहते हैं कि अल्लाह के रास्ते में निकला जाए। यहूदी आलिम ने कहा जवाब तो मुझे आता है तुम मानोगे नहीं कहने लगे अगर तू कहेगा तो हम मानेंगे कि जन्नत की चाबी तो मुहम्मद रसूलुल्लाह स. हैं। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत की चाबी मेरे हाथ में है और जन्नत का झंडा मेरे हाथ में है सारी दुनिया के इंसान मेरे झंडे के नीचे जन्नत में जाएंगे कोई मेरे झंडे से निकल नहीं सकता जन्नत का दरवाज़ा बंद और चाबी आप स. के हाथ में कोई जा नहीं सकता जन्नत वाले जन्नत के दरवाज़े पर पहुंच चुके हैं। وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتّٰى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا (सूरह अलज़ुमर आयत73) आए हैं दरवाज़े पर खड़े हैं दरवाज़ा बंद है हज़रत आदम अलै. के पास आते हैं ऐ हमारे

बाप! तू ही हमारा अव्वल तू ही हमारा सबसे बड़ा तू ही जन्नत का दरवाज़ा खुलवा। वह इरशाद फ़रमाऐंगे अरे मैंने ही तो तुम्हें जन्नत से निकलवाया था मैं तुम्हें कहाँ से दाख़िल कराऊं ये मेरे बस की बात नहीं है। हज़रत नूह अलै० के पास आऐंगे आप स० जद्दे सानी हैं आप दरवाज़ा खुलवाइए वह कहेंगे कि मैं नहीं खुलवा सकता आज मेरे बस की बात नहीं है। हज़रत मूसा अलै० के पास आऐंगे। हज़रत ईसा अलै० इरशाद फ़रमाऐंगे कि मेरे बस की बात नहीं है तुम जाओ नबी अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ जिसके हाथ में जन्नत की चाबी है और जिसकी इत्तिबा में दुनिया की कामयाबी है इतना भी आज ईमान नहीं है कि अपनी दुकान के हराम को निकाल सके तो ये इस्लाम कहाँ से ज़िंदा करेगा जब इतना ईमान नहीं है कि एक सुन्नत को सजा सके तो ये दुनिया में दीन कैसे ज़िंदा करेगा इसकी नमाज़ें इसको क्या नफ़ा देंगी दिल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वाला नहीं है माफ़ करना दिल मेरा भी और आपका भी वही क़ारून वाला है कि माल हो और माल हो पैसा हो और पैसा हो दरवाज़ा बंद है आज कोई खुलवा के तो दिखाए।

कितने दिन तुम दुनिया में ठहरे?

अल्लाह जन्नत वालों से पूछेगा كم لبثتم في الارض عدد سنين दुनिया में तुम कितना रह कर आए? कहेंगे يوما او بعض يوم या अल्लाह एक दिन आधा दिन। साठ साल, सत्तर साल, हज़ार साल नहीं। ऐ अल्लाह आधा दिन अल्लाह कहेगा तुमने बड़ा खरा सौदा किया कि तुमने आधे दिन की तक्लीफ़ को बर्दाश्त करके मेरी जन्नत को ले लिया। मेरी रहमत को ले लिया। मेरी मेहमान

नवाज़ी को ले लिया। जाओ मज़े करो ना तेरे पीछे मौत आएगी ना बुढ़ापा, ना ग़म आएगा ना परेशानी आएगी ना दुख आएगा तुझे आज़ादी मिल गई। कहते हैं मौत ना होती तो ये मर जाते ख़ुशी से। फिर जहन्नम वालों से पूछा जाएगा वह कहेंगे يوما او بعض يوم या अल्लाह दिन या आधा दिन तो अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे ऐ बंदो! ऐ औरतों! ऐ मर्दो! कितना तुम खोटा सौदा करके आए हो, कितना ग़लत सौदा करके आए सिर्फ़ चार दिन की नाच-कूद की ख़ातिर तूने मेरे ग़ज़ब को। मेरी आग को। मेरी जहन्नम को ख़रीदा। जाओ तुम्हें भी हमेशा ही रहना है तुम ख़ुशियाँ भूल जाओ, जवानी भूल जाओ, राहत भूल जाओ, जाओ चले जाओ, चीख़ो और चिल्लाओ। سواء علينا اجزعنا ام صبرنا अब चाहे सब्र करो, चाहे वावैला करो, मेरे दरवाज़े तुम पर बंद हैं अगर इस दिन मौत होती तो ये ग़म से मर जाते।

तमाम अंबिया अलैहिमुस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी नफ़्सी

हुज़ूरे अक्रम स॰ ने फ़रमाया कि हर नबी आया और दुआ मांग के चला गया और मैंने अपनी दुआ महफ़ूज़ कर ली है। जब क़यामत का दिन होगा और सारी उम्मतें हलाकत के क़रीब होंगी, उस दिन मैं अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिए वह दुआ इस्तिमाल करूंगा और जब दोज़ख आएगी। और वह चीख़ मारेगी तो आदम अलैहिस्सलाम भी पुकार उठेंगे नफ़्सी नफ़्सी, नूह अलैहिस्सलाम भी पुकारेंगे नफ़्सी नफ़्सी, इब्राहीम अलैहिस्सलाम भी पुकार उठेंगे नफ़्सी नफ़्सी, और इस्हाक़ अलैहिस्सलाम भी पुकारेंगे नफ़्सी नफ़्सी, और अय्यूब अलैहिस्सलाम भी पुकारेंगे या रब नफ़्सी नफ़्सी, और

दानियाल अलैहिस्सलाम भी पुकारेंगे या रब नफ़्सी नफ़्सी, यानी या अल्लाह मेरी जान बचा मेरी जान। मैं और किसी का सवाल नहीं करता और ज़करया अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी नफ़्सी, सुलेमान अलैहिस्सलाम पुकारेंगे नफ़्सी नफ़्सी, ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे या अल्लाह मैं अपनी माँ मरयम का भी सवाल नहीं करता, मेरी जान बचा, मेरी जान बचा, आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में अर्श व फ़र्श में इस लोह व कुर्सी में सिर्फ़ एक हस्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमद मुज्तबा सय्यदुल कौनैन ताजदारे मदीना सल्ल॰ की होगी जिसकी झोली फैली होगी और उसकी पुकार होगी या रब उम्मती, या रब उम्मती उम्मती, जिस दिन आपकी माँ आपको भुला देगी, आपकी बीवी आपका साथ छोड़ देगी, आपके बच्चे आपका साथ छोड़ देंगे लेकिन हमारे हबीब स॰ हमारा साथ नहीं छोड़ेंगे। उस वक़्त भी कहेंगे ऐ अल्लाह मेरी उम्मत बचा ले, मेरी उम्मत बचा ले।

बावज़ू रहा करो रिज़्क़ में बरकत होगी

एक सहाबी रज़ि॰ आए फ़रमाया रसूलुल्लाह أُرِيْدُ اَنْ يُّوْسِعَ فِىْ رِزْقِىْ मैं चाहता हूँ कि मेरा रिज़्क़ बढ़ जाए हम सारे कहते हैं कि बढ़ जाए फ़रमाया اَدِمْ عَلَى الطَّهَارَةِ يُوَسِّعْ عَلَيْكَ رِزْقَكَ तू बावज़ू रहा कर अल्लाह तेरा रिज़्क़ बढ़ा देगा।

हज़रत लुक़्मान अलै॰ का अपने बेटे को पहला सबक़

लुक़्मान अलैहिस्सलाम अपने बच्चे को समझा रहे हैं يَا بُنَىَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (सूरह लुक़्मान आयत13) ऐ बेटे! अपने दिल को सारी मख़्लूक़ से पाक करके अल्लाह का बन जा

यह पहला सबक़ है जो माँ बाप ने औलाद को सिखाना है शिर्क बड़ा ज़ुल्म है किसी का माल छीनना इतना ज़ुल्म नहीं जितना बड़ा ज़ुल्म शिर्क है सारी दुनिया के यहूद व नसारा में से सबसे बड़ा ज़ुल्म है अल्लाह के इल्म के मुताबिक़ क्योंकि उन्होंने अल्लाह की ज़ात का शरीक ठहरा दिया पहला सबक़ बच्चों को सिखाना। لاالـه الا الله لاالـه الاالـله है का मफ़हूम बताना और उसके तक़ाज़े क्या हैं अल्लाह तआला के हाथ से सब कुछ होना बतलाना और अल्लाह पाक की अज़मत दिल में बिठाना अल्लाह से डराना। يـا بُنَيَّ اِنَّهَا اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ اَوْفِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَااللّٰهُ (सूरह लुक़मान आयत16) ऐ बेटा! याद रखना गुनाह करोगे या बुराई या अच्छा करोगे पहाड़ के अन्दर छुप कर करो तो अल्लाह को पता चल रहा है और वह राई के बराबर बुराई या अच्छाई है या ज़मीन के अंदर घुस जाओ वहाँ बैठ कर करो किसी को पता ना चले या आसमान पर चढ़ कर करो फिर भी तेरा रब तुझे देख रहा है يـاتـى بهـا اللّٰه उसे ज़ाहिर कर देगा लिहाज़ा अल्लाह की ज़ात को हर वक़्त सामने रख कर उससे डरते रहो जुनैद बग़दादी रह॰ के पास एक आदमी आता है कि नसीहत फ़रमाइए तो जुनैद बग़दादी रह॰ ने फ़रमाया बेटा गुनाह करना है तो वहाँ चला जा जहाँ अल्लाह ना देखता हो, कहा अल्लाह तो हर जगह देखता है तो फ़रमाया फिर गुनाह करना ही छोड़ दे जब अल्लाह हर जगह देखता है तो तौबा कर ले। وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا और तकब्बुर से चला भी ना कर, किस तरह सिखा रहे हैं आज कल कोई माँ बाप ऐसी तरबियत करते हैं। وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ और अपने चलने में भी आजज़ी से चला कर। وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ (सूरह लुक़मान आयत19) सबसे बुरी

आवाज़ गधे की है जो सबसे ज़्यादा मुंह फाड़ता है औलाद के मसाएल का हल बताया कि अपनी औलाद से सीख लेना अपनी आँखों की ठंढक बनाया है तो उन्हें बी ए की डिग्री की ज़रूरत नहीं बल्कि उनको उन सिफ़ात की ज़रूरत है ये सिफ़ात उनके अंदर पैदा करो। तो भाई अल्लाह के इल्म के ताबे हो जाना ये हमारी दुनिया और आख़िरत के मसाएल का हल है और अल्लाह के इल्म से बग़ावत करना और अपनी तरतीब क़ायम करना ये दुनिया और आख़िरत के मसाएल की बरबादी है दुनिया में दौलते कामिल जाना कोई बड़ी चीज़ नहीं है तो इसका मतलब ये नहीं कि अल्लाह उससे राज़ी हो गया और उसके मसले का हल निकल आया कभी अल्लाह ख़ुश हो के देता है कभी नाराज़ हो के देता है कभी ख़ुश हो के लेता है कभी नाराज़ हो के ले लेता है इसका कोई अंदाज़ा नहीं जैसे कि अल्लाह ने सुलैमान रज़ि॰ को हुकूमत दी ख़ुश हो के फ़िरऔन को हुकूमत दी नाराज़ हो के।

बीवी ने कहा एक रोटी जितना आटा तो रख लेते?

हबीब रज़ि॰ की बीवी ने रोटी का आटा गूंधा ही था आटे को रखा पड़ोसन से आग लेने चली गई पीछे फ़क़ीर आया उन्होंने सारा आटा उठा कर उसको दे दिया और तो कुछ पकाने के लिए घर में नहीं था सिर्फ़ वही आटा था बीवी वापस आई तो कहने लगी आटा कहाँ गया? काफ़ी देर गुज़र गई तो कुछ भी नहीं आया तो कहने लगी तूने सदक़ा कर दिया? कहा हाँ! बीवी कहने लगी एक रोटी जितना आटा तो रख लेते आधी आधी मिल कर खा लेते उन्होंने कहा नहीं नहीं जिसको दिया है वह बड़े ख़ज़ानों वाला है भूक जब ज़्यादा चमक गई तो दरवाज़े पर दस्तक हुई आप रज़ि॰

दरवाज़े तक गए और अंदर घर में मुस्कुराते हुए तशरीफ़ लाए और इस हाल में थे प्याला भरा हुआ गोश्त का और रोटियों की चंगीर भरी हुई कहने लगे असल में दोस्ती ऐसे सख़ी से है मैंने भेजा था सिर्फ़ रोटी के लिए उसने साथ सालन भी दे दिया हम सब कुछ तो नहीं लगा सकते जितना लगाने को कहा है उतना लगाऐं ज़कात दें ग़रीब का हक़ तो ना मारें।

जहन्नम की आग दुनिया की आग से ज़्यादा सख़्त है

मस्जिद में आग लग गई और इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह॰ अंदर नमाज़ पढ़ रहे थे सारे नमाज़ी भाग गए शोर मचा आख़िर आग ने घेर लिया फिर लोग अंदर गए और उसको पकड़ के घसीट कर बाहर ले आए कहने लगे हज़रत जी आप को पता ही नहीं चला कि सारी मस्जिद में आग लग गई फ़रमाने लगे कि जहन्नम की आग ने दुनिया कि आग का पता ही चलने नहीं दिया जहन्नम की आग ने दुनिया की आग से ग़ाफ़िल रखा अच्छा भाई हम इतने दर्जे की नहीं ले सकते इतने दर्जे की तो ले सकते हैं कि तक्बीर से सलाम फेरने तक अल्लाह ही अल्लाह हो और कोई ना हो।

हराम, सूद, ज़िना, ख़्यानत और शराब छोड़ दें

ईमान बिल ग़ैब आ गया अल्लाहुअक्बर ईमान बिल ग़ैब का हाल ये है कि हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया। لو كشف الغطاء ما ازددت ايمانا कि तुम मेरी नज़रों से आसमान के पर्दे हटा कर जन्नत और जहन्नम दिखा दो तो मेरे ईमान और यक़ीन में ज़र्रा बराबर भी इज़ाफ़ा नहीं होगा बग़ैर देखे ईमान इतना बन चुका है

तो हमारा ईमान इतना नहीं बन सकता लेकिन इतना तो बन सकता है कि हम अल्लाह के वादे पर यक़ीन कर के हराम छोड़ दें, सूद छोड़ दें, ज़िना छोड़ दें, ख़्यानत छोड़ दें, शराब छोड़ दें, बददियानती छोड़ दें, इतना यक़ीन हासिल करना मुसलमान पर फ़र्ज़ है तब्लीग़ से अल्लाह के हुक्मों को सीख लें और अल्लाह पाक अपने वादों को पूरा करने वाला है जो अल्लाह के लिए किसी चीज़ को छोड़ता है तो अल्लाह तआला उसे बेहतर देता है।

नमाज़ की हालत में बग़ैर तक्लीफ़ के तीर का निकालना

हज़रत अली रज़ि॰ की रान में तीर लगा और तीर नौकदार था अन्दर फंस गया निकालना चाहा निकल नहीं सका बड़ी तक्लीफ़ हुई तो उन्होंने कहा कि छोड़ दो नमाज़ पढ़ेंगे तो निकाल लेंगे मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए तशरीफ़ लाए और नमाज़ शुरू की लोग आए और उन्होंने बड़े झटके से उसको निकाला होगा वैसे तो निकल नहीं सकता था लेकिन जिस्म से रूह कट कर अल्लाह से जुड़ी हुई थी सलाम फेरने के बाद पूछा कि तीर निकालने आए हो कहा कि तीर तो हमने निकाल लिया जी कहा कि मुझे तो पता ही नहीं चला यक़ीनन हमारी नमाज़ यहाँ तक नहीं पहुंच सकती लेकिन मैं कसम खाने को तय्यार हूँ कि यहाँ तक हमारी नमाज़ आ सकती है कि अल्लाहुअक्बर से लेकर सलाम फेरने तक किसी का ख़्याल ना आए हम इसकी मेहनत ही नहीं करते हमारी सारी मेहनत का रुख़ अपने ज़ाहिर को बनाने पर है और अपनी चीज़ों को संवारने पर है आज जो गाड़ियाँ चल रही हैं 1935ई॰ में भी यही गाड़ियाँ होती थीं। 1935 का माडल देखें और आज का

माडल देखें 1935ई॰ के घर और आज के घर एक हैं।

सारी मेहनत इधर है तो निखरती जा रही है जो नमाज़ 1950ई॰ में पढ़ रहा था वही नमाज़ 1995ई॰ में पढ़ रहा है उसमें एक ज़र्रा भी आगे नहीं गया मेहनत कोई नहीं।

हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने अहले मदीना में सौ ऊंट ग़ल्ला तक़्सीम कर दिया

हज़रत उस्मान रज़ि॰ का तिजारती क़ाफ़िला आया और ज़मानए अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का है मदीने में क़हत पड़ गया जब क़हत पड़ जाता है तो चीज़ें कम होती हैं और फिर ताजिर चीज़ें ग़ायब कर लेते हैं ख़ून चूसने के लिए। ये वह ताजिर नहीं हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ वाली ज़िंदगी सीख ली हो ये तो पैसे वाले ताजिर हैं सौ ऊँट साज़ व सामान से भरे हुए मदीना आए तो परचून वाले ताजिर आ गए उन्होंने कहा जी क्या लोगे तो हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने कहा तुम क्या दोगे उन्होंने कहा दस रुपये की चीज़ बारह में लेंगे फ़रमाया की उसकी क़ीमत ज़्यादा लग चुकी है तुम बढ़ाओ कहा हम दस रुपये की चीज़ चौदह रुपये में लेंगे फ़रमाया इससे भी ज़्यादा क़ीमत लग चुकी है कहा कि पंद्रह में ले लेंगे इससे ज़्यादा क़ीमत की गुंजाइश नहीं उन ताजिरों ने पूछा उन ताजिरों ने पूछा इतनी ज़्यादा क़ीमत कौन लगा के गया मदीना के ताजिर सारे के सारे सामने बैठे हुए हैं फ़रमाने लगे हज़रत उस्मान रज़ि॰ कि इससे पहले मेरे रब ने लगाया है कि तुम मुझे एक दोगे मैं तुम्हें दस दूंगा। مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا मैं तुम सब को गवाह बनाता हूँ कि मेरा ये सारा माल जमा असल ज़र के मदीना के फ़ुक़रा पर सदक़ा है। रात को हज़रत अब्दुल्लाह

बिन अब्बास रज़ि० हुज़ूरे अक्रम स० के चचाज़ाद भाई उन्होंने ख़्वाब में देखा कि हुज़ूरे अक्रम स० सफ़ेद घोड़े पर सवार हैं सब्ज़ पोशाक है आप स० तेज़ी से निकल रहे हैं तो उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़ ली या रसूलुल्लाह स० आप से बात करने को जी चाहता है बैठने को जी चाहता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आज जो उस्मान रज़ि० ने अल्लाह के नाम पर सदका किया वह कुबूल हो गया और अल्लाह ने उसकी एक जन्नत की हूर से शादी की है उसके वलीमे में सारे जन्नतियों को बुलाया है मैं भी उसके वलीमे में शिर्कत के लिए जा रहा हूँ। तो मेरे भाइयो! अल्लाह के इल्म पर आ जाना ये हमारे तमाम मसाएल का हल है चूंकि हमें इस ईमान की ये सतह हासिल नहीं इसलिये यह मेहनत करनी पड़गी कि मेहनत करते करते ईमान इस सतह पर आ जाए कि सारी दुनिया अल्लाह के हुक्मों के सामने बेहैसियत नज़र आए देखो मैं जब हुक्मे इलाही को तोड़ता हूँ तो गोया पैसे की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को तोड़ता हूँ जब अपने नफ़्स की ख़्वाहिश की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को तोड़ता हूं तो गोया मैंने अपने नफ़्स की ख़्वाहिश को अल्लाह के हुक्म से भी ऊँचा कर दिया ये जो तब्लीग़ का काम हो रहा है इसमें इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान अल्लाह और अल्लाह के रसूल स० के हुक्मों का पाबन्द बन के चले।

पूरी ज़िंदगी पाबन्द बनने के लिए एक दिन काफ़ी नहीं ये बरस हा बरस की मेहनत है फिर चार महीना लगाने से मस्ला हल नहीं होता ये मुस्तक़्बिल मेहनत है कि रोज़ाना अपने ईमान को सीखने के लिए वक़्त निकालें बदहज़्मी होती है तो सारी ज़िंदगी परहेज़ करना पड़ता है इस तरह हमारी ज़िंदगी के सारी गर्दिश

टैढ़ी हो चुकी है ये एक दिन में तो ठीक नहीं होगी लेकिन नाउम्मीद होने की भी कोई बात नहीं एक मरतबा तौबा कर लें तो पिछले सारे गुनाह माफ़ होंगे।

अल्लाह तआला का फ़रमान है तू एक देगा मैं दस दूंगा

एक आदमी हज़रत अली रज़ि० के पास आया एक ऊंट उसके हाथ में है और कहा मुझे ये ऊंट बेचना है अली रज़ि० ने कहा कितने बेचोगे कहने लगा कि एक सौ चालिस दिरहम का अली रज़ि० ने कहा अरे भाई उधार का तो में ख़रीदार हूँ नक़द देना चाहते हो तो किसी और को दे दो और उधार में ले सकता हूँ उसने कहा बिल्कुल में तय्यार हूँ आप ले लें कहा कि यहाँ बांधो वह आदमी ऊंट बांध कर अपने घर चला गया वहीं बैठे ही थे कि एक दूसरा आदमी आया और कहने लगा ये ऊंट किसका है? हज़रत अली रज़ि० ने कहा मेरा है पूछने लगा कि बेचना है? कहा हाँ! कितने का लोगे? ताजिर ने कहा कि दो सौ का लूंगा, उस वक़्त दो सो दिरहम दिये और ऊंट लेकर चला गया और हज़रत अली रज़ि० ने एक सौ चालिस दिरहम उसके घर भिजवाए और 60 दिरहम हाथ में लेकर मुस्कुराते हुए घर में आए और हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के सामने रखे और कहा तेरे रब का वादा है مَـــنْ
جَـاءَ بِـالْـحَسَـنَةِ فَلَـهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا जो एक देगा मैं उसको दस दूंगा ईमान का बनाना हर मुसलमान पर फ़र्ज़े ऐन है इतने दर्जे का ईमान कि उससे ज़िना छुड़वा दे झूठ छुड़वा दे, सूद छुड़वा दे, रिश्वत छुड़वा दे ये तो फ़र्ज़े ऐन है लोग कहते हैं कि तब्लीग़ में जा रहे हैं उनके पीछे उनके घर के इतने मसाएल हैं अल्लाह की

क़सम ये मसाएल के हल होने के लिए जा रहे हैं कि इससे मसाएल हल होंगे जब अल्लाह से जुड़ेंगे ईमान आएगा, तो अल्लाह तआला का ग़ैबी निज़ाम चलेगा।

तीसरी चीज़ बताई وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُوْنَ दिये हुए माल को ख़र्च करते हैं इसका अदना दरजा ज़कात है ज़मीनदार के लिए उश्र है और ताजिर के लिए ज़कात है चौथी चीज़ बताई وَيُؤْمِنُوْنَ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَا اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ जाहिल नहीं रहते अपनी ज़रूरियात का इल्म भी हासिल करते रहते हैं ये नहीं कि नमाज़ की रकात कितनी हैं? और नमाज़ के फ़र्ज़ कितने हैं? और नमाज़ में क्या पढ़ना है? कमअज़कम छः सूरतें तो हर मुसलमान के ज़िम्मे हैं कि याद करें दो सूरतें फ़ज्र की नमाज़ के लिए दो सूरतें ज़ुहर के फ़र्ज़ नमाज़ के लिये दो सूरतें अस्र के फ़र्ज़ों के लिये दो सूरतें मग़्रिब के फ़र्ज़ों के लिए और दो सूरतें इशा के फ़र्ज़ों के लिए हर रकात को قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ पर टरख़ा देना इतनी जहालत ये इल्म हासिल करते हैं अपनी ज़रूरियात का अल्लाह की मअरफ़त का पहली किताबों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह के नबी स० के इल्म पर जम जाते हैं अगर्चे सारी दुनिया मुख़ालिफ़ हो अल्लाह और रसूल की ख़बर उनको इधर उधर नहीं कर सकती।

कल झंडा उसको दूंगा जो अल्लाह और उस के रसूल से प्यार करता है

ख़ैबर का क़िला फ़तेह नहीं हुआ, अबू बक्र से नहीं हुआ, उमर रज़ि० से नहीं हुआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कल झंडा उसको दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार करता है और अल्लाह और उसका रसूल

भी उससे प्यार करता है। जानिबैन की मुहब्बत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कभी इमारत और हुकूमत की ख़्वाहिश भी दिल में पैदा नहीं हुई आज ख़्वाहिश पैदा हुई कि काश ये झंडा मुझे मिल जाए क्योंकि आप स॰ ने जो इरशाद फ़रमाया ये बहुत बड़ी गवाही है कि अल्लाह और उसका रसूल स॰ उससे प्यार करते हैं तो अगले दिन फ़रमाया आप स॰ ने अली कहाँ हैं। अली रज़ि॰ की आँखें ख़राब थीं देख नहीं सकते थे कहा कि जी आँखें ख़राब हैं फ़रमाया बुलाओ बुलाया गया आँखों में लुआब मुबारक डाला फिर फ़रमाया की जाओ उनसे पहले एक सहाबी हम्लाआवर हुए थे हज़रत सईद बिन आमिर रज़ि॰ बहुत बड़े सहाबी हैं मुख़ालिफ़ीन के हम्ले से शहीद हो गए उन काफ़िरों में से एक दनदनाता हुआ आया कि कोई है मेरे मुक़ाबले में? मैं वह मरहब हूँ जिसको ख़ैबर जानता है हथियारों का आज़माया हुआ हूँ हज़रत अली रज़ि॰ जवाब में आगे बढ़े मैं भी आ रहा हूँ जिसका नाम उसकी माँ ने हैदर रखा है हैदर शैर को कहते हैं शैर के अरबी ज़बान में सौ के क़रीब नाम हैं मैं शैर हूँ जंगल का जिसको देख कर सबके होश गुम हो जाते हैं मैं जंगल का शैर हूँ एक ही वार में दो टुक्ड़े कर दिये और ख़ैबर के क़िले को उठा कर फैंक दिया जिसको बाद में चालिस आदमियों ने उठाया जो दुनिया में बड़े होते हैं तो दीन में आने के बाद इधर भी बड़े बन जाते हैं तो जिन लोगों को अल्लाह ने दुनिया में वजाहत दी है तो मेरे भाइयो! क्यों ज़ाए करते हो कितने कमा लोगे।

हज़रत अली रज़ि॰ ने दुनिया को तीन तलाक़ें दे दीं

ज़र्रार बिन ज़ुम्रा किनानी फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि॰ की वह आवाज़ आज मेरे कान सुन रहे हैं रात भीग चुकी है और

सितारे फीके पड़ चुके हैं मांद पड़ चुके हैं और वह अपनी मस्जिद के मेहराब में खड़े हैं अपनी दाढ़ी को पकड़े हुए तड़प रहा है जैसे सांप के डस्ने से इंसान तड़पता है और रोता है जैसे कोई ग़मों का मारा हुआ रोता है और दुनिया को कह रहा है मुझे धोका देने आई है मुझे देखने आई है मेरे सामने मुज़य्यन हो के आई है दूर हो मैं तुझे तीन तलाक़ दे चुका हूँ, तेरी उम्र थोड़ी तेरी मुसीबत आसान ऐ मेरे अल्लाह! मेरे पास सफ़र का तोशा कोई नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है और ये कौन कह रहा है? जिनके बारे में हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा हज़रत अली रज़ि॰ का हाथ अपने हाथ में पकड़ा और यूँ कहा ऐ अली रज़ि॰ खुश हो जा जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा ये कह रहे हैं कि मेरे पास तोशा नहीं है मेरे पास सफ़र का तोशा नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है।

पीरी और कबूतर बाज़ी

हज़रत शाह अब्दुल कुद्दूस साहब रज़ि॰ हिन्दुस्तान में बड़े मशाइख़ में से गुज़रे हैं उनका लड़का कबूतर बाज़ बन गया बाप का इन्तिक़ाल हो गया एक मरतबा बाज़ार में कबूतर उड़ा रहा था तो एक मीरासी बाज़ार में निकला, बड़ा जुब्बा पहना हुआ पीछे मुरीदों की क़तार और आगे आगे वह जा रहे थे तो अबू सईद अब्दुल कुद्दूस साहब रह॰ का लड़का हंसने लगा कि अरे तुमने पीरी कब से संभाली तो उसने कहा जब से तुमने कबूतर बाज़ी संभाली, हमने पीरी संभाली बस दिल पर एक चोट लगी अपनी माँ के पास आए कहने लगे मेरे बाप की मीरास कहाँ है माँ ने कहा बेटा तेरे बाप की मीरास तो जलालाबाद चली गई तेरे बाप की मीरास जलालुद्दीन रह॰ जलालाबादी के पास वहाँ पर हैं कहने लगे बहुत

अच्छा, घर छोड़ा और अपने बाप की मीरास हासिल करने के लिए निकल खड़े हुए।

अल्लाह तआला ने जन्नत दे दी माल वा जान के बदले में

एक नौजवान लड़का खड़ा हुआ जवानी में जज़्बा होता है ना ख़्वाहिशात का, एक आयत पर वह लड़का खड़ा हुआ बड़े मालदार आदमी का लड़का था बाप मर गया अकेला जाएदाद का वारिस था कहने लगा अब्दुल वाहिद क्या कह रहे हो अल्लाह ने जन्नत दे दी माल व जान के बदले में? कहा हाँ हंसने लगे फिर मैं भी सौदा करता हूँ अभी पता चलेगा तुम कितना सौदा करते हो दुकान खींचती है या आख़िरत खींचती है उस लड़के ने कहा कि फिर मैं भी सोदा करता हूँ कहा बेटा देख लो निकलना आसान नहीं है अभी मग़्रिब से पहले एक नौजवान भाई कह रहा था कि एक आदमी राएवन्ड गया मैंने पूछा कि क्या देखा? कहा कि मिट्टी गुबार देखा और कुछ नहीं देखा हाँ भाई! जो घरों में एयर कन्डीशन लगाऐंगे उन्हें फिर गर्द व गुबार में कहां चैन नसीब होगा अब्दुल वाहिद ने कहा देख लो बेटा ये निकलना आसान नहीं है उस लड़के ने कहा जब अल्लाह तआला जन्नत दे रहा है तो फिर निकलना कौनसा मुशकिल है मेरे दोस्तो उसी की आवाज़ लगाई जा रही है कि आख़िरत का जज़्बा बन जाए।

हज़रत सअद रज़ि॰ की मौत पर हुज़ूर स॰ का रोना और हंसना

मेरे भाइयो! जब हम मैदान ही में ना उतरें हमारी इस्तेदाद कैसे चमकेगी हज़रत अबू लुबाबा रज़ि॰ को हुज़ूरे अक्रम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मैं इस पर रोया कि ये किस हाल में गया और जो हज़रत सअद रज़ि॰ का अल्लाह के पास उसका दर्जा देखा तो मैं हंस पड़ा कि अल्लाह ने कितना ऊंचा रुत्बा दे दिया और मैंने उससे मुंह फैर लिया हुज़ूरे अक्रम स॰ क्यों रोते थे? इसलिए कि आप जन्नत व दोज़ख़ अपनी आँखों से देख रहे थे।

अल्लाह की मदद अपनी आँखों से देख ली

मेरे भाइयो! यरमूक की लड़ाई का मैदान एक नौजवान लड़का अबू उबैदा रज़ि॰ से कह रहा है ऐ अबू उबैदा रज़ि॰ मैं हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जा रहा हूँ तुम्हें कोई पैग़ाम पहुंचाना है तो बताओ? जज़्बे देखो हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ रोने लगे और कहा कि ऐ भाई हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़ाम दे देना कि आपने जो वादे हमारे साथ किए थे हमने उनको सच पाया और अल्लाह की मदद अपनी आँखों से देख ली मर रहे हैं और जन्नत को जा रहे हैं एक सहाबी रज़ि॰ के भतीजे को उठा के लाया गया ज़ख़्मी कटे पड़े हैं उनके चचा बड़े सहाबी रज़ि॰ थे देखा तो रोने लगे और कहने लगे या अल्लाह मेरे भतीजे को ठीक कर दे भतीजे को थोड़ा सा होश आया तो कहने लगे ऐ चचा मेरे लिए दुआ मत करो वह देखो हूर मुझे पुकार रही है मेरे लिए दुआ मत करो। ये वह लोग हैं जो नेक आमाल करके आख़िरत वाले बन गए।

हुज़ूर स॰ दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ लेकर आए

एक सहाबी रज़ि॰ दूसरे सहाबी रज़ि॰ के पास जाते हैं कि

जनाब आप रज़ि॰ ने मुझे दस लाख रुपये देने हैं कहने लगे जब चाहे आके ले जाना मेरे भाई मोहतरम जब घर में आए और अपना हिसाब देखा तो लेने नहीं थे देने थे अब उसका ज़र्फ़ देखें कि उनको भी पता है कि लेने हैं देने नहीं हैं और पैसे भी कोई थोड़े नहीं हैं दस लाख रुपये और वह भी आज से चौदह सौ साल पहले जब उन्हें पता चला कि देने हैं लेने नहीं हैं तो भागे भागे आए और कहा अरे अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ जो हुआ भाई माफ़ करना वह रुपये तो मेंने तुम्हारे देने थे फ़रमाया चल वह मैंने तम्हें हदिया कर दिये माफ़ कर दिये अब अल्लाह ने इतना दे दिया कि हिसाब ही नहीं यह उसका बेटा है जो हब्शा की हिज्रत करके भूकों पर भूक गुज़ारी वतन से दूर वक़्त गुज़ारा और मूता के मैदान में भूके प्यासे जान दे दी, आज उन्हीं को अल्लाह तआला रिज़्क़ दे रहा है कि दस लाख रुपये लेने थे और वह ग़ल्ती से कह रहा है कि तू दे सिर्फ़ इस बात पर मुसलमान का ख़्याल रखते हुए कि मैंने माफ़ कर दिया अल्लाह ने दुनिया भी बनाई आप यक़ीन करें कि हुज़ूरे अक्रम स॰ दुनिया और आख़िरत की कामयाबियाँ लेकर आए हैं लेकिन हम उसके लिए उठते ही नहीं।

जमाअतें अल्लाह की राह में दीवानावार फिरें

मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रह॰ फ़रमाते थे मैं दो चीज़ें चाहता हूँ एक तो ये चाहता हूँ कि मुसलमानों की जमाअतें बन बन कर अल्लाह के रास्ते में दीवानावार फिरती हों और अल्लाह के कल्मे को बुलन्द कर रही हों जैसे सहाबा रज़ि॰ के ज़माने में फिरते थे एक तो ऐसा ज़ाहिरी ढाँचा चाहता हूँ और अंदर मैं यह चाहता हूं कि दिल में से सारे जज़्बे निकाल कर एक ही जज़्बा चाहता हूँ कि अल्लाह के और अल्लाह के रसूल स॰ के नाम पर मरना

चाहता हूँ लड़के ने कहा कि कब निकलोगे? फ़रमाया पीर के दिन कहा मैं आ जाऊँगा सबसे पहले वह लड़का आया उस वक़्त तुर्किस्तान में दावत चल रही थी बिलादे रूम मैं दिन में साथियों की ख़िदमत रात में अल्लाह के सामने खड़ा होना जब रूम के शहर में पहुंचे मुसलमानों की आदत थी, कि पहले दावत देते थे कोई लश्कर किसी मुल्क की फ़तेह के लिए नहीं कोई हम्ला किसी फ़तेह के लिए नहीं हुआ सब कल्मा बुलन्द करने के लिए हुआ।

मुग़ीरा बिन शौबा रज़ि॰ से रुस्तम कहने लगे "अगर हम तुम्हारा ये कल्मा पढ़ लेंगे तो क्या करोगे? फ़रमाया हम इन्हीं क़दमों से वापस चले जाऐंगे तुम्हारे मुल्क में लौट कर नहीं आऐंगे सिर्फ़ चंद आदमी तुम्हें इस्लाम सीखने के लिए छोड़ जाऐंगे या फिर तुम्हारे पास आऐंगे तो तिजारत के लिए आऐंगे वैसे नहीं आऐंगे दावत दी दावत देने के बाद टक्कर हुई ये नौजवान घोड़े पर सवार थोड़ी सी नींद आई आँख खोली कहा हाय में "عيناء مرضية" ऐना का शौक़ीन हूँ लोगों ने कहा बेचारा लड़का पागल हो गया वह लड़का घोड़ा दौड़ाता हुआ अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह॰ के पास आया और कहने लगा शैख़ कुछ ना पूछो "عيناء مرضية" का हाल उन्होंने कहा बेटा! क्या हाल है मुझे भी तो कोई बताओ मैं थोड़ी सी नींद सोया तो मुझे ख़्वाब में एक आदमी नज़र आया कि आओ मुझे "عيناء مرضية" के पास ले चलो।

दावते इल्लल्लाह का काम करो दुनिया पर ग़ालिब आओगे

ये काम इस उम्मत को मिला है इसलिए हज़रत रबी बिन आमिर रज़ि॰ अल्लाह उनको जज़ा दें बात को ऐसे खोल दिया जैसा कि रौशन दिन होता है रुस्तम ने पूछा ये ईरान की फ़ौज का

बड़ा सालार, कहा क्यों आए हो? भूक की वजह, से कपड़ा चाहिए, क्यों आए हो? रबी बिन आमिर रज़ि० ने फ़रमाया नहीं।

कि जाओ मेरे बंदों को कुफ़्र से निकाल कर इस्लाम में ले आओ मेरे बंदों को लोगों की गुलामी से निकाल कर मेरा गुलाम बना दो लोगों की इबादत से निकाल कर मेरा इबादत गुज़ार बनना दो बातिल के जुल्म से निकाल कर इस्लाम के अद्ल पर लाओ दुनिया की तंगी से निकाल कर आख़िरत की राहत पर ले आओ अल्लाह ने हमें दीन देकर भेजा है तुम्हें दावत देंगे यहाँ तक कि अल्लाह का वादा पूरा हुआ उसने कहा क्या वादा है अल्लाह का? कहा हम में से जो क़त्ल होगा जन्नत में जाएगा और जो ज़िंदा रहेगा तुम्हारा मालिक बनेगा तुम्हारी गर्दन तोड़ेगा और अल्लाह साथ था दावते इल्लल्लाह का काम था तो सारी ताक़तें टूटती चली गई क़ैसर गया वह फ़ारस गया वह किसरा गया वह यमन गया नव्वे बरस में तुर्किस्तान तक, इस्तन्बूल तक, उंदुलुस पुर्तगाल, जुनूबी फ़्रांस और उधर अलजिरिया, मराकश लीबिया, अलजज़ाइर, तेवनस अफ़्रीका सारा हमारे पाकिस्तान में मुल्तान में कशमीर तक ये 90 बरस में बोंडरी खींचती गई ये जहाज़ नहीं थे घोड़े ऊंट व ख़च्चर, गधे थे सारी कायनात उनके क़दमों में सरकती चली गई तो तब्लीग़ कोई जमाअत नहीं التبليغ فريضة على كل مسلم तब्लीग़ हर मुसलमान का फ़र्ज़ है मुसलमान बन कर सारे आलम को इस्लाम की दावत दें हर मुसलमान औरत के ज़िम्मे है कि सारे आलम की औरतों को इस्लाम की दावत दे इसी पर इस उम्मत को इम्तियाज़ है क्यों? दावते इल्लल्लाह इनका काम है ये एक नेकी करेगा मैं उसको दस दूँगा جاء بالحسنة فله عشر امثالها की बारगाह में हुज़ूर स० ने अर्ज़ किया या अल्लाह! दस

भी ठीक हैं।

दुनिया को छोड़ो, दुनिया पीछे पीछे आएगी

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ख़्वाब में देखा एक गाय थी उसका माथा फटा हुआ और दुम कटी हुई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा तुम कौन हो? कहा कि दुनिया कहा तेरा ये हाल क्या है? कहा जो मेरे आशिक़ हैं मेरे पीछे भागते हैं उन्होंने दुम तो काट दी लेकिन मुझे क़ाबू नहीं कर सके फिर कहा ये माथा क्यों फटा हुआ है? कहा जो लोग मुझे छोड़ के भागते हैं मैं उनके पीछे भागती हूँ उन्होंने मुझे ठोकरें मार मार कर ज़ख़्मी कर दिया मैं उनको क़ाबू नहीं कर सकी।

एक सूडानी नौजवान की तौबा

एक सूडानी नौजवान मुझे राएवन्ड मे मिला मैंने कहा कैसे राहे हिदायत पे आया कहा पाकिस्तान से जमाअत आई हुई थी और दो आदमी साहिल के साथ साथ वह किसी को ढूंढने के लिए निकले हुए थे तो मैं वहाँ नंग धड़ंग लेटा हुआ था वहाँ जो था औबाश नौजवान अमरीकन उन्होंने उनका मज़ाक़ उड़ाया शोर हुआ तो मैंने जो उठकर देखा (मुसलमान तो छुपता नहीं दस करोड़ में पता लग जाएगा कि मुसलमान बैठा है। हमें तो बताना पड़ता है जी मैं मुसलमान हूँ मुसलमान की तो एक पहचान है) मैंने देखा कि औए ये तो मुसलमान हैं मैं वैसे ही नंग धड़ंग उनके पीछे पहुंचा मैंने कहा अस्सलामु–अलैकुम मैं मुसलमान हूँ मेरी ग़ैरत को जोश आया है आपकी बेइज़्ज़ती की गई है आप कहाँ ठहरे हुऐ हैं मैं आप के पास आऊंगा। उन्होंने कहा फ़लां जगह एक मस्जिद है हम वहाँ ठहरे हुए हैं में घर गया कपड़े बदले सीधा उनके पास पहली मज्लिस में ऐसी तौबा की कि पूरी ज़िंदगी बदल गई।

कुर्आन मजीद सारी किताबों का निचोड़ है

अल्लाह पाक ने कुर्आन मजीद को सारी किताबों का निचोड़ बना दिया जो जिस ज़माने में उतरीं वह उस ज़माने के लिए थीं। फिर अल्लाह तआला उसको मुकम्मल करता है। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (सूरह अलमायदा आयत3) मैंने तुम्हारे लिए इस्लाम को मुकम्मल कर दिया है। किसी चीज़ का मुकम्मल होना दो तरह से होता है सिफ़ात के ऐतबार से और अज्ज़ा के ऐतबार से जो सिफ़ात के ऐतबार से मुकम्मल हुआ उसे कामिल कहते हैं और जो अज्ज़ा के ऐतबार से, अरबी में तो अल्लाह तआला ने कहा। اكملت لكم دينكم सिफ़ात के ऐतबार से मेरा दीन कामिल हो गया। واتممت عليكم نعمتى और अज्ज़ा के ऐतबार से भी मेरा दीन मुकम्मल हो गया। अब ना कोई जुज़ इसमें बाक़ी बचा है और न कोई सिफ़त बाक़ी बची है। अज्ज़ा भी मुकम्मल हो गए और सिफ़ात भी पूरी हैं। अब मेरा ऐलान सुना दो।

तुम तब्लीग़ करो हिफ़ाज़त मैं करूंगा

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ - ये आयत बड़ी ज़बरदस्त है इसमें इशारा है कि अगर ये उम्मत कुर्आन की तब्लीग़ का काम शुरू कर दे इस्लाम को दुनिया में फैलाना शुरू कर दे तो अल्लाह की हिफ़ाज़त का निज़ाम उनकी तरफ़ मुतवज्जे हो जाएगा। وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगा। हिफ़ाज़त का वादा इस काम के साथ अल्लाह ने जोड़ा है इस आयत में इरशाद हो रहा है कि तुम तब्लीग़ करो हिफ़ाज़त मैं करूंगा अभी अल्लाह की हिफ़ाज़त का निज़ाम हरकत में नहीं जब वह हरकत में आता है तो अल्लाह तआला क्या क्या नमूने दिखाता है आग के ढेर पर

हिफ़ाज़त करके दिखाई। मछली के पेट में हिफ़ाज़त करके दिखाई। छुरी के नीचे हिफ़ाज़त करके दिखाया। समन्दर में डाल कर हिफ़ाज़त करके दिखाया। फ़िरऔन की गोद में बिठा कर उसके मुंह से कहलवा कर انہ قاتلی यही है मेरा क़ातिल फिर भी हिफ़ाज़त करके दिखाया ये अल्लाह की हिफ़ाज़त का निज़ाम है।

इमाम शाफ़ई का क़ौल, ये दुनिया मुझे धोका देने आई है

इमाम शाफ़ई रज़ि॰ ने कहा। ان هذه الدنيا تخادعني كامراة لست اعرف حالها ये दुनिया मुझे धोका देने आती है पचास, साठ साल की औरत सुर्ख़ी पाउडर लगा कर किसी को धोका दे सकती है हाँ जिसकी आँखें ख़राब हों वह उसे धोके में डाले तो अलग बात है ये दुनिया मुझे धोका दे रही है में इसकी सुर्ख़ी के पीछे इसकी सियाही को जानता हूँ मैं इसके हुस्न के पीछे इसकी बदसूरती को जानता हूँ मैं इसकी चमक के पीछे इसके अंधेरों को जानता हूँ मैं इसकी ख़ुशियों के पीछे इसके ग़मों की बारिश को जानता हूँ। مدتالی يمينها उसने मुझे हाथ दिया कि आज وقطعتها وشمالها मैंने वह हाथ भी काट लिया और उसका उल्टा हाथ भी काट लिया منع الی حرامها واجتنبت حلالها अल्लाह ने कहा था हराम न खाना मैंने हलाल को भी छोड़ दिया यानी मैंने हलाल को भी फूंक फूंक कर इस्तिमाल किया فرايتها محتاجة ग़ौर किया तो वह बेचारी ख़ुद ही मोहताज थी।

एक सहाबिया रज़ि॰ की आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बेमिसाल मुहब्बत का वाक़िआ

एक अंसारिया रज़ि॰ को ये पता चला कि हुज़ूरे अक्रम

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए वह बेक़रार निकली अभी पर्दे का हुक्म नहीं आया था पाँच हिज्री में पर्दे का हुक्म आया है ये ग़ज़वे उहुद में तीन हिज्री में हुआ था। तो बड़ी बेचैनी से कह रही है। ماذافعل رسول الله ماذا فعل رسول الله؟ एक आदमी ने आकर कहा قُتِلَ زَوْجُكَ अम्र बिन जुमूअ की बीवी ने ये ख़बर दी कि قُتِلَ زَوْجُكَ तेरा शौहर क़त्ल हो गया कहा انا لله وانا اليه راجعون ماذا فعل رسول الله ये बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हुआ उसने फिर कहा कि तेरा बेटा शहीद हो गया उसने फिर कहा। انا لله وانا اليه راجعون बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हाल है? उसने कहा कि तेरा भाई भी क़त्ल हो गया कहा انا لله وانا اليه راجعون ये तो बताओ कि अल्लाह के रसूल का क्या हाल है? उस औरत का ख़ाविंद, बेटा और भाई तीनों शहीद हो गए तो उसके पीछे कोई न रहा लेकिन हुज़ूरे अक्रम स॰ की मुहब्बत ऐसी है कि उसको उनकी परवाह ही नहीं, कहा गया कि हुज़ूर स॰ ठीक हैं حَتّٰى تَقَرَّ عَيْنِيْ जब तक हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देख कर मेरी आँखें ठंडी न हो जाऐं तो मुझे चैन और सुकून नहीं आ सकता तो दौड़ लगाई उहुद की तरफ़ जब वहाँ जाकर हुज़ूर स॰ को देखती है कि सामने से हुज़ूर स॰ तशरीफ़ ला रहे हैं और ये औरत आप स॰ के सामने बैठकर आपके कुर्ते के दामन को पकड़ कर कहती है या रसूलुल्लाह स॰! आप ज़िंदा हैं तो सारा जहान भी मिट जाए तो मुझे कोई ग़म नहीं।

तेरे रोने ने आसमान के फ़रिशतों को रुला दिया

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ से किसी ने कहा कि तुम्हारे

नबी स॰ ने तुम्हें बैतुल ख़ला में जाने का तरीक़ा भी बताया है फ़रमाया हाँ! हमारे नबी स॰ ने हमें हत्ता कि बैतुल ख़ला तक जाने का तरीक़ा भी बताया है ये कैसी अज़ीम किताब है कि चलने का भी तरीक़ा बताया बड़ी आज्ज़ी और तवाज़े से चलते हैं وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا कोई उनसे जहालत का मामला करे तो वह उनसे वही जहालत का मामला नहीं करते बल्कि उनसे सलामती की बात करते हैं इसका मतलब ये है कि कोई बुरा सुलूक करे तो उससे क़ता तअल्लुक़ करके अलग हो जाते हैं नहीं ये जहालत के बदले में सलामती का रवय्या इख़्तियार करते हैं सलामती का बोल बोलते हैं। उनकी रात कैसी होती है يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا कभी सज्दे में होते हैं कभी क़याम में होते हैं एक सहाबी रज़ि॰ रात को नमाज़ पढ़ रहे हैं और नमाज़ में रो रहे हैं اجرنی من النار कह रहे हैं सुबह मस्जिद में आये तो आप स॰ ने फ़रमाया आज तेरे रोने ने आसमान के फ़रिशतों को रुला दिया।

जो अल्लाह पाक से मांगेगा अल्लाह उसको देगा

सुलैमान बिन अब्दुल मलिक बड़ा ख़ूबसूरत था वह एक दिन में चार निकाह करता था चार दिन के बाद चारों को तलाक़ देकर चार और करता था उनको तलाक़ देकर चार और करता था बांदियाँ अलग थीं लेकिन पैंतिस साल की उम्र में मर गया चालिस साल भी पूरे नहीं किए दुनिया में कितनी अय्याशी की उन्होंने। उसके मुक़ाबिल उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ इक्तालिस साल उनके भी पूरे नहीं हुए लेकिन उसने अल्लाह को राज़ी करना शुरू कर दिया अब देखिए कि जब सुलैमान को क़ब्र में रखने लगे तो उसका जिस्म हिलने लगा तो उसके बेटे अय्यूब ने कहा मेरा बाप

ज़िंदा है हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा عجل الله بالعقوبته बेटा! तेरा अब्बा ज़िंदा नहीं है अज़ाब जल्दी शुरू हो गया है जल्दी दफ़न करो हालांकि ज़ाहिरी तौर पर सुलैमान बिन अब्दुल मलिक बनू उमय्या के ख़ूबसूरत शहज़ादों में से था उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उसको क़ब्र में उतारा और चेहरे से कपड़े को हटा कर देखा तो चेहरा क़िब्ले से हटकर दूसरी तरफ़ पड़ा था और रंग काला सियाह हो गया था और उसी तख़्त पर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने बैठकर वह काम किया जो अल्लाह की किताब कुर्आन कहता है जो अल्लाह के हबीब स० ने कहा अल्लाह से तअल्लुक़ बनाया फिर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने अपने एक वज़ीर को बुलाया जिसने सुलैमान को मशवरा दिया था कहा मैं तीनों ख़लीफ़ों का चेहरा क़ब्र में देख चुका हूँ उनके चेहरे क़िब्ले से हट चुके थे तुम मुझे देखना मेरे साथ क्या होता है जब हज़रत उमर को दफ़न करने लगे तो अल्लाह ने पहले ही इन्तिज़ाम कर दिया था जब क़ब्र में उतारने लगे तो एक हवा चली और एक पर्चा गिरा जब पर्चे को उठा कर देखा तो उस पर लिखा था कि पहली सतर بسم الله الرحمن الرحيم दूसरी सतर براءة من الله عمر بن عبدالعزيز من النار ये परवाना है उमर के लिए अल्लाह की तरफ़ से निजात का तो उन्होंने परवाना समेत को क़ब्र में रख दिया वज़ीर ने उनके कफ़न की गिरह को खोला और वह चेहरा क़िब्ले की तरफ़ था और ऐसा लगा जैसे चौदहवीं का चाँद क़ब्र में उतर आया उसने अल्लाह से दोस्ती लगा ली थी।
तो भाइयो! ये मुबारक मज्मा ये मुबारक रातें कुर्आन का ख़तम ये सारी बातें कुबूलियत की हैं जो अल्लाह से मांगेगा अल्लाह देगा।

हुज़ूर स॰ की हज़रत जाफ़र रज़ि॰ से मुहब्बत

आप हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के घर गए ये आप स॰ के चचाज़ाद भाई थे बेचारे पहले से धक्के खा रहे थे पाँच हिज्री तक आप रज़ि॰ हब्शा में रहे फ़त्हे ख़ैबर पर वापस तशरीफ़ ले आए एक साल भी अपने पास नहीं रखा कि फिर वापस कर दिया जब ये शहीद हुए तो आप स॰ ने फ़रमाया ऐ जाफ़र रज़ि॰ तेरा जाना मुझ पर बहुत ही गिराँ गुज़रा है लेकिन इसके बावजूद तेरा कुर्बान होना मुझे ज़्यादा महबूब है तेरी जुदाई मुझे गिराँ है और तेरा मेरे साथ रहना इतना पसंद न होता जितना यह पसंद आ गया कि तू अल्लाह पर फ़िदा हो गया जब ख़ैबर के मौक़े पर जाफ़र रज़ि॰ आए तो हुज़ूर स॰ ने फ़रमाया कि तेरे आने से मुझे ख़ैबर के फ़तेह से भी ज़्यादा ख़ुशी हुई उनके घर गए तो हज़रत अस्मा आटा पीस कर रख के बच्चों को नहला कर चूल्हे पर बैठ गई थीं जब हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए तो आप स॰ का चेहरा मुतास्सिर था हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने आप स॰ के चेहरे पर देखा तो थोड़ी हिस बेदार हो गई कि जाफ़र रज़ि॰ के साथ कुछ हो गया है पूछने की हिम्मत नहीं थी हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के तीन बेटे थे औन रज़ि॰, मुहम्मद रज़ि॰ और अब्दुल्लाह रज़ि॰ सबसे बड़े थे औन रज़ि॰ दरमियाने मुहम्मद रज़ि॰ सबसे छोटे थे इन तीनों को आप स॰ ने बुलाया और इनको प्यार करते हुए रोने लगे इनकी तरफ़ मुंह करके तो हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने देखा आँसू टपकते हुए पूछा या रसूलुल्लाह स॰ जाफ़र रज़ि॰ का क्या बना चूंकि आपके आँसू छलक रहे थे वही बताने के लिए काफ़ी थे लेकिन डूबते को तिन्के का सहारा कि शायद ज़ख़्मी हुए हों या शायद ज़िंदा हों तो आप स॰ ने फ़रमाया اسماء احتسب तू अपने अल्लाह से अजर की

उम्मीद रख वहीं गिर कर बेहोश हो गई ऐसे घर टूटे तब इस्लाम यहाँ आकर हम तक पहुंचा। भाइयो! हमारे घर नहीं टूटेंगे हम इस क़ाबिल नहीं हैं आज़माने को नहीं तअल्लुक़ चाहिए हमें अल्लाह इतना नहीं आज़माएगा कुछ तो क़दम उठाऐं इस काम को अपने ज़िम्मे तो समझें कि दीन का काम करना मेरे ज़िम्मे और पहुंचाना हमारे ज़िम्मे है तब्लीग़ दरमियान में एक वासता एक घंटा मैंने बात की है उसमें कहा कि तब्लीग़ी जमाअत का मेम्बर बनें।

दो बातें की हैं अल्लाह के वासते अल्लाह और उसके रसूलुल्लाह स॰ के हुक्मों के पाबन्द बनके चलो वरना बरबाद हो जाऐंगे अपनी औरतों को भी समझाओ और अपने आप को भी समझाओ अल्लाह के रास्ते में ख़ुद भी निकलो और अपनी औरतों को भी निकालो।

गधा, बाप, बेटा

एक छोटी सी किताब जो अंग्रेज़ी में थी उसमें एक कहानी थी बाप बेटे दोनों गधे पर सवार जा रहे थे लोगों ने कहा देखो ये कैसे ज़ालिम हैं कम्ज़ोर सा गधा है दोनों उस पर बैठे हुए हैं तो बाप ने कहा बेटे तू उतर जा मैं बैठा रहता हूँ वरना लोग और भी कुछ कहेंगे ताकि उनकी ज़बान बंद हो जाए आगे कुछ और लोग खड़े थे उन्होंने कहा ये कैसा ज़ुल्म है ख़ुद सवार है छोटे से बच्चे को पैदल चला रहा है तो बाप ने कहा बेटा तू ऊपर आ जा मैं नीचे चलता हूँ वरना लोग क्या कहेंगे? थोड़े लोग आगे खड़े थे उन्होंने कहा ये कैसा नाफ़रमान बेटा है? ख़ुद सवार है और बाप को नीचे चला रहा है अब बेटा भी सवारी से उतरा और दोनों पैदल सवारी के साथ साथ चल दिए आगे कुछ लोग खड़े थे उन्होंने कहा ये कैसे पागल लोग हैं? सवारी साथ है और पैदल

चल रहे हैं तो बाप ने कहा बेटा अब क्या करें तो बेटे ने कहा गधे को सर पर उठा लें गधे को सर पर उठा कर चल रहे हैं, तो वह तस्वीर अब भी मेरे ज़हन में है जो स्कूल के ज़माने में किताब में देखी थी।

फ़िरऔन की बीवी हज़रत आसिया रज़ि॰ का मुहब्बत भरा वाक़िआ

मुहब्बत हो जाए तो कोई रोक नहीं सकता। हज़रत आसिया रज़ि॰ फ़िरऔन की बीवी है। मुहब्बत हो गई आसिया को ईमान ले आई ईमान अंदर रासिख़ हो गया पूरी मिस्र की हुकूमत को ठोकर मार दी नहीं चाहिए, लटका दो सूली पर सूली पर लटकना आसान है सबसे पहले सूली का ईजाद करने वाला भी फ़िरऔन है हाथों में कील गाड़ के लकड़ी गाड़ देता था अब बारी आई आसिया की अगर वह कहती कि नहीं मानती तो दिल में ईमान था सिर्फ़ ज़बान से कह देती तो उसके लिए जाएज़ था माफ़ था लेकिन ईमान की एक सिफ़त ऐसी आती है कि जान लगाना और जान पर खेल जाना महबूब बन जाता है तो वह इस सिफ़त में आ गई थी अभी उस आदमी से जो मर्ज़ी आए मनवा लो उससे नीचे वाला ईमान हो तो वह हज़ारों बहाने करेगा यही बहाना काफ़ी है कि लोग क्या कहेंगे लोगों को फ़ुर्सत मिलेगी कुछ कहने की।

शहर के कुछ बदक़माश लोगों की बख़्शिश

बनी इस्राईल में एक नौजवान था। गुनहगार बड़ा नाफ़रमान। लोगों ने शहर से निकाल दिया। वीराने में जाकर पड़ गया वहाँ बीमार हो गया कोई पूछने ना आया। मरने का वक़्त आ गया तो आसमान को देखकर कहने लगा या अल्लाह मुझे अज़ाब देकर तेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होगा। मुझे माफ़ करके तेरा मुल्क थोड़ा

नहीं होगा तू देख रहा है لاأجد قريباً ولا حميماً न मेरा कोई रिश्तेदार मेरे पास है ना मेरा कोई दोस्त मेरे पास है सबने मुझे ठुकरा दिया है मैं हूँ ही इस क़ाबिल कि ठुकराया जाऊँ और तू मेरी उम्मीद को पूरा फ़रमा दे और मुझे महरूम ना फ़रमा और मुझे माफ़ कर दे बेशक तेरा फ़रमान है। انی انا الغفورالرحيم ये कहा और उसकी जान निकल गई मूसा अलैहिस्सलाम पर वहि आई कि मेरा एक दोस्त फ़लाँ वीराने में मर गया है उसे जाकर गुस्ल दो और जनाज़ा पढ़ो और जितने शहर के बदक़माश और नाफ़रमान हैं उनसे कहो कि जिसने उसके जनाज़े में शिर्कत कर ली उनकी भी बख़्शिश कर दूंगा। ये जो ऐलान किया गया तो लोग भागे भागे गए कि हर कोई गुनहगार है। आगे जाकर देखा तो वही शराबी जुआरी ज़ानी। ऐ मूसा अलैहिस्सलाम आप क्या कह रहे ये तो ऐसा था उन्होंने कहा या अल्लाह तेरे बंदे तो ये कहते हैं आप वह कह रहे हैं अल्लाह तआला ने फ़रमाया वह भी सच्चे हैं और मैं भी सच्चा हूँ। ये ऐसा ही था जैसा ये कह रहे हैं लेकिन जब मरा है तो ऐसी बेबसी में मरा है और मुझे पुकारा है तो इस तरह तड़प के पुकारा है कि मुझे मेरी ज़ात की क़सम उसने सिर्फ़ अपनी ही बख़्शिश मांगी कमज़र्फ़ निकला सारे जहान की बख़्शिश मांगता तो मैं सबको माफ़ कर देता। तो भाई ये जो तब्लीग़ का काम हो रहा है दुनिया में कोई अलग मेहनत नहीं है बल्कि इस बात की मेहनत है कि हर मुसलमान ख़्वाह जिस शोबे से तअल्लुक़ रखता है अल्लाह का बंदा अल्लाह का फ़रमांबरदार बन के चले एक बात। अगली बात फ़रमांबरदारी कैसी हो हमने तो अल्लाह को नहीं देखा।

एक गौरे की दावते तब्लीग़

1982ई॰ जब इंग्लिस्तान गए थे तो हमारे साथ डॉक्टर अम्जद साहब थे उनकी आदत ऐसी थी कि गौरों को भी दावत देना शुरू कर देते तो एक गौरे को दावत दी तो उसने कहा कि इस्लाम तो मुझे प्यारा है लेकिन मुसलमानों से नफ़रत है इस्लाम अच्छा मज़हब है और मुसलमान बुरा है दूसरे साहब ने कहा कि पहले आप आप अम्ली तौर पर मुसलमान हो जाइए तो फिर हम मुसलमान हो जाऐंगे इस तब्लीग़ की मेहनत के ज़रिए से एक तो पूरा दीन सिखाने की दावत दी जा रही है कि पहले पूरे दीन को सीखें और अगली बात के लिए ज़हन बनाया जा रहा है कि सारी दुनिया के इंसानों के पास अल्लाह का पैग़ाम लेकर जाना पड़े तो हमें जाना है ये दावते इल्लल्लाह हमारी ज़िम्मेदारी है इसी पर तो ये सारे मरातिब और फ़ज़ाएल हैं इस वक़्त इस्लाम में जो देर हो रही है हमारी वजह से हो रही है हम दो साल पहले केनेडा गए हमारे साथ ये वाक़िया पेश आया वहाँ पर पूरी दुनिया की सबसे आबशार गिरती है (जिसको नया गिरा आबशार कहते हैं) लाखों इंसान वहाँ पर देखने के लिए आते हैं हम उसके क़रीब से गुज़र रहे थे तो नमाज़ का वक़्त हो गया तो हमने यहीं नमाज़ पढ़ने का इरादा कर लिया हमने एक तरफ़ होकर अज़ान दी और चादरें बिछाईं तो एक अम्रीकन हमें कुर्सी पर बैठकर देखता रहा हमने उसी आबशार की नहर से वज़ू किया और नमाज़ की तय्यारी करने लगे तो वह कहने लगा कि आप मुसलमान हैं? हमने कहा कि हाँ हम मुसलमान हैं तो उसने कहा कि मेरे भी कुछ दोस्त मुसलमान हैं जब हम नमाज़ से फ़ारिग़ हो गए तो वह हमारे क़रीब हो गया तो कुछ साथियों ने कहा कि आप मुसलमान क्यों नहीं हो

जाते? तो कहने लगे कि मेरा दिल चाहता है शायद मेरी बीवी न माने तो मैंने कहा कोई और बीवी अल्लाह तआला देगा उसकी क्या बात है? तो वह कल्मा पढ़ कर मुसलमान हो गया तो हमने उसको एक इस्लामिक सैंटर का पता दे दिया कि आप वहाँ तशरीफ़ ले जाइए इंशा अल्लाह मज़ीद रहनुमाई मिल जाएगी। कैलिफ़ौरनिया में एक अरब लड़का खड़ा था पगड़ी कुर्ता पाजामा पहना हुआ था एक लड़की आ गई और कहने लगी कि तुम कौन हो? तो अरब कहने लगा कि मुसलमान, उस लड़की ने पूछा कि ये लिबास कैसा है? उसने कहा कि मेरे नबी का है तो उसने कहा कि ये तो बहुत ख़ूबसूरत लिबास है दूसरे मुसलमान ये क्यों नहीं पहनते अरब बोला ये उनकी ग़फ़लत है और ग़ल्ती है फिर उसने कहा कि इस्लाम क्या है? मुझे बताओ तो सही? पांच मिनट बात की तो मुसलमान हो गई इस वक़्त जो देर हो रही है। ये हमारी तरफ़ से हो रही है कि हम तब्लीग़ को अपना काम बना कर दीन सीख कर पूरी दुनिया में फैल जाऐं तो मुल्कों के मुल्क इस्लाम में आऐंगे अब आप बोलिए और बताइये कौन कौन तय्यार है इसके लिए अब आप की बारी है हमने अपनी बात अर्ज़ कर दी अब आप फ़रमायें कि कोई भाई चार माह के लिए नक़द तय्यार है।

हज़रत नूह अलै॰ के तीन बेटे साम, हाम और याफ़स

एक दफ़ा हज़रत ईसा अलै॰ तशरीफ़ ले जा रहे थे तो एक क़ब्र देखी तो फ़रमाया ये है नूह अलै॰ के बेटे साम की क़ब्र। जब तूफ़ान आया सारे मर गए तीन बेटों से फिर नस्ल चली साम, हाम और याफ़स हम सारे साम की औलाद हैं सारे यूरोप वाले याफ़स

की औलाद हैं। सारे अफ्रीका वाले हाम की औलाद हैं। तो उन्होंने कहा ये साम की क़ब्र है तो उन्होंने कहा या नबी अल्लाह उसको ज़िंदा तो करें तो उनके कहने से अल्लाह ज़िंदा फ़रमा देते थे। उन्हें हुक्म दिया वह ज़िदा हो के क़ब्र से बाहर आ गए। कोई बातचीत फ़रमाई कहा वापस चला जा इस शर्त पर दोबारा वापस जाता हूँ कि मुझे दोबारा मौत की तक्लीफ़ ना हो। कि मौत का दर्द आज भी मेरी हड्डियों में मौजूद है। इसके लिए कोई पैन किलर (Pain Killer) नहीं है। सिवाए तक़्वा और तवक्कुल के।

ऐ ख़दीजा रज़ि.! अपनी सौकन को मेरा सलाम कहना

हज़रत ख़दीजा रज़ि. का इंतिक़ाल होने लगा तो हज़रत ख़दीजा रज़ि. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली ख़ातून पहली बीवी तो आप सल्ल. ने फ़रमाया ख़दीजा रज़ि. जब तू जन्नत में जाए तो अपनी सौकन को मेरा सलाम कहना। या रसूलुल्लाह मैं तो पहली बीवी हूँ तो मेरी सौकन कौन है। कहा कि फ़िरऔन की बीवी आसिया का अल्लाह ने जन्नत में मुझसे निकाह कर दिया है।

तीन बच्चों ने माँ की गोद में बात की

एक दफ़ा एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। एक आदमी गुज़रा घोड़े पर सवार, गर्दन अक्ड़ी हुई, सर पर ताज मुतकब्बिर चाल, गुरूर से भरा हुआ, बड़ी उसकी लश पश, बड़ी उसकी चमक दमक, तो उस औरत ने कहा कि ऐ अल्लाह मेरे बेटे को भी ऐसा बना दे। तो उस बच्चे ने दूध पीना छोड़ दिया। सर उठाया और कहा اللهم لا تجعلني مثله ऐ अल्लाह मुझे ऐसा न

बनाना। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया तीन बच्चे माँ की गोद में बोल हैं। उनमें से एक बच्चा ये भी था जिसका मैं क़िस्सा सुना रहा हूँ।

फ़िर थोड़ी देर बाद एक औरत गुज़री। ऐसी कमज़ोर और काली सियाह और लोग उसको मारते जा रहे हैं। اللهم لاتجعلنی مثلها तूने बुरा काम किया तूने चोरी की और औरत ने कहा اللهم لاتجعلی مثلها ऐ अल्लाह मेरे बेटे को ऐसा ना बनाना।

तो बेटे ने फिर दूध छोड़ दिया और उसने औरत को देखा और कहा الهم اجعلنی مثلها ऐ अल्लाह मुझे इस औरत जैसा बनाना। माँ ने कहा तू क्या कह रहा है तेरा सत्तिया नास हो। मैंने तो अल्लाह से बड़ी इज़्ज़त का मुतालबा किया है और तू ज़िल्लत को चाहता है तो बच्चा बोला अम्मां जान ये जो जा रहा था। ये अल्लाह का दुश्मन है। अल्लाह का नाफ़रमान है। ये मुतकब्बिर है, जबकि इसका ठिकाना जहन्नम है और वह काली औरत जिस पर ज़िना की तोहमत लगी है और जिस पर चोरी की तोहमत लगी है। अल्लाह की ऐसी वली है कि अल्लाह के फ़रिशते भी उसके पाँव के नीचे पर बिछाते हैं। अल्लाह के हां इज़्ज़त का मेयार वह नहीं जो हमने बना लिया है। यहूदियों ने, हिन्दुओं ने बना लिया है। थोड़े पैसे वाला छोटा आदमी है और दरमियानी पैसे वाला दरमियानी आदमी है। बड़े पैसे वाला बड़ा आदमी है। यह तो यहूदियों का ज़हन है।

गवर्नर का जंगल के दरिन्दों के नाम ख़त

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० मदाएन के अफ़सर बन कर आए। बड़े गवर्नर बनके आए तो चोरियाँ शुरू हो गईं। पहले तो कोशिश करते रहे कि ऐसे ही ठीक हो जाएं फिर कहने लगे अच्छा

भाई का कागज़ कलम लाओ। लिखा मदाएन के गवर्नर की तरफ़ से जंगल के दरिन्दों के नाम। आज रात तुम्हें जो भी चलता फिरता मशकूक नज़र आए उसे चीड़ फाड़ देना। अपने दस्तख़त करके फ़रमाया शहर के बाहर इसको कील गाड़ के लटका दो। इधर राबता दो रकअत के ज़रिए ऊपर और उधर जंगल के दरिन्दों को हुक्म। उधर राबता ऊपर है तो ख़ाली मुहर हैं शतरंज के मुहरों की तरह। अच्छा कहा भाई आज दरवाज़ा खुला रहेगा शहर का दरवाज़ा बंद नहीं होगा। जूंही रात गुज़री शैर गुर्राते हुए अंदर चले आए किसी को जुरअत नहीं हुई बाहर निकल सके। आपके दो नफ़िल काम कर गए जो बड़े बड़े हथियार काम नहीं कर सकेंगे और इन सारे ज़ालिमों और बदमाशों की अल्लाह तबारक व तआला गर्दनें मड़ोड़ कर तुम्हारे क़दमों में डाल देगा सिर्फ़ अल्लाह और उसके रसूल वाला तरीक़ा सीख लें तो उसकी भी ट्रेनिंग चाहिए बग़ैर ट्रेनिंग के कैसे आएगा। तो जो तब्लीग़ का काम है इस ज़िंदगी की ट्रेनिंग है कि जिस में हमारे सारे जिस्म के आज़ा अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के ताबे हो जाऐं।

एक सहाबी का हुक्म ऐ जानवरो! तीन दिन में जंगल ख़ाली कर दो

हज़रत उक़्बा बिन नाफ़े रज़ि॰ जब पहुंचे तियूनस में तो कहरवान का शहराब भी मौजूद है ये पहले जंगल था ग्यारह किलोमीटर लम्बा चौड़ा जंगल था यहाँ छावनी बनाई थी तो लशकर में अनीस सहाबी थे उन्होंने सहाबा रज़ि॰ को लेकर एक टीले पर चढ़कर ऐलान किया कि जंगल के जानवरो! हम अल्लाह और उसके रसूल स॰ के ग़ुलाम हैं यहाँ छावनी बनानी है तीन दिन में ख़ाली कर दो इसके बाद जो हमें मिलेगा हम उसे क़त्ल कर

देंगे ये वाक़िआ ईसाई मुअर्रिख़ीन ने भी अपनी किताबों में नक़्ल किया है। ईसाई मुअर्रिख़ीन इस वाक़िए को लिखते हैं इसकी हक़्क़ानियत का ऐतराफ़ करते हैं तो तीन दिन में सारा जंगल ख़ाली हो गया और इस मंज़र को देखकर हज़ारों अमरीकन क़बाएल इस्लाम में दाख़िल हो गये कि इनकी तो जानवर भी मानते हैं हम कैसे ना मानें? ठीक है भाई अब ये तो पुलिस वालों की भी ज़रूरत है सूल वालों की भी और सारी दुनिया के मुसलमानों की भी ज़रूरत है मर्दों औरतों की ज़रूरत है कि हम अल्लाह और रसूल की मान कर चलें अल्लाह के नबी की बात ये है कि हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने आख़िरी नबी बनाया है आपके बाद कोई नबी नहीं आएगा आप स॰ सारे इंसानों के सारे जिन्नात के और आने वाले क़यामत तक सारे जहानों के नबी हैं तो सारी दुनिया में इस्लाम का फैलाना आप स॰ के ज़िम्मे था लेकिन आप स॰ को तेईस साल के अर्सा गुज़रने के बाद अपने पास बुला लिया। तो अल्लाह तआला ने पूरी की पूरी उम्मत को हुज़ूर स॰ की ख़त्मे नुबूव्वत की वजह से ये तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी सौंपी है।

नेक औरत जन्नत की हूर से अफ़ज़ल है

एक हदीस में आता है कि उम्मे सल्मा रज़िअल्लाहु अन्हा ने पूछा يارسول الله نساء الدنيا افضل ام نساء الجنة दुनिया की औरतें अफ़ज़ल हैं या जन्नत की हूरें अफ़ज़ल हैं? ये सवाल क्यों पैदा हुआ? दुनिया की औरत या मर्द तो गारे मिट्टी से बने हैं पैशाब पाख़ाने में है और जन्नत की हूर को मुश्क से ज़ाफ़रान से काफ़ूर से अल्लाह तआला ने वजूद बख़्शा है मुश्क अंबर ज़ाफ़रान काफ़ूर चारों ख़ुशबूओं से फिर हमारे दुनिया के ये नाम हैं बाक़ी तो

बिल्कुल अलग है ये ज़ाफ़रान नहीं ये मुश्क नहीं जो नाफ़ा है हिरन का नहीं वह तो कोई और ही चीज़ होगी जब जन्नत के पानी का एक क़त्रा दुनिया में नहीं आसमान पर बैठकर उंगली पे लगा के नीचे कर दिया जाए तो सारे जहान में खुशबू फैल जाएगी तो जो खुद खुशबू है वह खुशबूदार कैसी होगी वह तो बनीं मुश्क अंबर ज़ाफ़रान काफ़ूर से हम बने गारे मिट्टी से तो उन्होंने पूछा कौन अफ़ज़ल है? हुजूर ने फ़रमाया نساء الدنيا ऐ उम्मे सल्मा रज़ि॰ दुनिया की औरत अफ़ज़ल है? अच्छा لم يا رسول الله क्यों वह कैसे? आप स॰ ने इरशाद फ़रमाया وصيامهن وصلاتهن وعبادتهن لله عزوجل उनकी नमाज़ की वजह से उनके रोज़े की वजह से उनकी इबादत की वजह से। यहाँ इबादत से मुराद क्या है कि पूरी ज़िंदगी अल्लाह के हुक्म में हो नमाज़ रोज़ा तो पहले आ गया न हम तो नमाज़ रोज़ा को इबादत समझते हैं नहीं इबातद का लफ़्ज़ जहां भी आया है हदीस में वहां इबादत से मुराद पूरी बंदगी है कि पूरी ज़िंदगी अल्लाह की बंदगी हो। अल्लाह की इताअत में हो, नबी की इताअत में हो। इन तीन शर्तों के साथ وصلاتهن وصيامهن وعبادتهن لله عزوجل नमाज़ रोज़ा अल्लाह की इबादत की वजह से البس الله وجوههن النور उनके चेहरों पर नूर आएगा اجسادهن الحرير जिस्म पर रेशमी जोड़े ख़ालिस सोने का ज़ेवर और सोने की उनके सामने अंगीठियाँ होंगी। हमारे हाँ दस्तूर नहीं अरब के हाँ दस्तूर है कभी बैतुल्लाह में देखा होगा वह ऊद की लकड़ी डाल कर उसकी धूनी दे रहे होते हैं एक ऐसा प्याला सा होता है जिसमें धूनी देते हैं उसे मेहमार कहते हैं और बादशाह अपने महलात में अंबर ऊद और मुश्क को उसमें रखकर उसको जलाते हैं जिससे उसका धुआँ कमरे में उठता है सारे कमरे में

उससे ख़ुशबू फैलती है तो अल्लाह का हबीब स॰ फ़रमा रहा है कि उनकी वह अंगीठियाँ हैं जिससे ख़ुशबू की महक उठेगी वह मोतियों की बनी हुई होंगी लकड़ी की बनी हुई नहीं मोतियों की।

ऐ अल्लाह तू सबकी सुनता है मेरी भी सुन

हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में एक गवय्या था छुप छुप के गाता था गाना बजाना तो हराम है छुप छुप कर गा के वह अपना शौक़ पूरा करता था। लोग कुछ उसको पैसे दे देते थे। जब वह बूढ़ा हो गया आवाज़ ख़त्म हो गई तो आया फ़ाक़ा, आई भूक, अब गया जन्नतुल बक़ी में एक झाड़ी के पीछे बैठ गया और कहने लगा ऐ अल्लाह जब आवाज़ आई थी तो लोग सुनते थे जब आवाज़ ना रही तो सुनना छोड़ गए तू सबकी सुनता है तुझे सब पता है मैं ज़ईफ़ हूँ कमज़ोर हूँ बेशक तेरा बेफ़रमान हूँ पर ऐ अल्लाह मेरी ज़रूरत को पूरा फ़रमा। ऐसी आवाज़ लगाई ऐसी संदा बुलंद की हज़रत उमर रज़ि॰ मस्जिद में लेटे हुऐ थे आवाज़ आई कि मेरा बंदा मुझे पुकार रहा है उसकी मदद को पहुंचो। बक़ीअ में फ़रयादी है उसकी फ़रयाद पूरी करो। उमर रज़ि॰ नंगे पाँव दौड़े। देखा तो बड़े मियाँ झाड़ी के पीछे अपना क़िस्सा सुना रहे हैं जब उन्होंने हज़रत उमर रज़ि॰ को देखा तो उठकर दौड़ने लगे। कहा बैठो बैठो ठहरो ठहरो मैं आया नहीं बल्कि भेजा गया हूँ कहा किसने भेजा है कहा जिसे तुम पुकार रहे हो उसी ने भेजा है जिसे तुम पुकार रहे हो उसी ने भेजा है तो उसने आसमान पर निगाह डाली ऐ अल्लाह सत्तर साल तेरी नाफ़रमानी में गुज़रे तुझे कभी याद न किया जब याद किया तो अपने पेट की ख़ातिर तूने याद किया तूने फिर भी मेरी आवाज़ पे लब्बैक कहा। ऐ अल्लाह मुझ नाफ़रमान को माफ़ कर दे और ऐसा रोया कि जान निकल

गई। मौत हो गई हज़रत उमर रज़ि॰ ने ख़ुद उसका जनाज़ा पढ़ाया तो मेरे भाइयो! अल्लाह तआला पकड़ते इसलिए नहीं कि अल्लाह जल्ला जलालहू रहीम हैं करीम हैं और अपने बंदे पर रहम चाहते हैं अपने बंदे पर फ़ज़ल करना चाहते हैं अपने बंदे को जहन्नम में नहीं डालना चाहते तो मेरे भाइयो! अल्लाह तआला ने दरवाज़े खोल दिये हैं मौत तक के लिए तौबा के दरवाज़े खुले हुए हैं باب التوبة مفتوح مالم يغرغر तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है तक आदमी की जान निकल कर हलक़ में न आ जाए ग़रग़रा के शुरू होने से पहले तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है मर्दों के लिए भी औरतों के लिए भी।

ख़ातूने जन्नत ने कहा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे लिए भी दुआ फ़रमाऐं

हज़रत उम्मे हराम रज़ि॰ बिन्त मिलहान को जन्नत की बशारत है उनके घर में हुज़ूर स॰ तशरीफ़ लाए आराम किया उठे और मुस्कुराने लगे। क्या हुआ या रसूलुल्लाह! कहा अपनी उम्मत को देखा है समुन्दर पे जा रही है बादशाहों की तरह। कहा या रसूलुल्लाह स॰ मेरे लिए भी दुआ करें मैं भी उनमें हो जाऊँ आप स॰ ने दुआ फ़रमा दी। हज़रत माविया रज़ि॰ ने क़बरस में आज भी उनकी क़ब्र मौजूद है अल्लाह के पैग़ाम को फैलाना मर्दों ने अपने ज़िम्मे लिया हुआ था। औरतों ने सब्र ज़िम्मे लिया हुआ था। औरतें पूरी तरह तो नहीं निकल सकतीं अलबत्ता चंद शराएत के साथ निकल सकती हैं लेकिन उन्होंने अपने ख़ाविंद का हक़ माफ़ किया हुआ था। जाओ हमारा हक़ माफ़ है आगे चलकर इकट्ठे अल्लाह से ले लेंगे।

फ़ातेह सिंध मुहम्मद बिन क़ासिम रह॰ अपनी बीवी के साथ चार माह रहे

मुहम्मद बिन क़ासिम रह॰ के हिस्से में ये सारा इस्लाम है। सबिका सिंध का सारा इस्लाम दीपाल पुर से कशमीर तक पहुंचे और अपनी बीवी के साथ कुल चार महीने रहे। चार महीने के बाद सवा दो बरस यहाँ गुज़ारे और फिर शहीद कर दिए गए उसने अपनी बीवी को चार महीने से ज़्यादा नहीं देखा और उसकी बीवी ने अपने ख़ाविंद को चार महीने से ज़्यादा नहीं देखा। लेकिन बेशुमार इंसानों का इस्लाम दोनों मियाँ बीवी के खाते में चला गया। क़यामत के दिन दोनों मियाँ बीवी नबियों की शान के साथ जन्नत में जा रहे होंगे कोई उसने छोटा सौदा किया था, बहुत बड़ा सौदा किया था।

दुनिया का नम्बर दो फ़ातेह महमूद ग़ज़नवी रह॰ है

महमूद ग़ज़नवी दुनिया का नम्बर दो फ़ातेह है फ़ातेह अव्वल चंगेज़ ख़ान है जिसने सबसे ज़्यादा दुनिया फ़तेह की। इसके बाद महमूद ग़ज़नवी रह॰ है जिसने दुनिया में सबसे ज़्यादा फ़ुतूहात कीं। इसके बाद तैमूर लंग है। तो महल बनाया बड़ा आलीशान इस्लामाबाद का ताजिर तो चंद करोड़ के या चंद अरब के दायरे में ही घूम रहा होगा। वह महमूद है जिसके सामने दुनिया के ख़ज़ाने सिमट चुके हैं। महल बनाया बड़ा ख़ूबसूरत बड़ा आलीशान अभी शहज़ादा था बाप ज़िंदा था। तो बाप को कहा अब्बाजान मैंने घर बनाया है ज़रा आप मुआएना तो फ़रमाएं। उसका वालिद सबकतगीन रह॰, बहुत ही नेक सिपाही से अल्लाह ने बादशाह बना

दिया औक़ात याद थी आया महल को देखा हसीन। हुस्न व जमाल नक़्श व निगार का नमूना लेकिन एक लफ़्ज़ नहीं कहा कि कैसा ख़ूबसूरत है कैसा आलीशान है महमूद ग़ज़नवी दिल ही दिल में बड़े ग़ुस्से में मेरा बाप कैसा बेज़ौक़ है एक लफ़्ज़ भी दाद नहीं दी कि हाँ भाई बड़ा अच्छा है ख़ामोश जब बाहर निकलने लगे तो अपने खंजर को निकाला दीवार पर जो ऐसा ज़ोर से मारा दीवार पर नक़्श व निगार थे वह सारे टूट गए। कहने लगा बेटा तूने ऐसी चीज़ पर मेहनत की है जो ख़ंजर की एक नौक बर्दाश्त नहीं कर सकती। तुझे मिट्टी और गारे के ख़ूबसूरत बनाने के लिए अल्लाह ने नहीं पैदा किया उस दिल को बनाने के लिए अल्लाह ने तुझे पैदा किया है तो हम थोड़ी ज़िंदगी के बावजूद यहाँ मुस्तक़िल ज़िंदगी का निज़ाम चाहते हैं राहत चाहते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक हुक्म टूटा, फ़तेह शिकस्त में बदल गई

बदर की लड़ाई में इताअत भी पूरी है। अल्लाह की भी और रसूल की भी। हुज़ूर स॰ की भी पूरी मानें अल्लाह की भी पूरी मानें। हज़ार फ़रिशते अल्लाह तआला ने उतार दिए। उहुद की लड़ाई, वही सहाबा, वही नबी, अल्लाह का नबी मौजूद है। सहाबा मौजूद हैं। हुज़ूर स॰ का एक हुक्म टूटा। अल्लाह तआला ने फ़तेह को शिकस्त में तबदील कर दिया। हुनैन की लड़ाई में, आज हमें कोई शिकस्त नहीं दे सकता। हम ज़्यादा हैं, दुश्मन थोड़े हैं अपनी तादाद और कसरत पर निगाह गई और अल्लाह की क़ुदरत से निगाह हट गई। आपने दाऐं तरफ़ देखा "ऐ अन्सार की जमाअत!" उन्होंने कहा "लब्बैक या रसूलुल्लाह स॰! आप को ख़ुशख़बरी हो, हम आपके साथ हैं "सो अन्सारी चंद एक मुहाजिरीन वह लौटकर

आए हैं। अल्लाह ने चार हज़ार का मुंह फेर लिया। क़यामत तक अल्लाह ने हमें ज़ाबता दिया है कि अल्लाह की मदद दुनिया और आख़िरत में लेने का जो ज़ाबता है वह हुज़ूर स॰ का लाया हुआ पूरा दीन है। अल्लाह का नबी भी मौजूद हो और अल्लाह का हुक्म टूट जाए तो अल्लाह की मदद हट जाएगी।

आप मुझ से शादी कर लें

ग्लासको में हमारा एक साथी था। बीमार हो गया। हस्पताल में दाख़िल हुआ। तीन दिन तक दाख़िल रहा। चौथे दिन नर्स उससे कहने लगी। आप मुझ से शादी कर लें। उसने कहा क्यों? मैं मुसलमान हूँ, तेरा मेरा साथ नहीं हो सकता। कहने लगी मैं मुसलमान हो जाऊंगी। क्या वजह है? कहा मेरी जितनी सोर्स है हस्पताल में। मैंने आज तक किसी मर्द को किसी औरत के सामने आँखें झुकाते नहीं देखा सिवाए तेरे। तुम मेरी ज़िंदगी में पहले शख़्स हो जो औरत को देख कर नज़र झुका लेते हो। मैं आती हूँ तो तुम अपनी आँखें बंद कर लेते हो। इतना बड़ा हया सच्चे दीन के सिवा कोई नहीं सीख सकता। आँखों की हिफ़ाज़त ने उसके अंदर इस्लाम दाख़िल कर दिया। मुसलमान हो गई दोनों की शादी हो गई। वह लड़की अब तक कितनी लड़कियों को इस्लाम में लाने का ज़रिआ बन चुकी है। कितनी वहाँ की ब्रिटिश ख़्वातीन मुसलमान हो चुकी हैं।

हमारा मक़सद पूरी दुनिया में इस्लाम का निफ़ाज़ है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा रज़ि॰ को आग में डाल रहे हैं। रोने लगे रोक कर पूछा क्यों रो रहे हो? बोले ये ख़ुशी के आँसू हैं। ये तमन्ना थी कि अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होना है। हाय मेरे

जिस्म के जितने बाल हैं इतनी मेरी जानें होतीं मैं एक एक जान कुर्बान करता। न मौत मतलूब, न ज़िंदगी मतलूब, न इक्तिदार मतलूब, न ज़माना मतलूब, न मकान मतलूब, सिर्फ़ मतलूब है तो अल्लाह मतलूब है और हमारा काम नहीं है अल्लाह और रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लेकर चलना और उसे सारी दुनिया में लेकर फिरना। ये हमारा मक़्सूद है। सारी दुनिया के लोगों को ये पाकीज़ा ज़िंदगी देनी है। ये इस्लाम उनके दिलों में उतारना है हर दफ़्तर, हर घर, हर मस्जिद हर मदरसा हर मुल्क हर बर्रे आज़म में जाकर हमने सदा लगानी है। हम बिकाउ माल हैं। हमें अल्लाह व रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़रीद चुके हैं। मेरी जान पर तो मेरा इख़्तियार ख़त्म है। अल्लाह की अज़्मत रिसालत की अज़्मत तौहीद की अज़्मत को लेकर पूरी दुनिया में इस्लाम का पैग़ाम सुनाना हमारा मक़्सद है।

मियाँ मोजू मैवाती की तब्लीग़ से हज़ारों लोग ताइब हुए

एक आदमी आया मौलाना इल्यास रहमतुल्लाह अलैह के पास उसका नाम था मोजू मैवाती तो मौलाना इल्यास को कहने लगा मौलवी गिलास मौलवी दलास तो उसकी तालीम का तो आप ख़ुद ही अंदाज़ा लगा लें कहा मौलवी गिलास मैं क्या तब्लीग़ करूं मुझे तो कल्मा भी ना आवे सत्तर साल मेरी उम्र हो गई उन्होंने फ़रमाया तो तीन चिल्ले लगा। लोगों को जाकर कहे लोगों मैंने कल्मा भी ना सीखा सत्तर साल गुज़र गये तुम ये ग़ल्ती ना करना कल्मा सीख लो उसके चार महीने लगवाए उस मियाँ मौजू, अनपढ़ के हाथ पर पंद्रह हज़ार लोग नमाज़ी बने और ताइब हुए आप तो सारे पढ़े लिखे समझदार लोग हैं आप करेंगे काम तो कल को ना

जाने कितने लोग नामए आमाल में होंगे। नबियों की शान से जन्नत में जा रहे होंगे ठीक है नां भाई जब अल्लाह मौक़ा दे तो चार महीने लगा लो चालिस दिन लगाओ और अपने बीवी बच्चों को अपने माँ बाप को ये बात समझाओ और माँ बाप औलाद को समझाऐं ठीक है नां भाई।

इटली में एक नौजवान की मेहनत से तीन सौ मसाजिद बनीं

इस दफ़ा मैं हज पर गया तो इटली से एक नौजवान आया हुआ था अरब हज़रत हसन रज़ि॰ की औलाद में से मराकश का रहने वाला मजबूरी की वजह से इटली में रहना पड़ गया बाइस साल की उम्र और उस अकेले लड़के ने इटली में पूरे मुसलमानों को हरकत दे दी और वहाँ तीन सौ मस्जिदें बन गईं जबकि एक मस्जिद भी नहीं थी और हज पर सत्तर नौजवानों को लेकर आया हुआ था इतनी ताक़त अल्लाह ने मुसलमान नौजवान में रखी है वह आलिम नहीं है कोई दुनियावी डिग्री थी इक्नामिक्स या फ़िज़िक्स की थी मुझे अच्छी तरह याद नहीं लेकिन उसने वहाँ जो इस मेहनत को ज़िंदा किया पूरे इटली में तीन सौ मस्जिदों का ज़रिआ बन गया और हज़ारों नौजवानों का तौबा का ज़रिआ बन गया तो आप का काम आप की ज़िम्मेदारी है मैं ये नहीं कहता कि तब्लीग़ी जमाअत के मेम्बर बन जाओ न किसी जमाअत की दावत दे रहा हूँ कि मैं और आप अल्लाह और उसके रसूल स॰ के ग़ुलाम बन जाऐं इस ग़ुलामी को आगे लोगों में फैलाने वाले बनें इस फैलाने में जो तक्लीफ़ आए उसे अल्लाह की रज़ा के लिए बर्दाश्त करें तो अल्लाह का हबीब स॰ हौज़े कौसर पर अपने हाथ से एक प्याला पिलाएगा सारे दुख दर्द निकल जाऐंगे हाँ ऐलान होगा कहाँ

हैं कहाँ हैं मेरे आख़िरी उम्मती आख़िरी उम्मती जब दीन मिट रहा था उन्होंने मेरे दीन को गले लगा कर मेरे पैग़ाम को पहुंचाया फैलाया था अल्लाह का हबीब स॰ अपने हाथ से जामे कौसर पिलाएगा।

मैं बूढ़ा हूँ अल्लाह तआला ने मुझे माफ़ कर दिया

यहया बिन अक्सम रह॰ का इंतिक़ाल हुआ, मुहद्दिस हैं, किसी को ख़्वाब में मिले पूछा क्या हुआ, अल्लाह ने पूछा ओ बदकार बूढ़े! तूने ये किया, तूने ये किया, आगे मैंने कहा ऐ अल्लाह मैंने तेरे बारे में ये हदीस नहीं सुनी। इल्म की शान देखो अल्लाह के सामने भी हदीस बयान हो रही है। हज़रत आएशा रज़ि॰ ने बताया, उन्हें हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया उन्हें जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने बताया जिब्रईल को आपने बताया जब कोई मुसलमान बूढ़ा हो जाता है तो अज़ाब देते शरमाता हूँ और मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ तो अल्लाह ने मुझे इस पर माफ़ कर दिया।

हज़रत अबू मुस्लिम रह॰ ख़ौलानी की नमाज़ के समरात

हज़रत अबू मुस्लिम रह॰ ख़ौलानी शाम की तरफ़ सफ़र कर रहे थे रास्ते में एक पहाड़ी दरिया था। पहाड़ी दरिया तो बड़ा तेज़ होता है आप ऊपर चले जाऐं और देखें कि कितना तेज़ होता है तीन हज़ार का लश्कर था जिसने दरिया पार करना था और कोई कशती वहाँ चल ही नहीं सकती। दो रकअत नफ़िल पढ़े कि ऐ अल्लाह तेरे नबी स॰ के उम्मती हैं तूने बनी इस्राईल को समन्दर

पार कराया था हमें ये दरिया पार करवा। और फिर ऐलान किया कि दरिया में घोड़ा डाल रहा हूँ तुम भी मेरे पीछे घोड़े डाल दो जिसका जो सामान गुम हो जाए तो मैं ज़िम्मेदार हूँ जान तो बड़ी बात है सामान भी गुम हो जाए तो मैं ज़िम्मेदार हूँ। घोड़े डाले पानी के ऊपर चला दिये दरमियान में एक आदमी ने अपना लोटा खुद ही फैंक दिया आज़माने के लिए जब किनारे पर पहुंचे हाँ भाई किसी का कोई सामान हाँ जी मेरा लोटा गिर गया लोटा तो मामूली सा है उसे कहाँ जाना चाहिए वहाँ तो पत्थर बह रहे हैं कहने लगा अच्छा तेरा लोटा गुम हो गया है आओ मेरे साथ वापस लेकर फिर दरिया के किनारे पर आए तो लोटा दरिया के किनारे पर पहले पड़ा हुआ था भाई तुम्हारा लोटा मिल गया है संभाल लो। ये नमाज़ की ताक़त है तो नमाज़ पढ़ना सीख लें सारे मसले हल हो जाऐंगे तो भाई अपनी औरतों को नमाज़ अपने बच्चों को अपनी बच्चियों को नमाज़ सिखाऐं नमाज़ याद करवाऐं ख़ुद नहीं आती तो याद करें क़ुर्आन की तिलावत के लिए वक़्त निकालें अल्लाह के ज़िक्र करने के लिए वक़्त निकालें दरूद शरीफ़ पढ़ने के लिए वक़्त निकालें इस्तिग़फ़ार दरूद शरीफ़ चलते फिरते उठते बैठते हर वक़्त इसकी आदत डालें क़ुर्आन पाक पढ़ने की आदत डालें अल्लाह का कलाम है पढ़ना चाहिए महबूब का कलाम है दुनिया व आख़िरत की कामयाबियों का इल्म है निजात के सारे अस्बाब उसमें बताए गए हैं ठीक है भाई महीने में तीन दिन की जमाअत सुपर मार्किट से निकलनी चाहिए जहाँ जहाँ से आप आए हैं अपने अपने महलों की तीन तीन दिन की जमाअतें बना बना कर निकलें इसका इन्तिज़ार न करो कि हमें तो कुछ आता नहीं औरों को क्या कहें तुम निकलो और दावत देना शुरू करो। ये बोल

इतना ताक़तवर है कि आप उठते चले जाऐंगे और आप के ज़रिए और आते जाऐंगे।

एक औरत का अल्लाह के रास्ते में जाना और नक़द मदद का वाक़िआ

हयातुस्सहाबा में लिखा है एक औरत अल्लाह के रास्ते में गई उसकी दो बकरियाँ थीं दो बरश थे जब वापस आई तो एक बकरी गुम थी एक बरश गुम था धागा सीधा करने वाला, कहने लगी। يارب ضمنت لمن خرج في سبيلك अल्लाह तू ज़ामिन है जो तेरे रास्ते में निकले उसके माल का उसकी जान का भी ऐ अल्लाह मेरी बकरी मेरा बरश हुज़ूर स० भी सुन रहे थे हुज़ूर स० ने फ़रमाया अरी अल्लाह की बंदी अल्लाह के ज़िम्मे कोई नहीं कोई नहीं कि हमें जन्नत में डाले अल्लाह ने तो यह ऐहसान अपने ज़िम्मे ले लिया है हुज़ूर स० ने फ़रमाया अल्लाह की बंदी ऐसी दावे ना कर। उस अल्लाह की बंदी ने हुज़ूर स० की बातें भी ना सुनी बस यही कहती रही وعنزتي وصيصتي मेरी बकरी मेरा बरश भेज दे कि يخلفه في اهل ومال तुम मेरा काम करो मेरा पैग़ाम पहुंचाओ नमाज़ पर अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त का वादा नहीं है रोज़े पर हिफ़ाज़त का वादा नहीं है रोज़े पर तक़्वा का वादा नहीं है नमाज़ पर बुराई से बचने का वादा है हज पर ग़नी होने का वादा है सिर्फ़ तब्लीग़ के काम पर हिफ़ाज़त का वादा है।

अल्लाह तआला का पैग़ाम पहुंचाने पर हिफ़ाज़त का वादा

जब चंगैज़ ख़ाँ हमलाआवर हुआ था इस्लामी सलतनत पर 610 हिज्री में उसने हमला किया था तो उससे ज़्यादा नमाज़ी थे

उससे ज़्यादा मुत्तक़ी थे उससे ज़्यादा रोज़ेदार थे उससे ज़्यादा हाजी थे उससे ज़्यादा उल्मा थे। उससे ज़्यादा मदारिस थे गुलाम से लेकर ऊपर का सारा तब्क़ा आज से लाखों गुना ज़्यादा दीनदार था लेकिन ये आयत नहीं بلغ वाली आयत कोई नहीं थी जिस तरफ़ से उसका लशकर आया शहरों को राख का ढेर बनाता हुआ खोपड़ियों के मीनार छोड़ता हुआ और वहशत की अलामतें छोड़ता हुआ वह शख़्स पूरी इस्लामी सलतनत को चालिस बरस में ज़ैर व ज़बर करता हुआ चला गया और हलाकू ख़ाँ ने 656 हिज्री में बग़दाद की ईंट से ईंट बजा दी बीस लाख आबादी में से पंद्रह लाख ज़बह हो गए सिर्फ़ पाँच लाख की जान बची आज से ज़्यादा अहले हक़ अल्लाह वाले लेकिन एक काम नहीं था। بلغ ما انزل اليك من ربك नहीं हो रहा था। जब तब्लीग़ का काम नहीं होगा अल्लाह की हिफ़ाज़त का वादा नहीं तब्लीग़ का काम होगा अल्लाह की हिफ़ाज़त का निज़ाम हरकत में आयेगा कहा है कि मैं हिफ़ाज़त करूंगा चूंकि तब्लीग़ पर आदमी अल्लाह का नुमाइंदा बन जाता है।

फ़िरज़ौक़ रह॰ शाइर और हसन बस्री रह॰ का वाक़िआ

फ़िरजौक़ रह॰ एक शाइर गुज़रा है बीवी के जनाज़े में शरीक है। हसन बस्री रह॰ भी आए हुए हैं। हज़रत हसन बस्री रह॰ ने कहा फ़िरजौक़ लोग क्या कह रहे हैं। फ़िरजौक़ रह॰ ने कहा आज यूँ कह रहे हैं कि इस जनाज़े में हमारे शहर का सबसे बेहतरीन इंसान (हसन बस्री रह॰) आया हुआ है और मेरी तरफ़ इशारे कर रहे हैं और लोग यूँ कह रहे हैं कि इस ज़माने में हमारे शहर का

बदतरीन इंसान भी आया हुआ है तो हज़रत हसन बस्री रह॰ ने कहा तो फिर आज के दिन के लिए तूने क्या सामान तय्यार कर रखा है उन्होंने कहा हसन बस्री रह॰ मेरे पास कुछ भी नहीं इस्लाम में बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे पास कुछ नहीं। मेरे पास इस्लाम का बुढ़ापा है और मेरे पास कुछ नहीं है। जब इंतिक़ाल हुआ तो ख़्वाब में एक आदमी को मिला तो उसने पूछा कि तेरे साथ क्या सुलूक हुआ, कहने लगा अल्लाह पाक ने मुझे अपने सामने खड़ा किया इरशाद फ़रमाया तूने हसन बस्री रह॰ से क्या बात कही थी? याद है तुझे? मैंने कहा या अल्लाह याद है कहा मेरे सामने, दोहराओ तो मैं कहने लगा मेरे पास उस दिन के लिए अल्लाह के सामने कुछ नहीं है सिवाए इसके कि मैं इस्लाम में बूढ़ा हुआ हूँ तो अल्लाह ने फ़रमाया कि बस तुझे इसी पर माफ़ कर दिया।

मेरे भाइयो! इस उम्मत पर तो अल्लाह मेहरबान था, लेकिन हम कैसे बेवफ़ा निकले कि हमें दुकान ने अल्लाह से तोड़ दिया, मिट्टी की औरत ने अल्लाह से मोड़ दिया और इस औलाद ने अल्लाह से तोड़ दिया जो दुनिया ही में बेवफ़ा हो रही है। पहले की औलाद तो दुनिया में वफ़ादार होती थी, हमारी औलाद तो दुनिया ही में बेवफ़ा हो रही है और इस वज़ारत की ख़ातिर हम अल्लाह के हुक्म को तोड़ रहे हैं और चंद टकों की ख़ातिर हम अल्लाह की अम्र को तोड़ रहे हैं, मेरे भाइयो ऐसी करीम ज़ात कहाँ मिलेगी जो हमारे इंतिज़ार में बैठा हुआ है कि मैं अपने बंदे की तौबा का इंतिज़ार कर रहा हूँ। يا داؤد لو يعلم مدبرون على ما عندى من الماشواق - अल्लाहुअक्बर ऐ दाऊद जो मेरे से तअल्लुक़ तोड़ चुके हैं अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत

करता हूँ। تقطعت اوصالهم उनके टुक्ड़े टुक्ड़े हो जाएें मुहब्बत में अगर उन्हें पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मुहब्बत करता हूँ जब अपने नाफ़रमानों से मेरा ये हाल है तो ऐ दाऊद। ماذا تقول في المقبلين जो मेरी तरफ़ दौड़ रहे हैं उनसे मैं कितनी मुहब्बत करता हूँगा, तू सोच सकता है?

हाफ़िज़े कुर्आन और उसके वालिद का ऐज़ाज

मुतहर्रिफ़ इब्ने शख़ीर सूई बहुत बड़े बुर्ज़ुग हैं। ख़्वाब देखा कि क़ब्रिस्तान फटा और वहाँ से मुर्दे निकले और कुछ चुन्ने लगे। एक आदमी दरख़्त के साथ टैक लगा के बैठ गया ये उसके पास गए कहा भाई ये क्या माजरा है कहा कि हम मुसलमान जो पहले मर चले हैं ये वह हैं और जो चुन रहे हैं ये सवाब है जो पीछे लोग इनको पहुंचा रहे हैं तो कहा तू क्यों नहीं चुनता कहा मेरा हिसाब थोक का है। मुझे मेरा बेटा बख़्श देता है। मुझे ये चुन्ने की ज़रूरत नहीं पड़ती कहा क्या करता है तेरा बेटा कहा मेरा बेटा मिठाई की दुकान करता है फ़लाँ बाज़ार में सुबह आँख खुली तो वहाँ गए देखा तो एक नौजवान बड़ी ख़ूबसूरत दाढ़ी बड़ा नूरानी चेहरा अपना सौदा भी बेच रहा है और साथ होंठ भी हिला रहा है उसने कहा ये क्या कर रहे हो। कहा जी कुर्आन पढ़ रहा हूँ। किस लिए जी मेरे बाप ने मेरे ऊपर एहसान किया और मुझे कुर्आन पढ़ा दिया और मेरे लिऐ ये रिज़्क़ का इंतिज़ाम किया और मेरे लिए सारे पापड़ बेले। मैं चाहता हूँ कि उसके एहसान का बदला दूँ मैं रोज़ाना एक कुर्आन पढ़कर उसको बख़्श देता हूँ। कोई साल गुज़रा दोबारा ख़्वाब देखा वही क़ब्रिस्तान वही मुर्दे वह आदमी जो टैक लगा के बैठा था नां उसको देखा वह भी चुनता फिर रहा है तो एक दम आँख खुल गई तो सुबह ही सुबह जब बाज़ार खुला

तो उस बाज़ार में गया। भाई यहाँ एक नौजवान हलवाई था। मिठाई बेचने वाला। कहा जी उसका इंतिक़ाल हो गया वह पिछले वाला सिलसिला बंद हो गया।

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० की सच्चाई से डाकुओं ने तौबा कर ली

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी क़ाफ़िले में इल्म हासिल करने के लिए जा रहे थे। चौदह साल की उम्र थी। रास्ते में डाका पड़ गया लूट लिया उन दिनों ये बच्चे थे किसी को ख़्याल नहीं आया कि उनके पास कुछ होगा। एक डाकू ने ऐसे ही सरे राह पूछा बेटा तेरे पास कुछ है। कहा हाँ है। कहा चालिस दीनार हैं। चालिस दीनार का मतलब था कि वह एक साल का राशन है तो बहुत बड़ी दौलत थी चालिस दीनार। तो वह हैरान हो गया और कहने लगा कहाँ रखे हैं कहा ये मेरे कपड़ों के अंदर सिले हुए हैं। अंदर की आसतीन में उसने कहा बच्चे अगर तू मुझे ना बताता तो मुझे कभी ख़बर ना होती कि तेरे पास दीनार हैं तो तूने क्यों बता दिया कहा मुझे मेरी माँ ने कहा था कि बेटा सच बोलना चाहे जान चली जाए। अब ये माँ का सबक़ है नां और जब माँ को ही न पता हो कि सच बोलने में निजात है तो बच्चे को क्या बताएगी तो वह डाकू उसको पकड़ के डाकुओं के सरदार के पास ले गया कि सरदार इस बच्चे की बात सुनो। तो सारी कहानी सुनाई तो सरदार ने कहा बेटा यूँ तू ना बताता तो हमें तो कोई पता न चलता। कहा मेरी माँ ने मुझे कहा था झूट न बोलना सच बोलना चाहे जान चली जाए इस पर जो वह रोया है डाकुओं का सरदार उसकी दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई। कि ऐ अल्लाह ये मासूम बच्चा अपनी माँ का इतना फ़रमांबरदार और मैं पूरा मर्द जवान

होकर तेरा नाफ़रमान मुझे माफ़ कर दे। सारे डाकुओं ने तौबा की और इसका ज़रिआ वह माँ बनी जो गीलान में बैठी हुई थी। जिसको पता भी नहीं है कि उसका बच्चा कहाँ से कहाँ तक पहुंच गया है।

हज़रत जाफ़र रज़ि॰, हज़रत ज़ैद रज़ि॰, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ शहीद हो गये

हज़रत जाफ़र रज़िअल्लाहु अन्हु बिन अबी तालिब को जब उर्दुन की तरफ़ भेजा वह वहां शहीद हो गए चचाज़ाद भाई थे तीस साल की उम्र उन्नीस साल बीवी की उम्र और जब उनकी शहादत की इत्तिला मिली तो अब्दुल्लाह, औन और मुहम्मद तीन बेटे थे छोटे छोटे हज़रत जाफ़र रज़ि॰के। तो आप को तो मस्जिद में ही बैठे बैठे अल्लाह ने दिखा दिया था कि जाफ़र रज़ि॰ शहीद हो गया। ज़ैद रज़ि॰ शहीद हो गया। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ शहीद हो गया। तो आप की आँखों से आंसू जारी हो गए। आप वहाँ से उठे और हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के घर आए तो हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ि॰ उनकी बीवी ने आटा गूंध के रखा हुआ था बच्चों के लिए रोटी पकाने को तो आप स॰ तशरीफ़ लाए और कहा कि अब्दुल्लाह औन और मुहम्मद को मेरे पास लाओ तो उनको करीब लाए तो आप स॰ उनको चूम रहे थे और चुपके चुपके आँसू टपक रहे थे। तो हज़रत अस्मा बिन्त उमैस रज़ि॰ कहने लगीं कि मुझे खटका हुआ कि कुछ हो गया है। लेकिन हिम्मत न हुई पूछने की आख़िरकार मैंने पूछ ही लिया। या रसूलुल्लाह स॰ जाफ़र रज़ि॰ को क्या हुआ। तो आप स॰ ने फ़रमाया احتسبي عند الله। तू अल्लाह की बारगाह में अब अजर की उम्मीद रख। अल्लाह ने उसको अपनी बारगाह में कुबूल कर लिया

है तो बेहोश होकर गिर गई। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ फ़रमाते हैं। हज़रत जाफ़र रज़ि॰ के बेटे कि जब कभी सफ़र आप स॰ सफ़र से वापस आते तो आप हसन रज़ि॰ और हुसैन रज़ि॰ को बाद में प्यार करते थे और पहले मुझे प्यार करते थे। पहले मुझे गोद में बिठाते थे फिर हसन रज़ि॰ और हुसैन रज़ि॰ को प्यार करते थे। तो जाफ़र रज़ि॰ का घर उजड़ा। और उर्दुन में इस्लाम फैल गया।

हज़रत जाफ़र रज़ि॰ की क़ब्र पर सारी जमाअत रो पड़ी

अभी आप के बंगला देश आने से पहले हमारी जमाअत उर्दुन गई थी। उर्दुन से हम यहाँ बंगला देश आ रहे हैं तो हमें वहाँ लोग सहाबा रज़ि॰ की क़ब्रों पर ले गए। मआज़ इब्ने जबल पहाड़ की चोटी पर अकेले हैं। अब्दुर्रहमान इब्ने मआज़ रज़ि॰ और हज़रत मआज़ रज़ि॰ दोनों बाप बेटा शहीद हुए। दोनों की क़ब्रें हैं। इब्ने अज़वर की क़ब्र एक टीले पर है। अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि॰ की एक रास्ते के किनारे पर क़ब्र थी। आगे पहाड़ों में गए, मूता एक मक़ाम है, जहाँ पर जंगे मूता लड़ी गई। यहाँ पर तीन बड़े सहाबा ज़ैद, जाफ़र अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ की क़ब्रें मौजूद हैं। जब हम हज़रत जाफ़र रज़ि॰ की क़ब्र पर गए। यक़ीन मानें हमारी सारी जमाअत रो रही थी। हम अपने आँसुओं को रोकते थे।

हज़रत जाफ़र का सारा वाक़िआ आँखों के सामने घूम गया। खुद नौजवान, जवान बीवी थी। छोटे छोटे चार बच्चे थे। जब अल्लाह के रास्ते में निकले और झंडा उठाया तो शैतान सामने आया और कहा जाफ़र! तेरे चार छोटे बच्चे हैं, तेरी जवान बीवी, क्या होगा उनका? हज़रत जाफ़र ने फ़रमाया अब तो अल्लाह के नाम पर जान देने का वक़्त आया है। फिर ये शेअर पढ़ाः

तर्जुमा: "ऐ जन्नत! अब तो मुझे तेरा शौक़ है"

आगे बढ़े एक हाथ कटा, दूसरा कटा फिर और फिर दो टुकड़े हो कर ज़मीन पर गिर गए। आप ने देख लिया कि हज़रत जाफ़र शहीद हो गए हैं। हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ ले गए। हज़रत अस्मा के घर। अस्मा उनकी बीवी का नाम था। कहने लगीं, मैं बच्चों को नहला चुकी थी। कपड़े पहना चुकी थी और ख़ुद आटा गूंध रही थी कि हुज़ूर स॰ तशरीफ़ लाए। मैं घबरा कर खड़ी हुई। मैंने पूछा "या रसूलुल्लाह! क्या हुआ मैं तो......फ़रमाया मैं तेरे लिए कोई अच्छी ख़बर नहीं लाया और आप के आँसू निकल पड़े। हज़रत अस्मा ने सुना और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गईं। छोटे छोटे बच्चों को छोड़ कर, जवान बीवी को छोड़कर, पहाड़ों पर सोए हुए हैं। कमाल है आज से चौदह सौ साल पहले वह क़ब्र बनी जबकि वहाँ किसी इंसान का गुज़र ना होता था।

हज़रत ज़ैद की क़ब्र पर गए तो उनकी क़ब्र पर एक हदीस लिखी थी। मैंने साथियों को उसका तर्जुमा करके बतलाया। हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब हज़रत ज़ैद रज़ि॰ की शहादत की ख़बर हुई, दूसरों को बताया तो हज़रत ज़ैद रज़ि॰ की छोटी बच्ची आप की गोद में आकर रोने लगी। आप भी रोने लगे। सहाबी हज़रत सअद रज़ि॰ ने कहा या रसूलुल्लाह स॰! आप किसके लिए रो रहे हैं? आप स॰ ने फ़रमाया ऐ सअद! ये हबीब का शौक़ है हबीब के लिए। ज़ैद को बेटा बनाया हुआ था। सारी जमाअत वहाँ ऐसी रो रही थी कि ऊपर पहाड़ पर क़ब्र है। दूर दूर तक आबादियाँ नहीं थीं। वीराने में क़ब्रें बनीं, सन्नाटे में क़ब्रें बनीं और फिर अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ की क़ब्र पर गए।

मरवान रह॰ से पूछा कि हिजाज़ का इमाम कौन है?

इमाम शहाबी रह॰ से मरवान ने पूछा कि आज कल हिजाज़ का इमाम कौन है? क्या सिफ़तें बयान की गई हैं? काले, नाक के चपटे, अंधे लंगड़े, लूले ऐसा माज़ूर आदमी भी अल्लाह की बारगाह में इतना ऊंचा मक़ाम हासिल कर सकता है जो काला भी हो, चपटा भी हो, अंधा भी हो, लूला भी हो, लेकिन पूरे अरब का इमाम था। सलमान बिन अब्दुल मालिक जैसा जाबिर बादशाह उनके सामने दो ज़ानो बैठता था। फिर उसका बेटा अय्यूब वह उसकी ज़िंदगी में मर गया। फिर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ि॰ को अपने बाद हुक्मरान बनाया था तो किसी ने कहा जी अय्यूब आया बैठा है, फ़रमाने लगे मुझे पता है आया हुआ है लेकिन उसे सुनाना चाहता हूँ। उसे भी पता चल जाए। उसके बाप को भी पता चल जाए। अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे हैं जिन्हें उनकी परवाह है ना उनकी हुकूमत की परवाह है। ऐसा माज़ूर आदमी भी मेरे भाइयो! पूरे दीन को लेकर चल सकता है। इसलिए कि अल्लाह तबारक व तआला ने दीन को वजूद में लाने के लिए न माल को शर्त लगाया है न हसब व नसब की शर्त लगाई। न दौलत की शर्त लगाई न इक़्तिदार की शर्त लगाई। कि अल्लाह पाक ने हुज़ूर स॰ की ज़ाते गिरामी को एक ज़िंदगी का तरीक़ा अता फ़रमाया कि भाई इस तरीक़े को मर्द भी अपनाए। औरत भी अपनाए, सारे कामयाब हों। जो भी अपनाए, काला हो या गौरा, कोई है जो अल्लाह ने हबीब का तरीक़ए ज़िंदगी दिया उसे अपनाएगा तो वह कामयाब होगा। और वह बड़ा इंसान होगा। अल्लाह का शुक्र है कि माल की शर्त नहीं।

शोहदा जन्नत के फल खा रहे हैं

इनकी क़ब्र पर भी अजीब नूर था। आदमी अपने आँसू रोक नहीं सकता था। अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ के बारे में रिवायत है कि जब आगे बढ़े तो बीवी बच्चे याद आ गए तो एक दम अपने आप को झटका......"ऐ नफ़्स मुझे क़सम है अपने रब की, मैं जान उस पर कुर्बान करूंगा तू चाहे या ना चाहे, तू माने या ना माने, तुझे अर्सा हुआ बीवी बच्चों में रहते हुए। जंग का शौक़ कर। लोग इस्लाम को मिटाने के दर पे हैं तू बीवी बच्चों को रखने के दर पे है। ऐसे न क़त्ल हुआ तो मौत तो बहरहाल आकर रहेगी। इसलिए वह काम कर जो तेरे साथियों ने किया"। आपने आगे बढ़ कर छलाँग लगाई और उनके जिस्म के टुक्ड़े टुक्ड़े हो गए वह मक़ाम आज भी मौजूद है। जहाँ तीनों शहीद हुए और फिर आप स॰ ने फ़रमाया "हाँ हाँ मैं देखता हूँ कि तीनों जन्नत की नहरों में ग़ोते खाते फिरते हैं। जन्नत के फल खा रहे हैं।

काला है, ग़रीब है, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भेजा हुआ है क़बूल है

हज़रत सअद रज़ि॰ सहाबी हैं। हुजूर स॰ के पास आए, रंग के काले थे, फ़रमाया रसूलुल्लाह शादी करना चाहता हूँ। आप स॰ ने फ़रमाया उमर इब्ने वहब से कहो। उमर इब्ने वहब सक़फ़ी ख़ूबसूरत भी थे माल भी था। ये बेचारे काले भी थे और ग़रीब भी थे। जब रिश्ता लेकर पहुंचे तो बाप ने बेटी की मुहब्बत में सोचा कि मेरी बेटी इस ग़रीब, बदसूरत से कैसे गुज़ारा करेगी। उन्होंने इंकार कर दिया। बेटी ने पीछे से सुन लिया कि मेरे बाप ने नबी स॰ के भेजे हुए को इंकार कर दिया। अब्बाजान! आप किसकी

बात को ठुकरा रहे हैं, नबी स॰ की बात को ठुक्रा रहे हैं? आप फ़ौरन जाकर हाँ कर दीजिए। क़ब्ल इसके अल्लाह का अज़ाब हम पर आए। नबी स॰ की बात को ठुकराना हलाकत है। आप रिश्ता कुबूल कर लें, जैसा है काला है, फ़कीर है मुझे कुबूल है, नबी का भेजा हुआ है। नबी स॰ की बात पर सारे जज़्बात कुर्बान किये जा सकते हैं। ये उनके अंदर के जज़्बात थे। यही उनकी अंदर की दुनिया भी जो अल्लाह और उसके नबी स॰ की मुहब्बत में भरी हुई थी।

नशा और ईमान दोनों एक पेट में जमा नहीं हो सकते

उरवा बिन जुबैर के पाँव में फोड़ा निकला। वह बढ़ने लगा। वह बढ़ते बढ़ते घटने तक आ गया। तबीब ने कहा काटना पड़ेगा वर्ना सारा पाँव बेकार हो जाएगा। तबीब ने कहा तू नशे वाली चीज़ पी ले मैं कांटता हूँ। उन्होंने कहा नहीं नहीं नशा और ईमान दोनों एक पेट में नहीं आ सकते। कहा मैं नमाज़ पढ़ता हूँ तू काट ले। तबीब ने जराह का काम शुरू किया और ज़ख़्म की मरहम पट्टी की लेकिन उनकी नमाज़ में एक राई के बराबर फ़र्क़ नहीं आया। सलाम फेरने के बाद कहा काट लिया? कहा जी काट लिया। फ़रमाया मुझे तो ख़बर ही नहीं हुई। फ़रमाया ऐ अल्लाह गवाह रहना कि मेरा पाँव तेरी नाफ़रमानी में कभी नहीं चला।

नमाज़ कुव्वत पैदा करके पूरी ज़िंदगी को बदल देगी। अल्लाह तआला ने हमें ऐसी ताक़तवर चीज़ अता फ़रमाई है कि जिसकी परवाज़ अर्श तक चली जाती है। जूंही आदमी कहता है कि अल्लाहुअक्बर, तो उसके और अर्श तक दरवाज़े खुल जाते हैं।

अल्लाह मुतवज्जे हो जाते हैं, फ़रिशतों के क़लम चलने लगते हैं। जन्नत की हूरें, खिड़कियाँ खोल कर जन्नती नमाज़ी को देखना शुरू कर देती हैं। और अल्लाह फ़रमाता है मेरा बंदा जब तू माथा ज़मीन पर रखता है तो तेरा सर मेरे क़दमों में होता है सबसे ज़्यादा क़रीब आदमी अल्लाह के उस वक़्त होता है जब सज्दे में पड़ा होता है। इबादात में सबसे बड़ी इबादत नमाज़ है जो सारे निज़ाम को दुरुस्त कर देगी। फिर दुनिया भी इबादत बनेगी। हर चीज़ इबादत बनेगी जैसे आपने फ़रमाया जिसने दुनिया कमाई हलाल रास्ते से, अपनी औलाद पर ख़र्च करने के लिये, पड़ोसियों पर ख़र्च करने के लिये, सवाल से बचने के लिये तो क़यामत के दिन अल्लाह से ऐसे मिलेगा कि उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह चमकेगा।

अद्ल व इंसाफ़ का तक़ाज़ा, बेटा बाप के हक़ में क़ुबूल नहीं

हज़रत अली रज़ि॰ ने एक यहूदी को देखा वह ज़िरह बेच रहा था। आप रज़ि॰ ने फ़रमाया ये ज़िरह मेरी है। अमीरुल मोमिनीन! उसने कहा ये मेरी है। आप रज़ि॰ ने कहा ये मेरी है। कहा आप के पास कोई गवाह हो तो मुक़दमा अदालत में क़ाज़ी के पास लेकर जा रहे हैं। अमीरुल मोमिनीन ये ज़िरह मेरी है। यहूदी ने कहा मेरी है। क़ाज़ी ने कहा कोई गवाह है? कहा है वह हैं हसन और क़मीर। हसन बेटे और क़मीर गुलाम तो उन्होंने कहा क़मीर की गवाही तो क़ुबूल है हसन की क़ुबूल नहीं। इस्लाम का निज़ामे अद्ल बाप के हक़ में बेटे की गवाही रद करता है हसन रज़ि॰ हुसैन रज़ि॰ के बारे में हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जन्नत के नौजवानों के सरदार होने का कहा वह तो ठीक है।

मगर आप ही से है कि हुज़ूरे अक्रम स० ने फ़रमाया बेटा बाप के हक़ में कुबूल नहीं। बाप के ख़िलाफ़ कुबूल है। उसने अद्ल की बुनियादें क़ायम कीं। हसन की कुबूल नहीं लिहाज़ा एक गवाही से तो काम नहीं चल सकता कहा अच्छा भाई ले जा। ये ज़िरह तेरी है तो मैं क़सम उठाता हूँ कि ये तालीम इस्लाम के अलावा किसी की नहीं हो सकती। अमीरुल मोमिनीन के ख़िलाफ़ उसका नौकर फ़ैसला करे यहूदी ने ये अद्ल देखा तो वहीं कल्मा पढ़ा और हज़रत अली रज़ि० के दिन रात का ख़ादिम बना और शहीद हुआ।

अल्लाह अर्श पे च्यूंटी फ़र्श पे

एक काला पत्थर है पहाड़ भी काला है रात भी काली है फिर ऊपर जंगल छा चुका है पत्ते पड़ हुए हैं दरख़्त में लकड़ियाँ हैं पराली पड़ी है। नीचे एक काली च्यूंटी जा रही है अल्लाह अर्श पर और च्यूंटी फ़र्श पर दरमियान में इतने ज़्यादा पर्दे अल्लाह जल्ला शानहु ने ये नहीं कहा कि मैं इस च्यूंटी को देख रहा हूँ बल्कि फ़रमाया इस च्यूंटी के चलने से जो एक लकीर बन रही है उसके हक़ीर क़दमों से मैं वह लकीर देख रहा हूँ। دبيب النملة السوداء कभी आप च्यूंटी का पाँव उठा कर देखो उसका तो वजूद ही नज़र नहीं आता तो वह लकीर क्या बनाएगी वह तो नरम मिट्टी पर चले तो मुशकिल से लकीर बने वह तो पहाड़ पर और पत्थर पर चल रही है। लकीर बनती है मशीन के ज़रिए देखी जा सकती है अल्लाह जल्ला शानहु अर्श पर होकर कहता है कि मैं उसे देख रहा हूँ रात का अंधेरा फिर पहाड़ का अंधेरा पराली और जंगल का अंधेरा च्यूंटी का अंधेरा और उसकी हक़ीर काली टांगों का भी अंधेरा अल्लाह फ़रमाते हैं मुझ से ये लकीर भी छुपी हुई नहीं है। وَاَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ बसीर देखने वाला और सुनने वाला कैसा है।

اَوِاجْهَرُوْا بِهٖ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (सूरह मुल्क आयत13) तुम आहिस्ता बोलो या ज़ोर से बोलो तुम्हारे अंदर छुपे हुए भेद तक को जानता है। يَعْلَمُ السِّرَّ وَاَخْفٰى (सूरह ताहा आयत7)

छुप कर बोलो या दिल में बोलो कान ने भी नहीं सुना अल्लाह फ़रमाता है कि मैं उसे भी सुन लेता हूँ।

दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में एक सहाबी रज़ि॰ की शिकायत

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक सहाबी रज़ि॰ आए और कहने लगे या रसूलुल्लाह स॰! मेरा बाप मुझ से पूछता तक नहीं और मेरी चीज़ या माल ख़र्च कर लेता है और शरअन तो ये है कि बाप को पूछना चाहिए अगर जाएजाद बेटे की है और मेहनत और कमाई बेटे की है।

आप स॰ ने फ़रमाया! अच्छा बुलाओ उसके बाप को पता चला की मेरे बेटे ने मेरी शिकायत की है तो उन्होंने दुख और रंज के कुछ अशआर दिल ही दिल में पढ़े ज़बान से अदा नहीं किए, जब हुज़ूर स॰ के पास पहुंचे तो उधर से जिब्रईले अमीन अलै॰ आ गए। या रसूलुल्लाह स॰! अल्लाह फ़रमा रहे हैं कि उससे कहो पहले वह शेअर सुनाये जो तुम्हारी ज़बान पर नहीं आए बल्कि तुम्हारे दिल ने पढ़े हैं और अल्लाह ने अर्श पर होते हुए भी उनको सुन लिया है।

तो भाइयो! जब आप किसी को गाली देते हैं तो क्या अल्लाह नहीं सुनता? किसी को दुआ या बद्दुआ देते हैं तो अल्लाह नहीं सनता? जब कोई गाना गाता है या क़ुर्आन पढ़ता है तो अल्लाह नहीं सुनता? जब कोई ग़ीबत करता है तो अल्लाह नहीं सुनता? किसी की माँ बहन को तार तार कर देता है तो क्या अल्लाह नहीं

सुनता? ज़रूर सुनता है। तो सहाबी रज़ि॰ कहने लगे या रसूलुल्लाह स॰! क़ुर्बान जाऊं आप के रब पर वह कैसा रब मेरे अंदर तो एक ख़्याल आया था अल्लाह ने वह भी सुन लिया फ़रमायाः

अच्छा पहले वह सुनाओ फिर तुम्हारे मुक़द्दर का फ़ैसला करेंगे। कहने लगे मैंने ख़्याल किया था दुख और दर्द सेः ये अशआर अरबी में हैं और इतने दर्दनाक हैं कि इनका तर्जुमा नामुम्किन है। जब शेअर ख़त्म हुए तो सरवरे दो जहाँ स॰ की आँखों में आँसू थे।

इन अशआर का उर्दू में तर्जुमा कुछ यूँ है कि "ऐ मेरे बच्चे मैंने तेरे लिए अपना सब कुछ लगा दिया, जब तू अभी गोद में था तो मैं उस वक़्त भी तेरे लिए परेशान रहा और तू सोता था और हम तेरे लिए जागते थे, तू रोता था और हम तेरे लिए रोते थे और सारा दिन मैं तेरे लिए ख़ाक छानता था और रोज़ी कमाता था, अपनी जवानी को भी गर्मी में था, खजूँ के थपेड़ों से उसे पटवाता था, मगर तेरे लिए गरम रोटी का मैंने हर हाल में इंतिज़ाम किया, कि मेरे बच्चे को रोटी मिले, चाहे मुझे मिले या ना मिले। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट नज़र आए, चाहे मेरे आँसुओं के समन्दर इकट्ठे हो जाएं, जब कभी तू बीमार हो जाता था तो हम तेरे लिए तड़प जाते थे, तेरे पहलू बदलने पर हम हज़ारों वसवसों में मुब्तला हो जाते थे, तेरे रोने पर हम बेक़रार हो जाते थे। तेरी बीमारी हमारी कमर तोड़ देती थी और हमें मार देती थी, हमें यूँ लगता था तू बीमार नहीं बल्कि मैं बीमार हूँ, तुझे दर्द नहीं उठता बल्कि मुझे दर्द उठता है, तेरी हाय पर हमारी हाय निकलती थी और हर पल ये ख़तरा होता था कि कहीं मेरे बच्चे की जान न चली जाए। इस

तरह मैंने तुझे परवान चढ़ाया और खुद मैं बुढ़ापे का शिकार होता रहा तुझ में जवानी रंग भरती चली गई और मुझ से बुढ़ापा जवानी छीनता चला गया, फिर जब मैं इस सतेह पर आया कि अब मुझे तेरे सहारे की ज़रूरत पड़ी है और तू इस सतेह पर आ गया है कि तू बेसहारे के चल सके, तो मुझे तमन्ना हुई कि जैसे मैंने इसे पाला है ये भी मुझे पालेगा, जैसे मैंने इसके नाज़ बर्दाश्त किए ये भी मेरे नाज़ बर्दाश्त करेगा, लेकिन तेरा लहजा बदल गया, तेरी आँख बदल गई, तेरे तेवर बदल गए। तू मुझे यूँ समझने लगा कि जैसे मैं तेरे घर का नौकर हूँ, तू मुझसे यूँ बोलने लगा कि जैसे मैं तेरा ज़रख़रीद गुलाम हूँ। तू ये भी भूल गया कि मैंने तुझे किस तरह पाला, तेरे लिए कैसे जागा तेरे लिए कैसे रोया और तड़पा और मचला। आज तू मेरे साथ वह कर रहा है जो आक़ा अपने नौकर के साथ भी नहीं करता, अगर तू मुझे बेटा बन कर नहीं दिखा सका और मुझे बाप का मक़ाम नहीं दे सका, तो कम अज़कम पड़ोसी का मक़ाम तो दे दे, कि पड़ोसी भी पड़ोसी का हाल पूछ लेता है और तू बुख़्ल की बातें करता है।

हुज़ूर स॰ की आँखों में आँसू मचल रहे थे, आप स॰ ने फ़रमाया इस नौजवान से उठ जा मेरी मजलिस से, तू भी और तेरा माल भी तेरे बाप का है।

मुसलमानो! मुहम्मदी वर्दी में आ जाओ

पाकिस्तानी जरनैल बनने के लिए सत्ताइस साल चाहिऐं। फूल लग गए सलयूट शुरू हो गए अब ये जरनैल अगले दिन अपने दफ़्तर में हिन्दुस्तानी वर्दी पहन कर बैठ जाए तो बताओ कुछ होगा कि नहीं होगा। उसका अपना सिपाही उस पर कला शंकूफ़ तान लेगा। सारा जी॰ एच॰ क्यू॰ हरकत में आ जाएगा गिरिफ़्तारी के

आर्डर हथकड़ी, बेड़ी कोर्ट मार्शल। वह कहेगा मैंने क्या जुर्म किया है तो कहा जाएगा देखो तो सही तूने क्या किया है। जरनैल कहेगा कि मेरा ज़ाहिर मत देखो बल्कि मेरा बातिन देखो मैं ये बात मिसाल से समझाने लगा हूँ:

उसने वफ़ा नहीं बदली। सिर्फ़ दुश्मन का रूप अपनाया है तो वफ़ाऐं दाग़दार हो गईं। पाकिस्तानी फ़ौज को तो ग़ैरत आ जाए, क्या अल्लाह को ग़ैरत नहीं आती जब अपने महबूब स॰ की ज़िंदगी के ख़िलाफ़ ज़िंदगियाँ देखता है। अच्छा कपड़े क्यों बदलते हो। जी गंदे हो गए। उनका बातिन तो ठीक था पाक था। अपने लिए तो साफ़ कपड़े अच्छे लगते हैं और अल्लाह को गंदा रूप दिखाते हो ये कहाँ की गुलामी है। ये जरनैल की वर्दी की मिसाल पता है मैंने क्यों दी कि आज हम मुसलमान हो कर उनके रूप में हैं जिन्होंने हमें बरबाद किया, हमें काट कर रख दिया, उन मासूमों का क्या कुसूर है जिनके गलों में टाइयाँ लगी हुई हैं, ये दुश्मन का रूप है, जो आज भी हमारी इज़्ज़तों और जानों के दुश्मन हैं और हमारे ख़ून के प्यासे हैं।

1423 साल क़ब्ल देखो तो सही मदीने में एक आदमी तड़प रहा है ज़रा ताइफ़ के पहाड़ों से जाकर पूछो कि यहाँ क्यों ख़ून बहा था उसी नबी का जिसके ख़ून का एक क़त्रा ज़मीन व आसमान से ज़्यादा क़ीमती है। लाओ कोई ढूंढ कर जिसने हम पर उस नबी से बढ़कर एहसान किये हों फिर उस नबी के तरीक़े को छोड़ कर दूसरे के तरीक़े को अपना लो। ये कितनी कम अक़्ली का सौदा है।

हज़रत हुसैन रज़ि॰ की शहादत की ख़बर

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सल्मा रज़ि॰ से हुज़ूर स॰ ने कहा मैं

मसरूफ़ हूँ। मेरे पास एक फ़रिशता आ रहा है तुम किसी को अंदर न आने देना। थोड़ी देर बाद हज़रत इमाम हुसैन रज़ि॰ आ गए उम्मुल मोमिनीन रज़ि॰ ने उन्हें रोका लेकिन वह फुर्तीले थे हाथ छुड़ा कर चले गए थोड़ी देर के बाद अंदर से बाआवाज़ बुलंद रोने की आवाज़ आई तो हज़रत सल्मा रज़ि॰ बर्दाश्त न कर सकीं भाग कर अंदर गईं। तो देखा कि आप स॰ ने बेटे को ज़ोर से सीने से लगाया हुआ है और रो रहे हैं पूछा या रसूलुल्लाह स॰ ख़ैर तो है। फ़रमाया ये फ़रिशता आया था मुझे अभी बता कर गया है कि मेरे इस बेटे को मेरी उम्मत शहीद कर देगी तो अगर आप दुआ कर देते तो ये काम रुक सकता था लेकिन खेती का मालिक ही खेती को पानी न दे तो खेती आबाद कैसे हो।

मालिक बिन दीनार रह॰ और एक बाँदी का वाकिआ

मालिक बिन दीनार रह॰ जा रहे थे। बाज़ार में एक बाँदी देखी बड़ी ख़ूबसूरत बड़ी पुरकशिश, आगे उसके ख़ादिम, कहा बेटी! क्या बात है? कहा मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूँ। पहले बाँदियों की ख़रीद व फ़रोख़्त होती थी तो जो रईस ज़ादे अय्याश होते थे। एक एक लाख दिरहम की ख़रीदा करते थे। कहा बेटी मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूँ। वह हंसने लगी क्या मेरी जैसी को तू फ़कीर ख़रीदेगा? कहा हाँ मैं ख़रीदना चाहता हूँ। तो उसने ख़ादिम से कहा इसको पकड़ लो, मैं इसको अपने आक़ा को दिखाऊंगी चलो तमाशा ही रहेगा तो उसको पकड़ कर दरबार में ले आए।

तो उसका सरदार तख़्त पर बैठा था कि आक़ा आज बड़ा लतीफ़ा हुआ। कहा क्या। कहा ये बड़े मियाँ कहते हैं मैं तुम्हें

ख़रीदना चाहता हूँ। सारी महफ़िल हंसने लगी। तो उसने कहा बड़े मियाँ! क्या आप वाक़ई ख़रीदना चाहते हैं? कहा हाँ मैं ख़रीदना चाहता हूँ। कहा कितने पैसे दोगे? कहने लगे वैसे तो ये बहुत ही सस्ती है। मैं ज़्यादा से ज़्यादा खुजूर की दो गुठलियाँ दे सकता हूँ। सिर्फ़ गुठलियाँ नहीं बल्कि वह गुठलियाँ जिन्हें चूस कर फैंक दिया हो, जिन पर ज़रा भी खुजूर ना लगी हो, वह सारे हंसने लगे सरदार भी हंसने लगा। बड़े मियाँ ये आप क्या कह रहे हैं? कहा बात ये है कि इसमें बहुत सारी ख़ामियाँ हैं इसकी वजह से कह रहा हूँ। कहा क्या हैं? कहा। खुशबू ना लगाए तो इसके अपने पसीने से बदबू आए रोज़ाना दाँत साफ़ न करे तो मुंह की बदबू से क़रीब बैठना मुशकिल हो जाये, रोज़ाना कंघी न करे तो सर में जुऐं पड़ जाऐं और फिर तेरे सर में भी पड़ जाऐं। चार साल और गुज़र गये तो ये बूढ़ी हो जाएगी। पैशाब पाख़ाना इसमें, ग़म इसमें, दुख इसमें, लड़ाई इसमें और गुस्सा इसमें।

अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए तुझसे मुहब्बत करती है। इसकी मुहब्बत सच्ची नहीं ग़र्ज़ की मुहब्बत है एक लौंडी मेरे पास भी है, ख़रीदोगे? कहा वह कौनसी है? कहा वह भी सुन लो। वह मिट्टी से नहीं बनी बल्कि मुश्क अंबर ज़ाफ़रान और काफ़ूर से बनी है, उसके चेहरे का नूर अल्लाह के नूर में से है, ये हदीसे पाक मफ़हूम है। उसकी कलाई, सात दुनिया के अंधेरों में आ जाए तो सातों ज़मीनों के अंधेरे रौशनियों में बदल जाऐं। और उसकी कलाई सूरज को दिखाई जाए तो सूरज उसके सामने नज़र नहीं आएगा, गुरूब हो जाएगा। समन्दर में थूक डाले समन्दर मीठा हो जाएगा, मुर्दे से बात करे तो मुर्दे में रूह पैदा हो जाएगी, ज़िंदा लोग एक नज़र देख लें कलेजे फट जाऐं। अपने दुपट्टे को हवा में

लहरा दे तो सारे जहाँ में ख़ुशबू फैल जाएगी, सात समन्दर में थूक डाल दे मीठे हो जाऐं, ज़ाफ़रान के और मुश्क के बाग़ात में परवान चढ़ी है। तस्नीम के चश्मे का पानी पिया और अल्लाह की जन्नत में परवान चढ़ी है। अपनी मुहब्बत में सच्ची है। बेवफ़ा हरगिज़ नहीं, वफ़ा में पक्की है, न हैज़ है, न नफ़ास, न पैशाब है, न पाख़ाना, न ग़ुस्सा है, न लड़ाई, वह हमेशा राज़ी, वह हमेशा जवान, वह हमेशा साथ रहती है, उस पर मौत नहीं आती।

अब बता मेरे वाली ज़्यादा बेहतर है कि तेरे वाली ज़्यादा बेहतर है? कहने लगा जो आप ने बयान की वह बहुत बेहतर है। कहा उसकी क़ीमत बताऊँ, कहा बताओ? कहा दो गुठलियों से भी ज़्यादा सस्ती है। कहा उसकी क्या क़ीमत है? कहा उसकी क़ीमत ये है, अपने मौला को राज़ी करने में लग जा, मख़्लूक़ को राज़ी करना छोड़ दे, ख़ालिक़ को राज़ी करना अपना मक़्सद बना ले, जब आधी रात गुज़र जाए जब सारे सो रहे हों तो उठ के दो रकअत नमाज़ अंधेरे में पढ़ लिया कर, ये उसकी क़ीमत है, ये उसकी क़द्र है, जब ख़ुद खाना खाए तो ग़रीब को भी याद कर लिया कर, कि कोई ग़रीब भी है कि जिसको पहुंचाऊं, ये हो जाए तो ये तेरी हो गई। कहने लगा अपनी बाँदी से तूने सुन लिया जो उसने कहा? कहा सुन लिया। कहा तू अल्लाह के नाम पर आज़ाद, सारे नौकर आज़ाद, सारा माल सदक़ा, सारी दौलत सदक़ा और अपने दरवाज़े का जो पर्दा था अब वह उतार के कुर्ता बनाया। अपना लिबास भी सदक़ा, उसने कहा जब तूने फ़िक्र इख़्तियार किया मेरे आक़ा तो मैं भी तेरे साथ अल्लाह को राज़ी करने को निकलती हूँ।

फिर मालिक बिन दीनार रह० ने दोनों की शादी कर दी फिर

दोनों अपने वक़्त के ऐसे नेक बने कि लोग उनकी ज़ियारत के लिए आते थे।

पुलिस की बुनियाद हज़रत उमर रज़ि. ने रखी

पुलिस का महकमा सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि. ने क़ायम किया था तो आप (पुलिस वालों) की बुनियाद हज़रत उमर रज़ि. ने रखी है कैसे पाक हाथों से आपके महकमे की बुनियाद रखी गई है। आपका रातों को फिरना न मुशक़्क़त उठाना जिहादे फ़ी सबीलिल्लाह कहलाएगा और आपका उन ज़ालिमों के हाथों शहीद हो जाना सारे गुनाहों की तत्हीर करो कि जन्नतुल फ़िरदौस के आला दरजात तक पहुंचाएगा। ये कोई मामूली महकमा नहीं है।

उलमा कहाँ हैं: اين العلماء...... ऐलान होगा, उलमा कहाँ हैं?......'اين الئمة'...... इमामे मस्जिद कहाँ हैं?...... اين المؤذنون ......अज़ान देने वाले कहाँ हैं? अरे ये गिरे पड़े लोग जिन्हें हम समझते थे कि ये तो दो टके के हैं, इनकी तो कोई औक़ात नहीं, ये क्या हुआ? आज ऐलान ये नहीं हुआ? कहाँ हैं बादशाह? कहाँ हैं वज़ीर कहाँ हैं डाक्टर? कहाँ हैं इंजीनियर? कहाँ हैं जरनैल? और कहाँ हैं सालारान? ऐलान क्या हुआ? मुअज़्ज़िन कहां हैं? ये बेचारे बंगाली, ये मुअज़्ज़िन कहाँ हैं? ये इमामे मस्जिद कहाँ हैं? ये उलमा कहाँ हैं? जिनको कोई दो टके का नहीं समझता था, आज ऐलान हो रहा है, आ जाओ, आ जाओ, ये बाहर आ गए, कहा! मेरे अर्श के सामने में मिंबरों पर बैठो, उनको पानी पिलाया जाए उनको खिलाया जाए और बाक़ी बंदों का हिसाब लिया जाए।

बादशाही नहीं ये नुबूव्वत है

फ़ज्र की अज़ान हुई, सहाबा में हलचल मची, फ़त्हे मक्का का

मौक़ा था, अबू सुफ़ियान ने कहा क्या हुआ? ये हमले की तय्यारी कर रहे हैं, कहा नहीं नमाज़ के लिए जा रहे हैं, अबू सुफ़ियान कहने लगा, अब्बास तेरे भतीजे की इसके साथी हर बात मानते हैं? कहा! हाँ हर बात मानते हैं, चाहे वह उन्हें कह दे कि बीवी बच्चे छोड़ दो, मुल्क व माल छोड़ दो, हर चीज़ उस पर कुर्बान कर देते हैं, कहने लगा, अब्बास! मैंने बड़ी बड़ी बादशाहियाँ देखीं, पर तेरे भतीजे जैसी बादशाही नहीं देखी, उन्होंने कहा, अरे अबू सुफ़ियान! अब भी तेरी समझ में नहीं आ रहा कि ये बादशाही नहीं, ये नुबूव्वत है।

अज़ान हो और पंच्चानवे फ़ीसद के कान पर जूं ना रेंगे, तो हमारा मसला कहाँ से हल होगा, रमज़ान आए और हमारे कान पे जूं न रेंगे, पैसा इकट्ठा हो जाए और ग़रीब को ज़कात न मिले, फ़सल घर में आ जाए और ज़मीनदार उश्र अदा न करे, ये कैसी मुसलमानी है? ये कैसा इस्लाम है? ये तो फ़राएज़ छोड़ दिए और फ़राएज़ छोड़ने के बाद मसला कैसे हल होगा और अंदुरूने सिंध में जा के देखो, जहाँ किसी को नमाज़ आती ही कोई नहीं, सारी उम्मत में नमाज़ ज़िंदा हो जाए और सारी उम्मत अल्लाह के सामने झुके।

असलियत न भूलो

एक गधे को शैर की खाल मिल गई, उसने शैर की खाल पहनी, उसने कहा लो भई मैं भी शैर बन गया, अब जो बस्ती को चला, लोगों ने देखा की इतना बड़ा शैर है, गधे जैसा क़द, वह तो सारे भागे, अरे शैर आ गया, अब गधा बड़ा ख़ुश हुआ, उसने कहा भई सारे डर गए अब मैं थोड़ी सी ज़रा और गरजदार आवाज़ निकालूंगा तो ये और डरेंगे, अपनी हक़ीक़त को भूल गया कि

मुझसे शैर वाली आवाज़ नहीं निकलेगी, गधे वाली निकलेगी, अब उसने अपनी तरफ़ से ज़ोर से आवाज़ निकाली तो बजाए दहाड़ने के वह ढैंचूँ करने लगा, उन्होंने कहा अरे तेरा बेड़ा ग़र्क़ हो, ओए ये तो गधा है और जो डंडे लेकर उसकी मरम्मत की अब गधा साहब आगे आगे लोग पीछे पीछे।

क़ातिल का इस्लाम क़ुबूल करना

वहशी ने चेहरे को छिपाया हुआ और मदीने में आया क्योंकि उसे भी पता था कि जिसने मुझे देखा, क़त्ल किया जाऊंगा, छुपता छुपाता मस्जिदे नबवी में आया हुज़ूर स॰ अपने ध्यान में बैठे हुए थे और चेहरे से कपड़ा हटाया......وشهد شهادة الحق......आप जो ऐसे बैठे थे तो यूँ हुए ......فلم يروبه الا بقائما اشهد شهادة الحق...... आप की आँखें फटीं, सहाबा रज़ि॰ की तलवारें निकलीं, या रसूलुल्लाह स॰ वहशी! और वह कल्मा पढ़ चुका है और उनकी तलवारें नियाम से निकल रही हैं, आप स॰ ने फ़रमाया, पीछे हट जाओ, एक आदमी का कल्मा पढ़ लेना, मुझे हज़ार काफ़िरों को क़त्ल करने से ज़्यादा महबूब है फिर उसे यूँ देखते रहे ......اوحشى انت तू वही वहशी है। जी हाँ......اقعد बैठो, ये बता तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? आठ बरस गुज़र चुके हैं लेकिन ग़म अभी ताज़ा है, तूने मेरे चचा को कैसे क़त्ल किया था? वहशी ने जो बयान करना शुरू किया तो हुज़ूर स॰ की आँखों से आँसू जारी हो गए रोने लगे, कहा अरे वहशी, अल्लाह तेरा भला करे जा अल्लाह और उसके रसूल को राज़ी करने के लिए भी अब मेहनत कर और एक एहसान कर कि मुझे अपनी शक्ल न दिखाया कर, तुझे देख कर मेरे चचा का ग़म ताज़ा हो जाता है, जिसकी शक्ल भी देखने की हिम्मत नहीं है, उसके नफ़ा की भी सोची जारी है, अब तो भाई,

भाई पैसे पे लड़ रहा है तो इन अख़्लाक़ पर अल्लाह की मदद कहाँ से आएगी?

मुसलमान जन्नत के नग़मे भूल गया

एक भंगी अतर वाले की दुकान से गुज़रा तो खुशबू का हल्ला चढ़ा था, वह बेहोश हो के गिर गया, अब सारे इकट्ठे हुए, क्या हुआ? उन्होंने कहा भाई बेहोश हो गया, कोई रूह कैवड़ा लाओ, कोई गुलाब का अर्क़ लाओ, कोई ख़मीरा खिलाओ, एक भंगी और गुज़रा उसने देखा ये तो मेरी बिरादरी है उसने कहा अरे अल्लाह के बंदो, तम्हें क्या ख़बर पीछे हटो वह आगे आया थोड़ी सी गंदगी उठा के लाया उसके नाक पे जो लगाई और उसने सूंघी होश में आके बैठ गया।

आज सारे मुसलमानों का ये हाल है कि जन्नत के नग़मे भूल गया, क़ुर्आन के नग़मे भूल गया, अपने आप को गंदगी में डुबो दिया, सर हिला रहा है, अरे कभी तेरा सर क़ुर्आन पर हिला करता था और कभी तेरे आँसू क़ुर्आन सुनने पे निकला करते थे, लेकिन आज तुझे शैतान ने बरबाद कर दिया, जब तू यहां अपने आप को हराम से नहीं बचाएगा अल्लाह तुझे जन्नत के नग़मे कहाँ से सुनाएगा? जब तू यहाँ अपने आँख को बेहयाई से नहीं बचाएगा, अल्लाह तुझे अपनी ज़ाते आली का दीदार कैसे कराएगा?

कुछ नहीं हो सकता

एक किताब में मैंने पढ़ा, एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि जब हालात बिगड़ जाते हैं तो एक बड़ा तब्क़ा यूँ कहता है, अब कुछ नहीं हो सकता, जैसे हालात चल रहे हैं इसी धारे में तुम भी चलो, एक छोटा सा तब्क़ा कहता है कि भई कुछ तो टक्कर मारो, न करने से कुछ करना बेहतर है ये जो थोड़ा सा तब्क़ा दीवानगी में

और पागलपन में मजनूं बन के टक्कर लेता है और हालात से टक्कर लेता है यही आगे चल के बड़े बड़े इन्क़लाबात को वजूद देता है, आज लोग कहते हैं कि आज हुजूर वाली ज़िंदगी नहीं चल सकती, आज इस पर काम नहीं हो सकते, अब इस ज़िंदगी पर चलना मुशकिल है, भाई तुम यूँ कहो, हम टक्कर तो लेंगे और हुजूर स॰ वाले कल्मे की दावत देंगे, जब अल्लाह पाक हमारी कुर्बानी को कुबूल करेगा, और वह हवा चलाएगा, इंशा अल्लाह दिन पल्टा खाते चले जाऐंगे।

आवाज़ लग रही है

मेरे भाइयो! मैं हैरान होता हूँ बाहर......सब्ज़ी वाला आवाज़ लगा रहा है, आलू की आवाज़ लग रही है, छोले की आवाज़ लग रही, मकई, बाजरे की आवाज़ लग रही है, और प्याज़ और लहसुन की आवाज़ लग रही है, और कहवे और निसवार की आवाज़ लग रही है, रसूलुल्लाह स॰ की आवाज़ लगाने वाला ही कोई नहीं, आज ये इतना काम गिर गया है कि ये फ़ारिग़ लोगों का काम है, बेकार फिरते रहते हैं, बिस्तर उठाए फिरते रहते हैं, पागल लोग हैं, दीवाने हैं, घरों से निकाले हुए हैं, घर से फ़ारिग़ हैं इसलिए फिरते रहते हैं।

यही बातें लोग नबियों को कहा करते थे, जो इस काम को करेगा उसे हौसला रखना पड़ेगा, उसे ये बातें सुननी पड़ेंगी। मौलाना इल्यास रहमतुल्लाह अलैह ने जब मेवातियों में गश्त शुरू क्या तो वह मारते थे गालियाँ देते थे, उलमा ने कहा मौलवी इल्यास ने इल्म को ज़लील कर दिया चूंकि काम वजूद में नहीं था किसी को पता नहीं था, उलमा ने कहा ये वक़्त की ज़िल्लत है, मौलाना इल्यास रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया, हाय मेरा हबीब तो

अबू जहल से मार खाता था, मैं मुसलमान की मिन्नत कर के ज़लील कैसे हो सकता हूँ? मैं उस अल्लाह के कल्मे के लिए ज़लील होकर इज़्ज़त हासिल करना चाहता हूँ कि अल्लाह के कल्मे के लिए ज़िल्लत भी इज़्ज़त है ये ज़लील होना नहीं है ये बाइज़्ज़त होना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन के लिए तक्लीफ़ बर्दाश्त करना

हुज़ूर स॰ एक ख़ैमे में गए तो एक शख़्स से बात की, उसने कहा हमारा सरदार आ जाए फिर तेरे से बात करेंगे, आप बैठ गए, वह क़बीलए क़शीर था......बजरत इब्ने क़ैस......वह आया, कहने लगा ये कौन है उन्होंने कहा ये वह कुरैशी नौजवान है जो कहता है मैं नबी हूँ और कहता है कि मुझे पनाह दो, मैं अल्लाह का कल्मा पहचानना चाहता हूँ, मेरे भाइयो! बताओ भला हुज़ूर स॰ को पनाह की ज़रूरत थी? जिसके साथ अल्लाह हो, नहीं, दुनिया दारुल असबाब है, दुनिया को यह बताया है कि दीन का काम मेहनत से होगा, वरना मुझे किसी की पनाह की क्या ज़रूरत है, वह कहने लगा ये......मैं आप को इस हदीस के अल्फ़ाज़ कह रहा हूँ, अल्लाह माफ़ फ़रमाए, अपनी तरफ़ से नहीं। "नक़ल कुफ़्र कुफ़्र ना बाशद" कहने लगा इस पूरे बाज़ार में कोई सबसे बदतरीन चीज़ है ......الحق بقومك ......لولا قومى لضربت عنقك...... चल यहाँ से खड़ा हो जा, अगर मेरी क़ौम तुझे मेरे पास न बिठाती तो अभी तेरी गर्दन उड़ा देता, हुज़ूर स॰ की ज़बाने मुबारक से एक भी तो बोल नहीं निकला। आपने चादर उठाई, ग़मगीन परेशान उठे, ऊंटनी पर सवार होने लगे ऊंटनी जब खड़ी हुई तो उस ख़बीस ने पीछे से नेज़ा मारा और ऊंटनी उछली आप उलट के ज़मीन पर

गिरे फिर भी ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली, लोग कहें क्यों ज़लील होते फिरते हो, अरे वह तो ऐसों के सामने गिरे, लेकिन ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली, अबू जहल ने मारा लेकिन आपकी ज़बान से अल्फ़ाज़ नहीं निकले।

हज़रत ज़ैनब रज़ि॰ का ज़ार व क़ितार रोना

सहाबी रज़ि॰ कहते हैं, मैंने देखा कि एक बड़ा ख़ूबसूरत नौजवान है और लोगों को दावत देता फिर रहा है सुबह से चल रहा है और कल्मे की तरफ़ बुला रहा है, मैंने कहा ये कौन है? उन्होंने कहा ये क़ुरैश का एक नौजवान है जो बेदीन हो गया है ......حتی نصف النهار...... सुबह से वह आदमी करता रहा, यहाँ तक कि जब सूरज जब सर पे आया तो एक आदमी ने आके मुंह पे थूका, दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सर में मिट्टी डाली, एक ने आके थप्पड़ मारा, लेकिन नबी की तरफ़ देखो कि ज़बान से एक बोल बद्दुआ का नहीं निकला, इतने में हज़रत ज़ैनब रज़ि॰ को पता चला तो वह ज़ारो क़ितार रोती हुई आ रही हैं, प्याले में पानी लेकर, जब बेटी को रोते देखा तो ज़रा आँखें नम हो गईं, कहा बेटी ......لا تخشی علی ابیك الغیل......अपने बाप का ग़म न कर, तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कल्मा ज़िंदा होगा, वह सहाबी रज़ि॰ कहते हैं (वह बाद में मुसलमान हो गए उस वक़्त काफ़िर थे) मैंने कहा ये लड़की कौन है? उन्होंने कहा ये उसकी बेटी है।

एक यहूदी का हज़रत अमीर माविया रज़ि॰ से सवाल

एक यहूदी ने हज़रत अमीर माविया रज़ि॰ के पास सवाल लिख कर भेजे ये बताओ वह कौन से दो भाई हैं? जो एक दिन

पैदा हुए एक दिन वफ़ात पाई और एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है, पैदाइश का दिन एक, मौत का दिन एक लेकिन एक सौ साल बड़ा है, एक सौ साल छोटा है और वह कौनसी जगह है जहाँ सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ फिर कभी तुलू नहीं हुआ?

उन्होंने कहा भई इब्ने अब्बास रज़ि॰ को बुलाओ, वही जवाब देगा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को बुलाया गया उन्होंने फ़रमाया, उज़ैर और अज़ीज़ दो भाई थे, उज़ैर को सौ बरस मौत आ गई, उसकी ज़िंदगी में से सौ बरस कट गए और फिर दोनों भाई एक दिन मरे, एक दिन पैदा हुए, एक दिन मरे, एक सौ बरस छोटा है, एक सौ बरस बड़ा है और वह समन्दर जैसे अल्लाह ने फाड़ा और फाड़ के ज़मीन के नीचे से निकाला, इस पर सूरज एक दफ़ा तुलू हुआ और फिर पानी को मिलाया, फिर कभी वहाँ ख़ुश्की न आई।

हज़रत ईसा अलै॰ का माँ की गोद में ख़िताब

हर कोई शादी के बाद दुआ करता है कि अल्लाह औलाद दे, शादी से पहले भी किसी ने दुआ की? और ये अल्लाह की नेक बंदी मरयम, एक कोने में हुई नहाने को तो एक फ़रिशता इंसानी शक्ल में सामने आ गया, वह थर्रा गई अल्लाह से पनाह माँगती हूँ, कौन है? कहा, डर नहीं, मर्द नहीं हूँ फ़रिशता हूँ, क्यों आए हो? अल्लाह तुम्हें बेटा देना चाहता है, वह कहने लगीं तौबा तौबा मुझे बेटा? मेरी तो शादी नहीं हुई मैं कोई बाज़ारी औरत तो नहीं हूँ, तो ये कैसे हो सकता है? या हराम से आए या हलाल से आए, तो दोनों काम नहीं हैं। ऐ मरयम अलै॰ तेरा रब कह रहा है कोई मसला नहीं अभी हो जाएगा जिब्रईल ने फूंक मारी इधर फूंक पड़ी

उधर हमल, उसको नौ महीने के नौ पल में तय करवा के दरवाज़ा लगा दिया, ...فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ...... और दरवाज़ा ने भगाया और एक खुजूर के नीचे जाके बच्चा पैदा कर दिया और अब सर पे हाथ रखा......يٰلَيْتَنِىْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا......हाय मैं मर जाती ......وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا......हाय मेरा दुनिया में आना भी लोग भूल जाते, मैं किस मुंह से अब शहर को जाऊं? जिब्रईल अलैहिस्सलाम फिर आए ...... اَلَّا ...... قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا तहज़नी ग़म न कर, चशमा चल गया है ......فَكُلِىْ وَاشْرَبِىْ...... खा पी ......وَقَرِّىْ عَيْنًا ...... इत्मिनान रख और बच्चे को शहर में ले जा उन्होंने कहा मैं कैसे ले जाऊं? क्या जवाब दूँ? कहा तुम जवाब देना اِنِّىْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا......فَلَنْ اُكَلِّمَ الْيَوْمَ اِنْسِيًّا......मेरा रोज़ा है, मैंने बात नहीं करनी।

बनी इस्राईल रोज़े में भी बात नहीं कर सकते थे, हम रोज़े में झूट भी बोलें तो रोज़ा नहीं टूटता, वह सच भी बोलें तो टूट जाता था, इतनी रिआयत लेकर भी अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं हाय हाय।

...... فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ...... बच्चा गोद में लेकर शहर में आई, एक पुकार पड़ी......يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْـًٔا فَرِيًّا ...... ऐ मरयम ये क्या किया? يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ ...... ऐ हारून की बहन مَا كَانَ اَبُوْكِ ...... امْرَاَ سَوْءٍ ...... तेरा बाप तो ऐसा नहीं था? وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ ...... بَغِيًّا ...... तेरी माँ तो ऐसी नहीं थी। فَاَشَارَتْ ...... كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِى الْمَهْدِ صَبِيًّا (सूरह मरयम)......बेवकूफ़ बनाती है, बहाना करने का भी तुझे तरीक़ा नहीं आता, एक तो मुंह काला किया, एक बहाना ऐसा बनाती है, बच्चा कैसे बात करे? तो एक हंगामा शुरू हो गया अभी वह ऐसे ही हूँ हाँ कर रहे थे कि एक दम बच्चे का

ख़िताब शुरू हुआ बग़ैर लाउड स्पीकर के सारे डिफ़ेन्स में घूम गया सारे बैतुल मक़्दिस में घूम गया।

अल्लाह से माँगो

इब्राहीम बिन अदहम दरिया के किनारे पर बैठे हुए थे, जेब कट ग.. पैसे नहीं, या अल्लाह एक दीनार चाहिए, या अल्लाह एक दीनार चाहिए, सामने ही दरिया में से आठ दस मछलियों ने यूँ मुंह बाहर निकाल दिया और हर मछली के मुंह में एक दीनार था, क्या हुआ? अल्लाह अपना है, वह तो पहले से ही कह चुका है कि तुम मेरे हो पर हम भी तो उसे अपना बनाऐं, आधा काम तो पहले कर चुका है......ऐ मेरे बंदे मैं तुझ से मुहब्बत करता हूँ......तुझे मेरे हक़ की क़सम, तू भी तो मुझ से मुहब्बत कर, ये तब्लीग़ की मेहनत का मौज़ू है कि हर मुसलमान अल्लाह से इस दर्जे की मुहब्बत पे आ जाए।

उम्मत के ग़म में हुज़ूर स॰ का रोना

अरफ़ात के मैदान में ऊंटनी पर बैठकर पाँच घंटे हाथ उठा के उम्मत के लिए दुआ की, कोई अपने लिए आज पाँच घंटे दुआ नहीं करता, आने वाली नस्लों के लिए पाँच घंटे मुसलसल दुआ की है रो रो कर दुआ की है।

एक मरतबा आम मदीने में रात को रो रहे हैं, ऐ मौला! इब्राहीम ने कहा था......जो मेरी माने वह तो मेरा है जो मेरी न माने तेरी न माने तेरी मर्ज़ी तो मेहरबान है। माफ़ कर दे या अज़ाब देदे, ऐ अल्लाह ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा था......ऐ अल्लाह तेरे बंदे हैं, अज़ाब दे तेरी मर्ज़ी, माफ़ कर तेरी मर्ज़ी है। ऐ मेरे अल्लाह, न मैं ईसा की कहूँ न मैं इब्राहीम की कहूँ बल्कि मैं तो यूं कहूं ......क्या मतलब? मेरी उम्मत को माफ़ कर दे माफ़ कर दे, माफ़

कर दे, नहीं करना फिर भी कर दे और ये कह कर जो रोना शुरू हुए और इतना ज़ार व क़ितार रोए कि दाढ़ी तर हो गई। जिब्रईल को अल्लाह ने दौड़ाया, भागो भागो! जिब्रईल आए, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं आप क्यों रो रहे हैं? तो आपने फ़रमाया मुझे उम्मत का ग़म खा रहा है। जिब्रईल वापस गए, पैग़ाम लाए कि अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं......ऐ मेरे महबूब ग़म ना कर मैं तुझे तेरी उम्मत के बारे में खुश करूंगा।

क़ब्र में बराबरी

क़तर में एक महल देखा, बहुत लम्बा चौड़ा, मैंने समझा शायद शाही ख़ानदान में से किसी का है तो मैंने पूछा ये किस अमीर का है, तो हमारे साथी बताने लगे कि ये शाही ख़ानदान का तो नहीं लेकिन ये क़तर का सबसे बड़ा ताजिर था, क़तर में सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे बड़ा ताजिर था और ये उसका महल है, बनाने के बाद पाँच साल रहने की नौबत आई फिर मर गया और उसकी जहाँ क़ब्र है वहाँ क़तर का सबसे बड़ा फ़क़ीर बद्दू दफ़न है एक तरफ़ क़तर का अमीर तरीन है और उसके पहलू में क़तर का ग़रीब तरीन बद्दू जो सारा दिन भीक़ मांग के चलता था, उन दोनों की क़ब्र साथ साथ है कि क़ब्र में दोनों को बराबर कर दिया गया।

दुनिया में अज़ाब

वासिक़ बिल्लाह ने हज़ारों लोगों को मौत के घाट उतारा, जब मरने लगा नज़ा की हालत तारी हुई तो उसका वज़ीर था उसने वह शाही ख़िलाफ़त की जो चादर उसके ऊपर डाली हुई थी तो उसके वज़ीर ने ज़रा चादर उठाई देखने के लिए कि ज़िंदा है कि मर गया तो उसने यूँ आँखें उठा के देखा तो वह उस हाल में भी

वज़ीर लड़खड़ा के पाछे जा पड़ा, इतनी उस वक़्त भी उसकी आँखों में ताक़त थी, थोड़ी देर बाद चादर के नीचे से हरकत हुई तो भाग कर गए कि ये क्या हरकत है? चादर उठा के देखा तो वह मर चुका था और एक चूहा उसकी दोनों आँखें खा चुका था, ये चूहा कहाँ से आ गया अब्बासी महल में? ग़ैब का निज़ाम चला कि इन ज़ालिम आँखों से क्या क्या हुआ है। मौत से पहले ही एक चूहे को खिला के दिखा दिया और जूंही वह मरा तो वज़ीर ने ख़िलाफ़त की चादर उतार कर संदूक़ में डाली कि अब अगला आने वाला ख़लीफ़ा मेरी ठुकाई न कर दे कि ये चादर उस पर क्यों डाली हुई है, ये दुनिया इतनी नापाएदार है, इतनी नामुराद है।

जन्नत को सजाया जा रहा है

हज़रत शबाना आबिदा रज़ि॰ की बहन ने ख़्वाब देखा कि जन्नत सजाई जा रही है तो उन्होंने पूछा क्या बात है? जन्नत सजाई जा रही है और ये सारी हूरें खड़ी हुई हैं तो जवाब आता है कि शबाना आबिदा का इंतिक़ाल हुआ है उसके इस्तक़बाल में और उसकी रूह के इस्तक़बाल में जन्नत को सजाया जा रहा है और जन्नत की हूरों को इस्तक़बाल के लिए लाया जा रहा है। ये उनकी बहन ख़ुद ख़्वाब में देख रही है कि उनकी बहन को अल्लाह जन्नत में कितना बड़ा प्रोटोकोल दे रहा है, कितना बड़ा ऐज़ाज़ दे रहा है, अल्लाह जिसका ऐज़ाज़ करे। आज हमें ऐसा बनने की ज़रूरत है।

चोरी की नसीहत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ का अमल

दो शख़्स हैं जिनके बारे में तारीख़ ने गवाही दी, ये न होते तो इस्लाम न होता। لولا ابوبكر لما عبدالله अबू बक्र न होते तो

इस्लाम न होता। لولا احمد لما عبدالله अहमद बिन हंबल न होते तो इस्लाम न होता, कुर्आन के बारे में एक बहुत बड़ा फ़ित्ना उठा, सारे उलमा चुप हो गए जानें बचा गए, कई भाग गए, कई जिला वतन हो गए इब्ने हंबल डट गए कहा मुझे मार दो, मेरी ज़बान से हक़ के सिवा कुछ नहीं निकलेगा, आख़िर ये पकड़े गए और तीन दिन तक मुनाज़रा होता रहा, मुनाज़रों में तीनों दफ़ा मोतज़ली (एक बातिल फ़िर्क़ा था) हारते रहे चौथा दिन था, आज अहमद बिन इब्ने हंबल को पता है कि या तो मेरी जान जाएगी या मार मार के मुझे तबाह कर देंगे। जेल से निकल कर आ रहे हैं और दिल में आ रहा है कि मैं बूढ़ा हूँ। बनू अब्बास के कोड़े मैं नहीं बर्दाश्त कर सकता तो अपनी जान बचाने के लिए अगर मैंने कल्मए कुफ़्र कह भी दिया तो अल्लाह ने इजाज़त दी है तो मैं अपनी जान बचाऊं। ये ख़्याल आ रहा था कि अचानक एक शख़्स मज्मे को हटाता हुआ तेज़ी से आया और क़रीब आ गया, कहा अहमद, कहा क्या है, कहा! मुझे पहचानते हो? कहा नहीं कहा मेरा नाम अबुल हशीम है। मैं बग़दाद का नामी गिरामी चोर हूँ, देखो मैंने बनू अब्बास के कोड़े खाए। मैंने चोरी नहीं छोड़ी, कहीं तुम बनू अब्बास के कोड़ों के डर से हक़ न छोड़ देना, अगर तुमने हक़ छोड़ दिया तो सारी उम्मत भटक जाएगी तो इमाम अहमद बिन हंबल जब कभी याद करते थे। رحم اللّٰہ ابو الهيثم ऐ अल्लाह अबुल हशीम पर रहम कर दे कि इस चोर की नसीहत ने मुझे जमा दिया। मैंने कहा मेरे टुकड़े टुकड़े कर दे, अब मैं हक़ को नहीं छोड़ूंगा और साठ कोड़े पड़े, महल में बोटियाँ उतर के गिरने लगीं और ख़ून से तरबतर हो गए और उधर जो बातिल का मुनाज़िर था, उसका नाम भी अहमद था, जब ये ख़ून ख़ून हो गए तो नीचे आया, और उनके क़रीब

जाकर कहने लगा, अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि कुर्आन मख़्लूक़ है तो मैं ख़लीफ़ा के अज़ाब से तुझे बचा लूंगा, उन्होंने उसी बेहोशी में कहा। अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि कुर्आन अल्लाह का कलाम है और मख़्लूक़ नहीं है तो मैं तुझे अल्लाह के अज़ाब से बचा लूंगा।

ऊंट की दुआ, उम्मत का इख़्तिलाफ़, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रोना

एक ऊंट दौड़ता हुआ आया...... القى بجرانه فحر حرا एक ऊंट आता है और अपनी गर्दन आपके पाँव में डाल के रोने लगा حتى ابتل الارض यहाँ तक कि रोते रोते ज़मीन तर हो गई, आपने फ़रमाया, ऊंट फ़रयादी बनके मेरे पास आया है, इतने में एक सहाबी पीछे से दौड़ा दौड़ा आया, या रसूल स॰ मेरा ऊंट गुम हो गया मैं उसे ढूंढता फिर रहा हूँ, फ़रमाया ये तेरी शिकायत कर रहा है, अर्ज़ किया क्या शिकायत कर रहा है, फ़रमाया ये यूँ कह रहा है या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैं जब जवान था तो मैं इनके काम करता था, पानी इनका भर के लाता था, लकड़ियाँ लाता था, और मेरे ऊपर सब कुछ लादते थे, मैं ले के चलता था। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तो ये मुझे ज़बह करना चाहते हैं। आप मेरी जान बचाइये। उन्होंने कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हम ज़बह तो करना चाहते हैं फ़रमाया फिर ये मुझे दे दो कहा ये आप पर कुर्बान आपने फ़रमाया ऐ ऊंट जा चला जा। فرغار غوة ऊंट ने आवाज़ निकाली आपने फ़रमाया आमीन ثم رغى الثانية फिर दूसरी दफ़ा आवाज़ निकाली, आपने फ़रमाया आमीन। फिर رغا رغوة الثالثة तीसरी दफ़ा आवाज़ निकाली। आपने फ़रमाया आमीन फिर चौथी दफ़ा आवाज़ निकाली। चौथी दफ़ा आप रोने लगे।

सहाबा रज़िअल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स. ये चक्कर हमें तो समझ नहीं आया, ये चक्कर सारा चल रहा है? फ़रमाया ये मुझे दुआ दे रहा था, उसने मुझे पहली दफ़ा कहा, अल्लाह आपके ख़ौफ़ को भी दूर करे जैसे आपने मेरे ख़ौफ़ को दूर किया, मैंने कहा आमीन, उसने कहा अल्लाह आपकी उम्मत को दुशमन से हलाक होने से बचाए कि ये बिल्कुल हलाक न हो जाऐं मैंने कहा आमीन। उसने कहा अल्लाह तआला आप की उम्मत को कहत से हलाक न करे। मैंने कहा आमीन। उसने कहा अल्लाह आप की उम्मत को हमेशा जोड़े रखे। इस पर मैं रोने लग गया कि मुझे मेरे रब ने बताया कि तेरी उम्मत में भी इख़्तिलाफ़ होगा।

सुन्नते रसूल स. की बरकत

सहाबा रज़ि. से क़िला नहीं फ़तेह हो रहा, सारे हैरान हैं कि वजह क्या है, क़िला क्यों नहीं फ़तेह हो रहा? तो अब तवज्जोह की कि किस वजह से क़िला नहीं फ़तेह हो रहा (मेरे भाइयो! मुसलमान की सोच देखो, किस बुनियाद पर क़ैसर व किस्रा को उन्होंने तोड़ा) आपस में सोच में पड़े कि क़िला क्यों नहीं फ़तेह हो रहा? कहने लगे हम से मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है, नतीजा यह निकाला कि क़िला इस लिये फ़तेह नहीं हो रहा कि मिसवाक की सुन्नत छूटी हुई है सारे लशकर को हुक्म दिया कि सब मिसवाक करो और हमारा लोग मज़ाक उड़ाते हैं कि ये क्या लकड़ियाँ मुंह में लेकर फिरते हो? अब तो नया ज़माना है, अब तो ब्रश करना चाहिए। ये क्या तुम लकड़ियाँ मुंह में देते रहे? तो ऐसे लोगों के साथ अल्लाह की मदद आएगी? मिसवाक की सुन्नत के छूटने पर अल्लाह की मदद हट गई, तुमने मेरे हबीब की एक सुन्नत को हल्का समझा है। लिहाज़ा हमारी मदद तुम से दूर हो

गई।

हज़रत अली रज़ि. का यहूदी को क़त्ल न करना

हुज़ूर के तरीक़े पर जमना आज उम्मत से निकला हुआ है। सहाबा की इस रुख़ पर तरबियत फ़रमाई कि मरना क़ुबूल किया। अल्लाहुअक्बर। अंदाज़ा लगाइये कि हज़रत अली रज़ि. यहूदी के सीने पर चढ़े हुए हैं और उसे क़त्ल करना चाहते हैं और वह मुंह पर थूकता है। छोड़ के पीछे हट जाते हैं। कहा दोबारा आओ, यहूदी हैरान है, अरे क्यों? कहा पहले मैं तुझे अल्लाह और अल्लाह के दीन की वजह से क़त्ल कर रहा था, जब तूने मेरे मुंह पर थूका तो मेरे नफ़्स का गुस्सा शामिल हो गया, अब अल्लाह के रसूल की रज़ा नहीं थी, अब अपने नफ़्स का गुस्सा था, दोबारा आओ, यहूदी ने कल्मा पढ़ लिया, आज तो मुसलमान, मुसलमान को क़त्ल कर रहा है, किस पर? कि उसने मुझे गाली दे दी बस इसी पर क़त्ल कर दिया तो इन आमाल के साथ उम्मत कहाँ वजूद पकड़ेगी? मेरे भाइयो! मैं इस क़िस्से को पढ़ के हैरान हो जाता हूँ कि इतना अल्लाह रसूल से तअल्लुक़ कि थूका मुंह पर छोड़ के खड़े हो गए। अब मैं तुझे क़त्ल नहीं करूंगा, पहले मैं अल्लाह रसूल की वजह से कर रहा था, अब अपनी वजह से करूंगा, अब मैं क़त्ल नहीं करता, दोबारा आओ।

बीवी बच्चों को रोटी खिला कर फिर तब्लीग़ करना

अबू तल्हा अंसारी बाग़ात के मालिक एक दिन घर में आए तो तमाम बाग़ात उजड़े हुए हैं और घर में एक आदमी के लिए भी

रोटी नहीं अंसारे मदीना थे और पेट पर पत्थर बांधे हुए हैं ये उनका आलम है उनके बाग़ात क्यों लुट गए वह घाटे क्यों पड़े नबी की ख़त्मे नुबूव्वत की मेहनत की वजह से घाटे आए ख़त्मे नुबूव्वत के काम की वजह से नुक़सान आया। अगर ख़त्मे नुबूव्वत की मेहनत और दीन के काम का मिज़ाज ये होता है कि अपने कारोबार को भी ठीक रखो और अपने घर के काम से फ़ारिग़ हो जाओ तो दीन का काम भी करो अगर दीन का मिज़ाज ये होता। ख़त्मे नुबूव्वत का मिज़ाज ये होता। पहले बीवी बच्चों को रोटी खिला लो फिर तब्लीग़ कर लो, तो फिर किसी सहाबी को पेट पर पत्थर बांधने की ज़रूरत न पड़ती। हज़रत फ़ातमा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा को सात दिन के फ़ाक़े का कोई दुख नहीं तो फिर हज़रत हसन व हुसैन रज़ि॰ का भूक की वजह से तड़प तड़प के रोना कोई समझ में नहीं आता ये बात बाग़ात उजड़ गए घर के घर वीरान हो गए ये क्यों हुआ? हालांकि उन्हें आला और अदना की तमीज़ थी, हमें तमीज़ नहीं है वह अदना पर क़ुर्बान करते थे हम क़ुर्बान नहीं कर रहे। ये ख़त्मे नुबूव्वत की लाइन का सबसे आला काम है ज़द पड़ गई नुक़सान आ गया घाटा आ गया फ़र्ज़ करो अव्वल तो ये बहुत लोग हैं जिनके साथ ये होता है और जिनके साथ ये होता है वह बड़े मुक़र्रब लोग हैं। اشد الناس بلاء الانبياء। सबसे ज़्यादा मशक़्क़त में अंबिया होते हैं और ये नुक़सान और घाटे बिला एवज़ नहीं हैं इस पर इतना मिलेगा कि इसकी और नबी की जन्नत के दरमियान सिर्फ़ एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।

दावत के लिए निकल जाओ

हज्जतुल विदा के बाद आप दो ढाई महीने भी ज़िंदा नहीं रहे। हज्जतुल विदा के बाद आप स॰ ने मुआज़ रज़ि॰ को फ़रमाया

मुआज़ रज़ि॰ यमन जाओ वहाँ जाओ और عسى ان لا تلقى بعد عامى هذا तू आएगा तो मुझे नहीं पाएगा। لعلك تمر بمسجدى هذا जब तू आएगा मस्जिद तो होगी मैं नहीं हूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखना दीन है और माँ बाप के पास रहना दीन है और उनकी ख़िदमत करना दीन है। उनके लिए कमाई करना दीन है लोगों को दीन के मसाएल बताना भी दीन है और मुआज़ बिन जबल भी अहले फ़त्वा में से थे। हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ना उनके अहकाम सुनना ये सारे दीनी अवामिर हैं लेकिन आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद उस दीन को कुर्बान करो आकर कह रहे हैं कि यमन जा यमन जा।

हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ की शहादत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिचकियाँ बंध गईं

हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ आगे कुफ़्फ़ार से लड़ रहे थे और ये हज़रात हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ थे हज़रत तल्हा रज़ि॰ और हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ आगे थे। वहशी की ज़द में आ गए दोनों हाथों में तलवार लेकर चल रहे थे कि वहशी ने पत्थर के पीछे से बैठ कर जो निशाना मारा और आप के पेट में बरछा लगा आँतें और जिगर कटा आप रज़ि॰ गिरे और हज़रत तल्हा उसकी तरफ़ बढ़े हम्ज़ा रज़ि॰ वहशी की तरफ़ गिरते गिरते बढ़े तो वहशी कहने लगा कि मैं भागा कि कहीं मेरे ऊपर कोई हमला न हो लेकिन हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ को उल्टी आई और जान निकल गई, जब शोहदा की तलाश हुई आप स॰ ने फ़रमाया चचा कहाँ हैं? हम्ज़ा कहाँ हैं? देखा ज़िंदों में नहीं। ज़ख़्मियों में भी नहीं मेरा चचा मेरा चचा किसी ने कहा वह तो शहीद हो गए। जब

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और अपने चचा की लाश को देखा कि नाक कटा हुआ, कान कटे हुए, सीना फटा हुआ, कलेजा निकला हुआ, आंतें फटी हुई तो आप इतने रोए कि आप की हिचकियाँ बंध गईं। हुज़ूरे अक्रम स. के रोने पर सहाबा भी रोए इतने रोए कि आपकी हिचकियां बंध गईं। सब रो रहे थे आप इतने ज़ोर से रो रहे थे यहाँ तक कि हज़रत जिब्रईल आसमान से आए और आ के यूँ अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि मेरे हबीब ग़म न करो हमने आपके चचा को अपने अर्श पर लिखा है। اسد الله واسد رسوله حمزه अल्लाह और उसके रसूल के शैर हैं वहशी से कितना दुख उठाया होगा। सत्तर दफ़ा हज़रत हम्ज़ा पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी, जब मक्का फ़तेह हुआ तो वहशी के क़त्ल का हुक्म दिया कि जो वहशी को पा ले क़त्ल करे लेकिन जब मदीना मुनव्वरा में आए तो वहशी पर भी तरस आया कि क़त्ल हुआ तो दोज़ख में चला जाएगा। वहशी ताइफ़ चला गया वहशी के पास खुसूसी तौर पर एक आदमी भेजा कि वहशी अल्लाह का रसूल कहता है कि कल्मा पढ़ ले मुसलमान हो जा जन्नत में चला ज़ाएगा। ये अख़्लाक़े नुबूव्वत थे वहशी कहने लगा मैं कल्मा पढ़ के क्या करूंगा? मैंने तो सारे काम किए हैं जिस पर तुम्हारे रब ने दोज़ख़ का कहा, क़त्ल, ज़िना, शिर्क, शराब मैं क्या करूंगा। उसने आकर जवाब दे दिया आपने उसको दोबारा भेजा फिर दोबारा भेजा, किसके पास चचा के क़ातिल के पास।

जापानी कुत्ते की वफ़ादारी

हम जानवर से इबरत हासिल कर लें, जापान में एक प्रोफ़ेसर था जब वह यूनिवर्सिटी पढ़ाने जाता तो स्टेशन तक अपने कुत्ते

को साथ लेकर जाता वह कुत्ता प्रोफ़ेसर को रवाना कर के फिर घर आ जाता दोपहर को तीन बजे मालिक को लेने के लिए वह कुत्ता यूनिवर्सिटी जाता तो एक दफ़ा प्रोफ़ेसर को यूनिवर्सिटी ही में हार्ट अटेक हुआ। वहाँ से उसको हस्पताल ले जाया गया वहाँ पर मर गया लेकिन कुत्ता अपने टाइम पर तीन बजे मालिक को लेने गया। अब मालिक आया नहीं तो इंतिज़ार कर के शाम को वापस चला गया। अगले दिन ठीक तीन बजे वहाँ जाके बैठ गया वह शाम को वापस चला गया नौ साल तक वह कुत्ता मुसलसल वहाँ पर आता रहा और उसी जगह वह कुत्ता बैठे बैठे मर गया और अभी भी उसकी जगह उस कुत्ते का एक बुत बना खड़ा है यह तो एक कुत्ते की वफ़ा है हम तो इंसान हैं। अल्लाह तआला ने सूरह अलआदियात में बड़ा गिला किया है। وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحاً فَالْمُوْرِيَاتِ قَدْحاً فَالْمُغِيْرَاتِ صُبْحاً فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعاً فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ (सूरह अलआदियात) क़सम है तेज़ी से दौड़ने वाले घोड़ों की क़सम है उनकी जो पत्थरों पर पाँव रखते हैं तो आग निकलती है (अरब जब घोड़े दौड़ाते थे तो उनके पैर पत्थरों पर पड़ते तो आग निकलती थी) और क़सम है घोड़ों की जो ग़ुबार उड़ाते हैं जो सुबह के वक़्त हमलाआवर होते हैं और दुशमन के अंदर घुस जाने वाले घोड़ों की अल्लाह पाक क़समें खा रहे हैं और आगे मज़मून ये है कि ऐ इंसान! तू बड़ा नाशुक्रा है। इस आयत के तहत मुफ़स्सरीन लिखते हैं कि इन आयात में जोड़ ये है ऐ मेरे बंदे! मैंने घोड़े को पैदा किया? घोड़े का वजूद बनाया और फिर तेरी मिलकियत में दिया उसके अंदर मैंने रखी मालिक से वफ़ा, वफ़ा मालिक ने रखी है तूने क्या किया? एक वक़्त में पानी पिलाया और दो वक़्त में चारा खिलाया, कभी सूखा खिलाया कभी तर

खिलाया लेकिन तेरे दो वक़्त के खाने की उसने वह वफ़ा की है तू उस पर सवार होता है तो वह दौड़ता है तू हमला करता है। वह आगे चलता है तू दुशमन के दरमियान उतरता है तो वह दरमियान में कूदता है। सारा दिन लड़ता है पीछे मुंह नहीं मोड़ता। आगे सुबह फिर हमला करता है तो तेरा घोड़ा ये नहीं कहता कि मैं थका हुआ हूँ। मैं नहीं जाता वह फिर तेरे साथ चलता है। سبع معلقات (ये दर्से निज़ामी की किताब का नाम है) का शाइर अपने घोड़े की तारीफ़ करता है।

يدعون عنك غرماهو كانها
الستان بير في لبان ادهيم

वह अपने घोड़े की तारीफ़ करता है कि मैं जब अपने घोड़े लेकर हमलाआवर होता हूँ तो इतने बड़े बड़े नेज़े इस घोड़े के सीने में लग रहे होते हैं जैसे कुऐं के डोल में जो रस्सी लटकती है ये बात पूरी समझ में उस वक़्त आती है जबकि अरब का नक़्शा सामने हो, अरब में पानी बहुत नीचे होता है तो उसके लिए बहुत लम्बी सी रस्सी होती थी तो लम्बी रस्सी डोल से बांधकर पानी निकालते थे नेज़ा जितना लम्बा होता है उतना ज़ोर से अंदर उतरता है बड़ी ताक़त से अंदर जाता है तो वह कहता है जब मैं घोड़े को लेकर हमला करता हूँ तो कुऐं की रस्सी की तरह लम्बे नेज़े उसके सीने पर लगते हैं तो वह घोड़ा कभी नहीं कहता कि मालिक मैं ज़ख़्मी हो गया हूँ पीछे हटता हूँ उसका ये हाल होता है कि वह ऊन की शलवार पहन लेता है मेरी नाफ़रमानी नहीं करता अल्लाह पाक फ़रमाता है कि ऐ मेरे बंदे! घोड़ा तेरा इतना वफ़ादार है तू फिर भी वफ़ादार नहीं क्यों नहीं बनता, मैंने तुझे कहाँ से कहाँ पहुंचाया, कितनी काएनात की मशीनों को तेरी ख़िदमत पर लगाया

हुआ है तो क्या मेरा हक़ नहीं कि तू मेरी मान के चले।

फ़ातमा रज़ि॰ के घर पर्दा करने के लिए चादर नहीं

हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ बीमार हैं उनका हाल पूछने के लिए आप स॰ और एक सहाबी इमरान बिन सीन जो कि कुरैश के सरदार थे वह भी साथ थे दरवाज़े पर जाकर पूछा कि बेटी अंदर आऊं मेरे साथ एक और आदमी भी है तो हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स॰ मेरे घर में इतना कपड़ा नहीं कि मैं पर्दा कर सकूं चादर कोई नहीं चेहरा छिपाने के लिए ज़ाहिर जिस्म को छिपाने के लिए चादर कोई नहीं हमारे इल्म के मुताबिक़ ये कैसी ज़िल्लत की ज़िंदगी है ये भी कोई ज़िंदगी है कि कपड़ा कोई न हो रोटी कोई न हो ये हमरी जहालत का इल्म है और ज़मीन व आसमान वालों का इल्म एक जैसा चल रहा है उनकी ज़िंदगी उनकी सबसे प्यारी बेटी जन्नत की औरतों की सरदार, और जन्नत के सरदारों की माँ, निस्बत देख سيد شباب اهل الجنة الحسن والحسين ये जन्नत के सरदारों हसन और हुसैन उनकी माँ और अल्लाह के शैर की बीवी और मुहम्मद स॰ की बेटी इस हाल में है कि घर में चादर पर्दे को नहीं तो आपने अपनी चादर मरहमत फ़रमाई कि मेरी चादर से पर्दा करो, आप स॰ अंदर तशरीफ़ लाए और पूछा बेटी क्या हाल है उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह स॰ पहले भूक थी कि दो मेहमान और आ गए भूक दूर करने को कोई अस्बाब नहीं रोटी नहीं बीमारी के इलाज के पैसे नहीं, तो हुज़ूरे अक्रम स॰ ने गले लगाया और आप स॰ भी रोने लगे अल्लाहुअक्बर ताइफ़ पत्थरों की बारिश में रोना नहीं आया और यहाँ रोना आया, ऐ बेटी! ग़म न करो والذى بعث اباك بالحق ماذقت من ثلاثه ايام فواقا उस ज़ात की क़सम जिसने तेरे बाप को नबी बनाया है आज

तीसरा दिन है मैंने भी एक लुक़्मा तक नहीं खाया है तेरे घर में फ़ाक़ा है तो तेरे बाप के घर में भी फ़ाक़ा है यहाँ ये बोल फ़रमाया कि मैं कहने लगा था तो मुझे ये सारा वाक़िआ याद आ गया तो शुरू कर दिया यहाँ ये बोल फ़रमाया अब علی ربی لیجعل ما بین المکۃ ذھبا मेरे रब ने मुझ पर पेश किया कि आप चाहते हैं तो सारे अरब के पहाड़ों को सोना बना दूं अरब के पहाड़ मक्का और मदीना के दरमियान पहाड़ सोना बन जाता तो क्या इससे किया होता सारा अरब ही पहाड़ी इलाक़ा है अख़ीर मअक फिर ये बन के खड़े नहीं रहेंगे आप स॰ के साथ चलेंगे।

आप स॰ को तोड़ने की और काटने की मशक़्क़त में नहीं डालूंगा जितना फ़रमाऐंगे इतना होकर सामने आएंगे मैंने इंकार किया ऐ बेटी फिर क्या चाहिए मैंने कहा मुझे ये चाहिए कि اجوع یوما واشبع یوما एक दिन भूका रहूँ और एक दिन खाना खाऊं तो मेरी उम्मत के अक्सर लोग फ़कीर होंगे उनकी तसल्ली के लिए कि तुम्हें रोटी नहीं मिली तो तुम्हारे नबी स॰ को भी तीन तीन दिन रोटी नहीं मिली अरे तुम्हारे बेटे के इलाज के लिए पैसे नहीं मिल रहे तो तुम्हारे नबी स॰ की सबसे महबूब बेटी की दवा के लिए पैसे नहीं मिले थे तुम्हारे बेटों को पहनने के लिए कपड़े नहीं मिल रहे तो तुम्हारे नबी स॰ की प्यारी बेटी को भी जिस्म ढांपने के लिए कपड़े नहीं थे ये सिर्फ़ उम्मत के ग़रीब को तसल्ली के लिए थी अब यहाँ हमारी अक़्ल बरबाद हुई उन गाड़ियों और कोठियों को इज़्ज़त का मेयार बनाया गया तो क़ारून सबसे बड़ा इज़्ज़त वाला था। उस जैसा शख़्स दौलत वाला आदमी दुनिया में कोई नहीं गुज़रा आईंदा कोई आएगा अल्लाह ने ख़ज़ानों समेत उसको ग़र्क़ कर दिया कि कहा बेटी मैं ख़ुद भूका हूँ मेरे रब ने तो कहा था कि

ये पहाड़ सोना बना दूँ मैंने कहा नहीं जब भूक लगेगी। تضرعت اليك وذكرتك मैं तूझे याद करूंगा तेरे सामने आह व ज़ारी करूंगा या अल्लाह! मुझे खाना दे। واذ شبعت حمدتك وشكرتك जब खाना खाऊंगा तो तेरा शुक्र अदा करूंगा और तेरी तारीफ़ करूंगा।

हज़रत उमर रज़ि॰ का जुहद

मेरे भाइयो! हज़रत उमर रज़ि॰ बूढ़े हो गए सहाबा रज़ि॰ ने कहा कि अब ये बूढ़े हो गए हैं और ये बहुत मशक़्क़त करते हैं इन्हें चाहिए कि ये अब अपना तरीक़ा तबदील करें अब ये पतला कपड़ा पहनें अब ये अच्छा खाना खाऐं अब ये कोई नौकर रख लें जो इन के लिए खाना पकाया करें भाई बात कौन करे? उन्होंने कहा कि बेटी से कहो वह बात करें हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ को तय्यार किया गया कि आप बात फ़रमाऐं अगर हज़रत बात मान जाऐं तो फिर हमारी बात बता देना अगर न मानें तो फिर हमारे नाम न बताना और ये मशवरा करने वाले कौन थे? हज़रत उस्मान रज़ि॰ हज़रत अली रज़ि॰ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ हज़रत सअद रज़ि॰ और हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ ये छः सहाबा थे ये बड़े बड़े सहाबा मशवरा करने वाले हैं हज़रत उमर रज़ि॰ अपनी बेटी के घर में आए बेटी ने कहा अब्बाजान! आप बूढ़े हो गए हैं और मुल्कों के वफ़्द आते हैं बड़े बड़े बादशाहों के वफ़्द आते हैं अब आप अच्छा खाना खाया करें अच्छा लिबास पहना करें और कोई नौकर रख लें जो आप रज़ि॰ की ख़िदमत किया करे जिससे आप को राहत पहुंचे फ़रमाया बेटी! घर वाले को पता होता है कि मेरे घर में क्या है कहने लगी हाँ! फ़रमाया बेटी तुझे पता है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से तशरीफ़ ले गए और आप स॰ ने कभी पेट भर के खाना नहीं खाया फ़रमाया ये तुझे पता है

कहा हाँ पता है कि सुबह खाया तो शाम को न खाया शाम को खाया तो सुबह को न खाया कहने लगी हाँ फ़रमाया बेटी! तुझे पता है कि एक दफ़ा खाना तूने घर में एक छोटी सी मेज़ पर रख दिया था और हुज़ूरे अक्रम स॰ तशरीफ़ लाए थे आप स॰ ने खाने को मेज़ पर देखा तो आप स॰ के चेहरे का रंग बदल गया था और आप स॰ ने गुस्से से वहाँ से खाना उठवा कर ज़मीन पर रख कर खाया था फ़रमाया हाँ बेटी! तुझे याद है कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक ही जोड़ा होता था जब मैला होता था तो खुद ही धोते थे और धोकर खुश्क करते थे यहाँ तक कि नमाज़ का वक़्त हो जाता था और हज़रत बिलाल रज़ि॰ अज़ान देकर कहते थे या रसूलुल्लाह الصلوٰة तो अभी आप स॰ का जोड़ा खुश्क नहीं होता था आप इंतिज़ार करते थे यहाँ तक कि आप का जोड़ा खुश्क होता और उसे पहन कर फिर आप स॰ जा कर नमाज़ पढ़ा करते थे।

फ़रमाया ऐ बेटी! तुझे याद है कि एक औरत ने आप स॰ की ख़िदमत में दो चादरें हदिया भेजी थीं एक चादर पहले भेज दी दूसरी में देर हो गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सिवाए उस चादर के कोई कपड़ा न था तो आप स॰ ने चादर को गाठें लगा कर अपने सतर को ढाँका और जा के नमाज़ पढ़ाई थी फ़रमाया क्या तुझे याद है? बेटी ने कहा हाँ याद है फिर हज़रत उमर रज़ि॰ रोना शुरू हुए। फ़रमाया बेटी! सुन ले मेरी और मेरे साथियों की मिसाल ऐसी है जैसे तीन राही तीन मुसाफ़िर चले पहले एक चला और चलता चलता मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा फिर दूसरा चला और वह भी चलता चलता मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा, अब मेरी बारी है अल्लाह की क़सम! मैं हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम के तरीक़े से नहीं हटूंगा और अपने आप को इसी मशक़्क़त पर रखूंगा यहाँ तक कि मैं अपने नबी से जाकर मिल जाऊं मेरे दो साथी एक जगह पहुंच चुके अब मेरी बारी है मुझे भी पहुंचना है! मेरे भाइयो! हालांकि हज़रत उमर रज़ि॰ वह इंसान थे जिनको अल्लाह तआला के नबी ने कहा कि ऐ उमर रज़ि॰! मैंने जन्नत में एक हसीन व जमील व ख़ूबसूरत महल देखा मैंने पूछा ये किसका महल है? तो मुझे कहा गया कि यह एक कुरैशी नौजवान का महल है जब मैं महल में दाख़िल होने लगा तो फ़रिशते ने कहा कि या रसूलुल्लाह स॰! ये उमर रज़ि॰ का महल है।

मेरे भाइयो! जिसको जन्नत की ऐसी बशारतें मिलें और आप स॰ ने फ़रमाया मेरे दो वज़ीर हैं दुनिया में अबू बक्र रज़ि॰ और उमर रज़ि॰ और दो वज़ीर हैं आसमानों में जिब्रईल अलै॰ और मीकाईल अलै॰ और आप स॰ ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन जब मैं उठूंगा मेरे दायें तरफ़ अबू बक्र रज़ि॰ और बाऐं तरफ़ उमर रज़ि॰ और बिलाल रज़ि॰ मेरे आगे आगे अज़ान देता होगा ये सारी ख़ुशख़बरियाँ सुनी हैं लेकिन बेटे से कह रहे हैं मेरा सर ज़मीन पर डाल दे। मैं अपने चेहरे पर मिट्टी मलना चाहता हूँ कि मेरे रब को इस पर तरस आ जाएगा।

हज़रत अली रज़ि॰ और फ़िक्रे आख़िरत

जर्रार इब्ने ज़म्रा कनानी फ़रमाते हैं कि हज़रत अली रज़ि॰ की वह आवाज़ आज मेरे कान सुन रहे हैं रात भीग चुकी है और सितारे फीके और मांद पड़ चुके हैं और वह अपनी मस्जिद के मेहराब में खड़े हैं अपनी दाढ़ी को पकड़े हुए तड़प रहा है जैसे साँप के डसने से इंसान तड़पता है और रोता है जैसे कोई ग़मों का मारा हुआ रोता है और दुनिया को कह रहा है मुझे धोका देने

आई है मुझे धोका देने आई है मेरे सामने मुज़य्यन होके आई है दूर हो मैं तुझे तीन तलाक़ दे चुका हूँ, तेरी उम्र थोड़ी, तेरी मुसीबत आसान ऐ मेरे अल्लाह! मेरे पास सफ़र का तौशा कोई नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है ये कौन कह रहा है? जिनके बारे मे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा हज़रत अली रज़ि॰ का हाथ अपने हाथ में पकड़ा और यूँ कहा ऐ अली रज़ि॰ खुश हो जा जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा ये कह रहे हैं कि मेरे पास तूशा नहीं है मेरे पास सफ़र का तौशा नहीं है और सफ़र बड़ा लम्बा है।

इमाम इस्माईल रह॰ का कुर्आन पढ़ना, एक बद्दू का ऐतराज़

इमाम इस्माईल रह॰ कुर्आन पढ़ रहे थे एक बद्दू साथ बैठा हुआ था जब इमाम इस्माईल रह॰ ने ये आयत पढ़ी اَلسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْا اَيْدِيَهُمَا الخ (सूरह अल मायदा आयत 38) चोर मर्द और चोर औरत का हाथ काटो आगे है اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْم तो बद्दू के कान खड़े हुए और कहने लगा ये किसका कलाम पढ़ रहे हो तो उन्होंने कहा कि ये अल्लाह का कलाम है अल्लाह ने कहा ليس كلام الله ये अल्लाह का कलाम नहीं है ये ऊंट चराने वाला कह रहा है कि ये अल्लाह का कलाम नहीं है फिर उन्होंने सोचा कि وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ बद्दू ने कहा ये है कलामे अल्लाह इमाम ने कहा क्या तुम आलिम हो? कहा नहीं फिर तुम्हें कैसे पता चला कि وَاللّٰهُ غَفُوْرُ الرَّحِيْمُ है और ये وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ है बद्दू ने कहा अल्लाह के बंदे पीछे तो देखो क्या कह रहा है चोर का हाथ काट दो इस हुक्म के साथ ग़फ़ूरुर्रहीम का अल्फ़ाज़ जुड़ता नहीं। لَوْ غَفُوْرُ الرَّحِيْمُ لَمْ يَحْكُمْ بِقَطْعِ عَزِيْزٍ حَكِيْمٍ पीछे हुक्म के साथ जोड़ खाता

है غـفـور رحيـم पिछले हुक्म से जोड़ नहीं खाता ये बारीकी आज किसको समझ आ सकती है ये तर्जुमा आप को बताया था किसी ने तो ज़रूरत पड़ी वह तो कुर्आन की रूह को समझते थे हम रूह नहीं समझते लेकिन फिर भी हमें ज़रूरत है। يـآأيُّهـا الَّـذِيْـنَ امَنُوْا कितनी दफ़ा कुर्आन ने हमें पुकारा है? कभी हमने सोचा है कि कुर्आन में ये 90 दफ़ा हमें पुकार कर हमसे मुतालबा करता है अल्लाह मियाँ हमें इसमें बहुत सारे अहकाम देना चाहते हैं और इसी तरह बहुत सारे अहकाम ऐसे हैं जो हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में थे और हमारे ज़िम्मे नहीं हैं। मिसाल के तौर पर يـآأيُّهَـا الَّـذِيْـنَ امَـنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا (सूरह बक़रा आयत104) ये हुक्म आज कोई नहीं يـآأيُّهَـا الَّـذِيْـنَ۔ امَـنُـوْا لَا تَـرْ فَـعُـوْا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ (सूरह अल हज्र आयत2) आज ये हुक्म कोई नहीं। يـآأيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّ مُوْالخ (सूरह मुजादला आयत12) ये हुक्म आज कोई नहीं इसी तरह के दस हुक्म ऐसे थे जो हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के साथ ख़ास थे अब कोई नहीं।

फिर इनके अलावा बाक़ी में गौर किया कि इसमें तक्रार कितना है? एक ही हुक्म को अल्लाह पाक बार बार दोहरा रहा है। يـآأيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقَاتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُسْلِمُوْنَ (सूरह अल इमरान आयत102) يـآأيُّهَـا الَّـذِيْـنَ امَـنُـوا ادْخُـلُـوْا فِى السِّـلْـمِ كَافَّةً۔ يـآأيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا۔ يـآأيُّهَا الَّذِيْنَ امَنُوْ اِذَا قُـمْتُـمْ اِلَـى الصَّـلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ इन तमाम तक्रार को जमा कर दिया जाए एक ही हुक्म है बार बार कहा जा रहा है ऐ ईमान वालो! मुसलमान हो जाओ ऐ ईमान वालो! तक़्वा इख़्तियार करो वगैरा तक्रार को अगर जमा किया जाए तो पंद्रह के क़रीब और

निकल जाएंगे तो 30–40 के क़रीब अहकाम रह जाएंगे तो इन 30–40 बातों को आदमी पूरा करें इस अदद को आप हत्तमी न समझें आगे पीछे हो सकता है मैं अंदाज़े से कह रहा हूँ इस वक़्त पूरा मेरे ज़हन में नहीं है जो चंद बातें हैं उन्हें आदमी कर लें तो हमेशा की ज़िंदगी बन जाएगी कितना आसान काम है इसको ज़िंदा करने के लिए हम कहते हैं निकलो भाई! हर मुसलमान चलता फिरता इस्लाम बन जाए और औरतें इस्लाम बन जाएं अल्लाह ने कुर्आन में किसी औरत का नाम नहीं लिया सिवाए मरयम के।

औरत की ज़ात और उसके नाम तक भी पर्दे में हैं अमरीका में आने से क्या अल्लाह का क़ानून बदलेगा? क़ानून वैसे ही रहेगा अगर अल्लाह व रसूल स॰ से मुहब्बत हो तो अमरीका में रहना आसान है अगर मुहब्बत अल्लाह व रसूल स॰ से नहीं है तो मदीने में रहते हुए भी मुशकिल है।

महकमए पुलिस का एक वाक़िआ

मैं इस बात पर आप ही के महकमे का क़िस्सा सुनाता हूँ जब तक हाकिम की अज़मत न हो हुक्म की अज़मत दिल में नहीं आती। हाकिम की अज़मत होगी तो हुक्म की अज़मत आएगी। एक आप के एस॰ पी॰ हैं अब्दुल ख़ालिक़ साहब फ़ैसलाबाद में लगे हुए थे हमने ऐसी बात करते करते उनको तीन दिन के लिए निकाला उनकी ट्रान्सफ़र हो गई फिर उन्होंने चार महीने लगाए। दाढ़ी आ गई वह चिल्ले के लिए फ़ैसलाबाद आ गए तो उस वक़्त जो एस॰ पी॰ था ज़फ़र अब्बास साहब वह मेरा क्लास फ़ैलो था लाहौर में स्कूल में हम इकट्ठे पढ़ते थे हम दोनों उसको मैं और अब्दुल ख़ालिक़ मिलने के लिए गए। वह जो पुलिस का बड़ा थाना है

उसका एक दरवाज़ा बंद रहता है और एक दरवाज़ा खुला रहता है अवाम के लिए हमें वह क़रीब था हम वहाँ से अंदर जाने लगे सामने सिपाही खड़ा था तो अब्दुल ख़ालिक़ साहब ने कहा भाई दरवाज़ा खोलना उसने दोनों को देखा सूफ़ी साहब नज़र आए। उसने कहा उतों आओ (यानी इधर आओ) उन्होंने कहा भाई तेरी बड़ी मेहरबानी खोल दे दरवाज़ा। उसने कहा उतों आओ (यानी इधर आओ) उन्होंने कहा भाई तेरी बड़ी मेहरबानी खोल दे दरवाज़ा। उसने कहा सुनयाईं बंदऐ उतों आओ। पहले तो तब्लीग़ी उसूल अपनाया भाई बड़ी मेहरबानी खोल दे जब वह न माना तो कहा मैं अब्दुल ख़ालिक़ एस॰ पी॰। फिर वह ठक (सलूट ज़ोरदार) चाबी भी निकल आई और ताला भी खुल गया दरवाज़ा भी खुल गया कभी आगे चले कभी पीछे चले सर सर। बाद में मैंने अब्दुल ख़ालिक़ साहब से कहा आज मुझे एक बड़ी बात समझ में आई तेरी बरकत से कहने लगा क्या। मैंने कहा जब तक हाकिम की अज़मत नहीं होगी हुक्म की अज़मत दिल में नहीं आ सकती। उसने आप को पहले कह दिया कि उतों आओ फिर सलूट मार दिया फिर ताला खोल दिया फिर दरवाज़ा खोल दिया फिर आगे पीछे भाग रहा है क्यों। पहले तुम्हें सूफ़ी समझ रहा था फिर तुम्हें एस॰ पी॰ समझा कि यह एस॰ पी॰ तो मेरा बहुत कुछ कर सकता है लिहाज़ा सारा वजूद खुशामद में ढल गया बस यहाँ से कट कर अल्लाह और रसूल स॰ की इताअत नहीं आ सकती। तो भाई एक तरबियत होती है आपने सिपाही बनने की तरबियत ली है नाँ हम मुसलमान बनने की तरबियत लें मुसलमान कौन होता है जो अल्लाह के हुक्म पे उठता है तो भाई ये दो बातें हो गईं कि हम अल्लाह की मानें कैसे मानें अल्लाह के हबीब के तरीक़े पर मानें।

अगर आप ये दो बातें सीख लें नाँ तो मैं आपको मिम्बरे रसूल पर क़सम खा के कहता हूँ कि आपका रात को गश्त करना और हमारा तहज्जुद पढ़ना आप के गश्त का अज्र कल क़यामत के दिन हमारी तहज्जुद से बढ़ जाएगा। आपका ट्रेफ़िक को कंट्रोल करना गरमी में पसीनों पे पसीने बह रहे हैं बुरे हाल हो रहे हैं थक रहे हैं मैं आपको क़सम खाके कहता हूँ हमारा सारा दिन क़ुर्आन पढ़ना और आपके दो घंटे चौक में खड़े होके ड्यूटी देना सारे दिन के क़ुर्आन पढ़ने से ज़्यादा अफ़ज़ल है ये दो बातें पहले सीखें ये शर्त है ये जो दो महकमे हैं ना फ़ौज और पुलिस ये बराहे रास्त इबादत हैं पुलिस का महकमा सबसे पहले हज़रत उमर रज़ि॰ ने क़ायम किया था आपकी बुनियाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने रखी है कैसे पाक हाथों से आप के महकमे की बुनियाद रखी गई है। अगर ये दो बातें पैदा हो जाऐं तो आप का रातों को फिरना मशक़्क़त उठाना जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह कहलाऐगा और आपका उन ज़ालिमों के हाथों शहीद हो जाना सारे गुनाहों की तत्हीर करवा कर जन्नतुल फ़िरदौस के आली दरजात तक पहुंचाऐगा। ये कोई मामूली महकमा नहीं है सारे पुलिस वालों को बुरा समझते हैं। अरे पुलिस वाले तो फ़रिशते बन जाऐं अगर दो बातें सीख लें तो तहज्जुद गुज़ारों से आगे खड़े होंगे क़यामत के दिन। सारे दिन की तसबीह फैरने वाले सारे दिन नफ़िलें पढ़ने वालों से पता चलेगा वह सिपाही आगे जा रहा है जन्नत के आलीशान दर्जों में अरे ये क्या हो रहा है भाई ये मुसलमान की जान माल की हिफ़ाज़त के लिए खपता था तुम अपनी इबादत करते थे तुम और ये बराबर कैसे हो सकते हैं। सारे लोग आप को बुरा समझते हैं आप भी ये कहते हैं कि हम तो भाई हैं ही ऐसे नहीं नहीं आप बड़े क़ीमती हैं अपनी पहचान करें तरीक़ा

ठीक हो बस। ये बराहे रास्त इबादत है तिजारत नहीं में नियत करनी पड़ेगी तब इबादत बनेगी ज़राअत में नियत करनी पड़ेगी तब इबादत बनेगी पुलिस और फ़ौज बराहे रास्त इबादत है लेकिन ये दो बातें जो मैंने पहले अर्ज़ की हैं उनका सीखा हुआ होना ज़रूरी है। फिर अल्लाह से आप के दो नफ़िल वह काम करवाऐंगे जो क्लाशन कौफ़ भी नहीं करवा सकती।

हज़रत अस्मा रज़ि० ने अपना हक़ माफ़ कर दिया

हज़रत ज़ुबैर रज़िअल्लाहु अन्हु अशरए मुबश्शिरा में से हैं हवारिये रसूल स० हैं हुज़ूर स० ने फ़रमाया। ऐ तल्हा रज़ि० ऐ ज़ुबैर रज़ि० जन्नत में हर नबी के हवारी, बॉडी गार्ड समझ लें। आम लफ़्ज़ों में दाऐं बाऐं साथ चलने वाले हर नबी के साथ होंगे। मेरे तुम तल्हा रज़ि० और ज़ुबैर रज़ि० हवारी हो जो मेरे जो मेरे दायें बायें हर वक़्त साथ चलोगे उस हवारी होने तक जो पहुंचना है ये हज़रत ज़ुबैर रज़ि० का पहुंचना हज़रत अस्मा रज़ि० की वज़ह से हुआ है कि हज़रत अस्मा रज़ि० ने अपना हक़ माफ किया अपने हुक़ूक़ माफ किए कि जाओ तुम से मुतालबा नहीं अल्लाह से ले लूंगी। तुम जाओ फिर वह हाल आए खुद अपना हाल सुनाती हैं कि मेरा हाल ये था कि ज़ुबैर रज़ि० हर वक़्त हुज़ूर स० के साथ रहते थे और मेरे घर में कुछ भी नहीं था काम भी खुद करती थी बाहर का भी अंदर का भी। घोड़े का चारा भी लाना और ऊंटों का चारा भी लाना, फिर घर का काम भी करना एक दिन, दो दिन, तीन दिन फ़ाक़ा आया। बाप मौजूद मगर शिकायत नहीं हुज़ूर स० भी मौजूद मगर शिकायत नहीं। ख़ाविंद मौजूद मगर लड़ाई नहीं कि मेरा हक़ अदा करो। औरतें तो जल्दी से मुतालबा करती हैं मेरा हक़ अदा करो। और जो बहन हक़ माफ़ करे कि जन्नत में

इकट्ठा ले लूंगी एक और हदीस से मुतअल्लिक़ सुना दूँ एक आदमी आ रहा है। दूसरा उसके पीछे आ रहा है ऐ अल्लाह उसने मेरा हक़ मारा है हक लेके दो। और वह आदमी ऐसा था कि हक़ दुनिया में दे न सका मजबूरी की वजह से तो अल्लाह तआला फ़रमाएगा क्या लेकर दूँ उसके पास तो कुछ भी नहीं है। वह कहेगा उसकी नेकियाँ लेकर दे दे और मेरे गुनाह उसको दे दे। अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे ऊपर देखो वह ऊपर देखेगा तो जन्नत नज़र आएगी आलीशान अज़ीमुश्शान जन्नत सोने चाँदी के महल्लात। वह कहेगा या अल्लाह ये किस नबी की जन्नत है किस सिद्दीक़ रज़ि॰ व शहीद की जन्नत है तो अल्लाह तआला कहेंगे उनकी नहीं है जो क़ीमत अदा कर दे उसकी है। कहा या अल्लाह उसकी क्या क़ीमत है। कहा जो अपना हक़ माफ़ कर दे ये उसकी है उसने कहा। अच्छा मैं उससे नहीं लेता तुझसे लेता हूँ तू दे मुझ को जन्नत। तो जो औरतें अपने ख़ाविंदों को दीन के लिए आगे आगे बढ़ाऐंगी और अपना हक़ माफ़ कर देंगी उनको अल्लाह देगा अपने ख़ज़ानों से देगा जैसे हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने अपना हक़ माफ़ किया कहती हैं आई भूक न ख़ाविंद से शिकायत न अपने बाप से शिकायत न दरबारे रिसालत स॰ में कोई शिक्वा ख़ुद सब्र और ख़ामोशी के साथ झेल रही है और ज़ात तो क्या मर्द भी भूक में कमज़ोर हो जाता है एक पड़ोसी औरत ने जो यहूदी औरत थी बकरी ज़बह करके उसका गोश्त पकाना शुरू कर दिया। अब जो उठी ख़ुशबू तो कहने लगी मैं भूक से बेताब हो गई और मैं गई मैंने कहा आग लेने जाती हूं। इसी बहाने से एक आध बोटी मुझे भी खिला देगी कहने लगी उस अल्लाह की बंदी ने हाल भी न पूछा। मेरे हाथ में आग पकड़ा दी। मेरे घर में तो कुछ तिन्का भी

न था पकाने का मैं आग को क्या करती मैंने आग फैंक दी फिर बैठ गई सब्र नहीं आया फिर गई आग लेने उसने आग दे दी खाने का पूछा नहीं फिर आग ला के फैंक दी। फिर सब्र नहीं आया। ये सारा मंज़र अल्लाह देख रहा है ये चाहती तो अपने ख़ाविंद से हक़ का मुतालबा कर के घर में बिठा लेती नहीं बिठाया तो नबी स॰ का हवारी बना दिया और नबी स॰ के हवारी को जो जन्नत मिलेगी तो हज़रत अस्मा रज़ि॰ उसमें नहीं जाऐंगी? अस्मा रज़ि॰ भी तो वहीं जाऐंगी। अल्लाहुअक्बर। कैसी अक़्लमंद औरतें थीं और क्या अक़्लमंद मर्द थे कि दुनिया की थोड़ी सी तक्लीफ़ उठा के इतने सौदे कर लिए कहने लगी तीसरी मरतबा फिर गई उसने आग तो दे दी खाने का पूछा नहीं फिर मैं आके बैठ के बहुत रोई। मैंने कहा ऐ अल्लाह किसको कहूँ अब मैं किस को कहूँ तू ही है अब तू ही दे, मैं किस को कहूँ अब अल्लाह को रहम आया। यहूदी आया खाना खाने के लिए उसने गोश्त का प्याला सामने रखा कहने लगा आज कोई आया था घर में? कहने लगी ये पड़ोसन अरब औरत आई थी आग लेने के लिए दो तीन दफ़ा मैं बाद में खाऊंगा पहले इतना ही प्याला उसको देके आओ प्याला भरा हुआ और मैं अंदर ही बैठी रो रही थी। ऐ अल्लाह मैं क्या करूं ऐ अल्लाह मैं क्या करूं ऐ अल्लाह मैं क्या करूं तो खाना लेकर आई सामने रखा कहने लगी ये वह नेमत थी जो मेरे लिए उस वक़्त सारी दुनिया से बेहतर थी। अल्लाहुअक्बर इस्लाम ऐसे नहीं फैला दीन ऐसे नहीं फैला इसके पीछे बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ हैं सहाबा रज़ि॰ की माँऐं अगर अपने बच्चों को जैसे हमारी माँऐं कहती हैं मेरी आँखों के सामने रहो मेरी आँखों के सामने रहो। बीवी कहती है मेरे हुक़ूक़ अदा करो अगर सहाबा किराम रज़ि॰ की बीवियाँ भी ऐसी होतीं तो

आज हिन्दुस्तान में इस्लाम कैसे होता।

जवानी में शहादत

हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ के बेटे थे अब्दुल्लाह रज़ि॰ हज़रत आतिका रज़ि॰ से शादी की। वह थी बड़ी ख़ूबसूरत और बड़ी शाएरा आक़िला ऐसी मुहब्बत आई कि जिहाद में जाना छोड़ दिया हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने समझाया कि बेटा ऐसा न कर। मुहब्बत ग़ालिब आई समझ न सके आप रज़ि॰ ने हुक्म दिया तलाक़ दो। ये हर माँ बाप के कहने पर तलाक़ देना जाएज़ नहीं होगा। अबू बक्र रज़ि॰ जैसा बाप कह रहा है जो दीन को समझता है जो दीन को समझता ही नहीं कि किस वक़्त क्या करना है हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने कहा तलाक़ दो। दे दी तलाक़ बड़े ग़मगीन बड़े परेशान उसे क्या ख़बर फिर शेअर पढ़ने लगे (तर्जुमा) ऐ आतिका मैं तुझको नहीं भूल सकता जब तक सूरज चमकता रहेगा हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ने कहीं सुन लिया तो तरस आया फ़रमाया अच्छा भाई दोबारा शादी कर लो लेकिन वह हमारी तरह से तो थे नहीं कि ठक से तीन तलाक़ दी दोबारा शादी कर ली लेकिन वह जो ताज़ियाना लगा फिर घर में नहीं अल्लाह के रास्ते में तीर लगा वही तीर मौत का ज़रिआ बना है वह भी तीस साल की उम्र जो जवान शहज़ादे की लाश आतिका रज़ि॰ के सामने आ जाती है फिर हज़रत आतिका ने शेअर पढ़े हैं (तर्जुमा) मैं क़सम खाती हूँ कि आज के बाद मेरे जिस्म से कभी गुबार जुदा नहीं होगा मैं क़ुर्बान उस जवान पर कि जो अल्लाह की राह में मरा और मिटा और आगे ही बढ़ के मरा और आगे ही बढ़ के मिटा मौत को गले लगाया और पीछे लौट के न आया जब तक ज़माना क़ायम है और जब तक बुलबुलें दरख़्तों पर बैठ कर नग़मे गा रही

हैं और जब तक रात के पीछे दिन और दिन के पीछे रात चल रही है ऐ अब्दुल्लाह तेरी याद भी मेरे सीने में हमेशा नासूर की तरह रिस्ती रहेगी ये ऐसे घर उजड़े और इस्लाम यहाँ तक पहुंचा हाँ आज बाज़ार आबाद हुए इस्लाम जुड़ गया मैं आप को तब्लीग़ी जमाअत की दावत नहीं दे रहा बल्कि ख़त्मे नुबूव्वत की ज़िम्मेदारी अर्ज़ कर रहा हूँ कि आप के ज़िम्मे है मैं नहीं लगा रहा मैं तो ज़िम्मेदारी ऊपर वाली पहुंचा रहा हूँ तो इस सारे दीन की मुहब्बत का ख़ुलासा ये दो बातें हैं।

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० की मौत का वाक़िआ

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० को सकरात तारी जंगल में पड़े हुए बयाबान एक बेटी एक बीवी कोई साथ नहीं। हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० की बीवी कहने लगी। كربا وهزنا हाय ग़म अबू ज़र रज़ि० कहने लगे क्यों क्या बात है कौन तेरा जनाज़ा पढ़ेगा कौन तुझे गुस्ल देगा। कौन तेरी क़ब्र खोदेगा कौन तुझे कफ़न देगा। हमारे पास तो कुछ भी नहीं है उस वक़्त कफ़न का कपड़ा भी कोई नहीं था। तो अबू ज़र कहने लगे। وما كذبت अल्लाह की बंदी मैं न झूट बोल रहा हूँ न मुझ से झूट कहा गया है मैं एक महफ़िल में था मैंने अपने हबीब स० से सुना। इन कानों ने सुना याद रख कि आपने फ़रमाया था कि तुम में يعيش وحيداً ويموت وحيدًا ويحشر وحيدًا ويصلى عليه طائفة من المسلمين कि तुम में से एक अकेला ज़िंदा रहेगा अकेला मरेगा। अकेला उठेगा और उसकी नमाज़े जनाज़ा मुसलमानों की एक जमाअत पढ़ेगी और मैं देख रहा हूँ अकेला मरने लगा हूँ मेरे रब की क़सम मेरे नबी का फ़रमान لاريب فيه है इसमें कोई शक नहीं मुझे ये नहीं पता कि कहाँ से आऐंगे और कौन आऐंगे लेकिन कोई आएगा मेरा जनाज़ा

पढ़ने ज़रूर आएगा कहने लगी وانى कहाँ से आएगा। وقد انقطع الحاج जबकि हज का ज़माना गुज़र गया रब्ज़ा मक्का और इराक़ की दरमियान रास्ता पड़ता था जो हाजी इराक़ से आते थे रब्ज़ा से गुज़रते थे तो बीवी ने कहा हाजी चले गए हज सर पर आ गया अब हाजी भी कोई नहीं आएगा इतने क़रीब उम्रे करने कौन आता है तो लिहाज़ा अब मुझे तो कोई शक्ल नज़र नहीं आती कहा चल चल। تبغى الطريق जा देख रास्ता कोई आएगा एक दिन गुज़रा कोई नहीं आया दूसरा दिन गुज़रा कोई नहीं आया और वह तीसरे दिन आख़िरी दमों पर हैं तो बेटी को बुला कर फ़रमाया बेटी मेरे मेहमान आऐंगे जनाज़ा पढ़ने के लिए खाना तय्यार किया जाए इतना यक़ीन। لاريب فيه ऐसा यक़ीन कि तीन दिन गुज़र चुके हैं सांस उखड़ चुका है बेटी को बुला कर कह रहे हैं बेटी खाना पकाओ आज मेहमान आऐंगे मेरा जनाज़ा पढ़ा जाएगा थोड़ी देर गुज़री तो देखा कि गुबार उड़ रहा है तो उनकी बीवी ने खड़े होकर हाथ हिलाए तो उनकी सवारियां तीन ऊंटनियों पर सवार कौन? अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ और उनके साथ उन्तीस आदमी तो बीवी ने कहा कि هل لكم من رغبة الى ابى ذر رضى الله عنه कहा क्या तुम्हें अबू ज़र रज़ि॰ की रग़बत है उन्होंने कहा क्या हुआ وهوفى سياقةالموت कहा वह सकरात में हैं कोई जनाज़ा पढ़ने वाला नहीं तो सारे रोने लग पड़े तो अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि॰ ने कहा। نفديه امهاتهاو اباء نا हमारे माँ बाप अबू ज़र रज़ि॰ क़ुर्बान हम क्यों न करेंगे दौड़ कर गए वह आख़िरी दमों पर थे कहने लगे भई मुझे कफ़न दो। जिसने कभी हुकूमत का कोई काम न किया हो वह मुझे कफ़न दे तो ये सब आने वाले सारे ही कुछ न कुछ कर चुके थे एक अंसारी नौजवान ने कहा मैंने आज तक हुकूमत

का कोई काम नहीं किया ये मेरी माँ ने अपने हाथ से इहराम की चादरें बनाई हैं कहा कि बस तू मुझे कफ़न देगा और जब इंतिक़ाल हो गया जनाज़ा पढ़ाया गया फ़ारिग़ होकर चलने लगे तो बेटी ने कहा खाना तय्यार है खा लीजिए कहा कैसे पता हैं आपको कहा मेरे अब्बा ने कहा था कि मेरे मेहमान आऐंगे मेरा जनाज़ा पढ़ने आऐंगे उनके लिए खाना तय्यार करके रखना है कहीं मेरी मौत की मशग़ूली तुम्हें उनकी ख़िदमत से ग़ाफ़िल न कर दे तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि॰ रोने लगे और कहा वाह अबू ज़र रज़ि॰ तू तो ज़िंदा भी सख़ी और मर कर भी सख़ी (ये सहाबा कैसे पहुंचे थे) हज़रत उस्मान रज़ि॰ को ख़ुसूसी तक़ाज़ा पेश आया अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ के साथ क़ुर्आन पाक (की इशाअत) के मशवरे के बारे में कहा अब्दुल्लाह फ़ौरन मेरे पास पहुंचो! चाहे तुझे हज मिले या न मिले। हज़रत उस्मान रज़ि॰ का अम्र पहुंचा और वह वहाँ से निकले हैं उम्रे की नियत कर के क्योंकि हज पर तो पहुंच नहीं सकते थे (हक़ीक़त ये है कि) वह उम्रे के लिए नहीं निकले हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने नहीं बुलाया था। अबू ज़र रज़ि॰ ने बुलाया था हबीब स॰ के फ़रमान ने बुलाया था कि मेरे एक सहाबी का वक़्त आ चुका है और मैं कह चुका हूँ कि उसका जनाज़ा पढ़ाया जाएगा और मेरी उम्मत की एक जमाअत पढ़ेगी। निकलो उम्रे का बहाना बना हज़रत उस्मान रज़ि॰ के बुलाने का बहाना बना वह तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कलाम पूरा हुआ।

तो आज हमने لا ريب فيه नहीं सीखा इसलिए क़ुर्आन मजीद समझ में नहीं आता क़ुर्आनी ज़िंदगी समझ में नहीं आती वह अमल समझ में नहीं आ रहा इसके लिए दरबदर ठोकरें खानी पड़ेंगी।

धक्के खाने पड़ेंगे बसयार सफ़र बायद ता पुख़्ता शूद ख़्वानी कितने धक्कों के बाद पुख़्तगी पैदा होती है तो मेरे भाइयो! सहाबा किराम ने कुर्आन मजीद का لاريب فيه सीखा पंखे के नीचे बैठ कर नहीं छत के नीचे बैठ कर नहीं कभी बदर के मैदान में कभी उहुद के मैदान में कभी हुनैन के मैदान में कभी तबूक के सफ़र में कभी ख़ैबर के सफ़र में कभी किसी सफ़र में कभी किसी हिज्रत में कभी किसी तरफ़ कभी किसी तरफ़ कुर्आन मजीद एक जगह नहीं आया जो अल्लाह तआला ने कह दिया वह होकर रहेगा वह हक़ सच है सारी दुनिया के इंसान उसके सामने कुछ हैसियत नहीं रखते ये भी सीखना पड़ेगा। ये सीखेगा तो कुर्आन भी समझ में आएगा ये सीखेगा तो दीन भी समझ में आएगा ये नहीं सीखेगा तो कुछ भी समझ में नहीं आएगा सब ऊपर ऊपर से गुज़र जाएगा।

सब्रे अय्यूब अलैहिस्सलाम

अय्यूब अलैहिस्सलाम के बारे में तो पता ही होगा कि 18 बरस बीमार रहे और सारा जिस्म गल गया आबले छाले ये वह अट्ठारा बरस की बीमारी ऐसी बीमारी शायद ही दुनिया में किसी पर आई इम्तिहान था पर अल्लाह ने सेहत भी दे दी तो एक दिन किसी ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी याद आते हैं कहने लगे तुम्हें बताऊं बीमारी के दिन आज के दिनों से ज़्यादा अच्छे थे कहा तौबा तौबा वह कैसे अच्छे थे कहा जब मैं बीमार था तो अल्लाह तआला रोज़ाना मेरा हाल पूछते थे अय्यूब क्या हाल है बस वह जो कहते थे ना क्या हाल है उसमें जो लज़्ज़त थी मेरे सारे ज़ख़्मों के दर्द निकाल देती थी। और जब अल्लाह को आप देख रहे हों उनकी आंखों से देख रहे हों फिर अल्लाह का नाम लेकर क्या हाल है। फ़ातमा क्या हाल है अबू बक्र क्या हाल है भाई ऐहसान क्या हाल

है। और ज़ैनब क्या हाल है फ़ातमा क्या हाल है वह क्या इंतिहा होगी अब अपनी परवाज़ तो सोचें क्यों गारे मिट्टी के पीछे अपनी आक़िबत को बरबाद कर रहे हो। कपड़ा जो फट कर पुराना हो जाए तो कूड़े करकट के ढेर में जा गिरे, वह हुस्न जिस पर बुढ़ापा छा जाए वह राहत जो बेचैनी से बदल जाए वह भी कोई चीज़ है जिसके लिए आदमी अपनी आक़िबत को ख़राब करे क्यों दीवाने बन गए। अल्लाह तआला कहेगा रिज़वान से रिज़वान (रिज़वान जन्नत के एक फ़रिशते का नाम है) रिज़वान ये मेरे बंदे और बंदियाँ मेरे दीदार को आए हैं आज पर्दा हटा दे कि ये मुझे देख लें जी भर के अब पर्दा हटेगा और अल्लाह पाक। سلام قولا من رب الرحيم (सूरह यासीन आयत58) ऐ मेरे बंदे तुम्हारा रब तुम्हें सलाम कहता है। अल्लाहुअक्बर। तो फिर वह फ़रिशते जो जब से सज्दे में पड़े हैं और जब से रुकू में पड़े हैं और जब से अल्लाह की तस्बीह पढ़ रहे हैं वह भी अल्लाह को देखकर कहेंगे या अल्लाह हम तेरी इबादत का हक़ न अदा कर सके। कहाँ तू हम वैसे ही हैं नाहन्जार। तो जब अल्लाह को देखेंगे या अल्लाह आप ऐसे जमाल वाले हमें तो ख़बर नहीं थी। हमें एक सज्दे की इजाज़त दें कि हम आप को सज्दा करें तो अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे।

قدو دعت انكم موعون تستجود تعلم اتبعتم لی لايدان
وانسكتم لی الوجوه قل ان اقضيتم الی روحی ورحمتی و
كرامتی هذا محل كرامتی سلونی۔

अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे नहीं नहीं अब तुम मेहमान मैं मेज़बान और कोई मेहमान को तो नहीं कहता जा रोटी ख़ुद खा के आ। बख़ील से बख़ील ये नहीं गवारा करेगा कि उसके घर मेहमान आ जाए तो रोटी बाहर से खाए। तो अल्लाह से ज़्यादा बड़ा सख़ी

कौन है। अल्लाह तआला फ़रमाऐंगे तुम मेहमान मैं मेज़बान, दुनिया में जो सज्दे किए। दुनिया में जो मेरे लिए किए थे वही काफ़ी हैं। आज तुम मुझसे मांगो और मैं तुम्हें दूंगा और मैं तुम्हारा रब तुम से राज़ी हूँ

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ۔ (सूरह अल हाक्का आयत24)

खाओ पियो मज़े करो तुम से हर पाबंदी को मैंने उठा दिया है मांगो कहेंगे या अल्लाह क्या मांगें सब कुछ तो दे दिया और क्या मांगें कहा नहीं। कुछ और मांगो कहेंगे अच्छा राज़ी हो जा कहेंगे राज़ी हूँ तो तुम्हें दीदार करा रहा हूँ राज़ी हूँ, तो तुम्हें जन्नत में बिठा रहा हूँ राज़ी हूँ तो तुम से हमकलाम हो रहा हूँ कुछ और मांगो तो मांगना शुरू करेंगे तो मांगते मांगते उनकी सारी अक़्ल की ताक़तें जवाब दे जाऐंगी। अल्लाह तआला फिर कहेंगे नहीं कुछ नहीं मांगा और मांगो एक बात बताओ दरमियान में इंसान का दिमाग़ सिर्फ़ चार पाँच फ़ीसद काम करता है बाक़ी सारा सोया हुआ है जो पढ़ते हैं उनका सात आठ फ़ीसद हो जाता है जो और ज़्यादा मेहनत करते हैं कोई नौ फ़ीसद है। आइन्सटाईन का दिमाग़ देखा गया तो 2–11 फ़ीसद उसका इस्तेमाल हुआ था बाक़ी उसका भी सोया हुआ था तो जन्नत में दिमाग़ के सारे सैल खुल जाऐंगे और सारे सैल काम कर रहे होंगे फिर उस पूरे दिमाग़ की ताक़त से मांगते मांगते थक जाएगा अल्लाह तआला फ़रमाएगा कुछ नहीं मांगा और मांगो फिर शुरू होंगे मांगा करेंगे फिर अब सोच में पड़ जाऐंगे अब क्या करें कोई इधर से कोई उधर से पूछेंगा कोई नबी से पूछगा कोई किसी से पूछेगा फिर मांगना शुरू करेंगे वाह मेरे बंदो तुमने तो अपनी शान का भी न मांगा मेरी शान का कहाँ से मांग सकते हो चलो जो तुमने मांगा वह दिया जो नहीं

मांगा वह भी दिया। जाओ चले जाओ मैं तुम्हारा रब तुम पर मेहरबान हूँ राज़ी हूँ मौत को मौत दे दी और बुढ़ापे को ख़त्म कर दिया ग़म को ख़त्म कर दिया मुसीबत को ख़त्म कर दिया इस ज़िंदगी की तरफ़ फिर अल्लाह ने कहा।

وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ۔

ऐ मेरे बंदो! इस पाक ज़िंदगी को लेने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाओ।

उम्मते अहमद स॰ की अज़मत

एक यहूदी कहने लगा हज़रत उमर रज़ि॰ से, तुम्हारे नबी का कोई दर्जा नहीं तो आप रज़ि॰ ने उसके मुंह पर ज़ोर से थप्पड़ मारा। वह रोता हुआ आप स॰ के पास आया। पूछा क्या हुआ कहा मुझे उमर ने मारा है। पीछे हज़रत उमर रज़ि॰ थे। पूछा तूने क्यों मारा है। कहने लगा इसने आपकी शान में गुस्ताख़ी की है। कहा ऐ उमर रज़ि॰ इसे राज़ी करो। यहूदी तू सुन! मैं इब्राहीम ख़लील, मूसा कलीम, ईसा रूह, अल्लाह का हबीब हूँ फ़ख़ से नहीं कहता। फिर आप एक दम अपनी ज़ात से हटे अपनी उम्मत पर आए। मेरा क्या पूछता है मेरी उम्मत का पूछ। अल्लाह ने अपने दो नामों में से मेरी उम्मत का नाम चुना है। अल्लाह का नाम सलाम है। मेरी उम्मत का नाम मुस्लिमीन है। अल्लाह का नाम मोमिन है। मेरी उम्मत का नाम मोमिनीन है। तुम पहले आए हम तुम्हारे बाद में आए। जन्नत में तुम से पहले जाएंगे। आप स॰ ने फ़रमाया मैं जन्नत में ऊंटनी पर सवार होकर जाऊंगा और मेरी ऊंटनी की नकील बिलाल हबशी के हाथ में होगी और वह मेरे साथ साथ जन्नत में सबसे पहले जाएगा। फिर आप ने अबू बक्र को देखा मैं एक आदमी को जानता हूँ जिसके माँ बाप को भी जानता हूँ

जन्नत में आएगा तो आठों दरवाज़े खुल जाऐंगे। फ़रिशते कहेंगे मरहबा मरहबा इधर आऐं। सलमान फ़ारसी ने गर्दन उठाई। इस ऊंची शान वाला कौन है या रसूलुल्लाह? आप ने फ़रमाया ये अबू बक्र रज़ि.।

फिर आप ने फ़रमाया अल्लाह लोगों को दीदारे आम कराऐगा। अबू बक्र को दीदारे ख़ास कराऐगा। फिर आप स. ने फ़रमाया मैंने जन्नत में महल देखा जिसकी ईंट याकूत की है। मैंने समझा मेरा है। मैं उसमें जाने लगा तो दरबान ने कहा ये तो उमर रज़ि. बिन ख़त्ताब का महल है। या रसूलुल्लाह स.! आप ने फ़रमाया तेरा गुस्सा याद आया इसलिए अंदर नहीं गया हूँ वरना अंदर जाकर देख ही लेता। हज़रत उमर रज़ि. रोने लगे कहा मैं आप पे गुस्सा खाऊंगा या रसूलुल्लाह स.! फिर आप स. ने हज़रत उस्मान रज़ि. को देखा। उस्मान ऐ उस्मान जन्नत में हर नबी का एक साथी है। मेरा साथी तू है ऐ उस्मान, फिर आपने हज़रत अली रज़ि. का हाथ पकड़ा। हाथ पकड़ के अपनी तरफ़ खींच कर फ़रमाया ऐ अली रज़ि. तू राज़ी हो जन्नत में तेरा घर मेरे घर के सामने होगा। तू फ़ातमा के साथ उस घर में मेरे सामने रहेगा। हज़रत अली रज़ि. रोने लगे। मैं राज़ी हूँ या रसूलुल्लाह स.! फिर आप ने तल्हा रज़ि. और ज़ुबैर रज़ि. को कहा! ऐ तल्हा रज़ि.! ऐ ज़ुबैर रज़ि. जन्नत में हर नबी के मददगार दरबान जैसे बादशाहों के दाऐं बाऐं खड़े होते हैं। कहा ऐसे दाऐं बाऐं तल्हा और ज़ुबैर होंगे। अल्लाह ने इस उम्मत को इज़्ज़त बख़्शी। लोगों को जन्नत का शौक़ और जन्नत को हज़रत सलमान का शौक़। हज़रत मिक़्दाद का शौक़, हज़रत अली का शौक़। एक हदीस में आता है जन्नत को मिक़्दाद का शौक़ है अली व सलमान का शौक़ है ये कहाँ से इज़्ज़त आई।

ख़त्मे नुबूव्वत का काम मिला है। (लम्बी उम्रों की वजह से) नमाज़ें तो पहली उम्मतों की ज़्यादा, रोज़े उनके ज़्यादा, हज उनके ज़्यादा, ज़कात उनकी ज़्यादा, दर्जा हमारा ज़्यादा, मूसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत से अच्छी भी कोई उम्मत है। जिस पर बादलों के साए हुए, मन्न सलवा आए, अल्लाह तआला ने फ़रमाया आप को पता नहीं है कि ऐ मूसा, सारी उम्मतों पर उम्मते अहमद को वह इज़्ज़त हासिल है जो मुझे मख़्लूक़ात पर हासिल है।

जब अल्लाह की मदद आई

हुज़ूर स॰ मक्के में दाख़िल हो रहे हैं ख़ालिद रज़ि॰ बिन वलीद का लशकर साथ है। अबू सुफ़्यान ऊपर खड़ा देख रहा है। लशकरों पर लशकर गुज़र रहे हैं ख़ालिद रज़ि॰ बिन वलीद गुज़रते हैं। मुसलमानों के लशकर लेकर तक्बीर पढ़ते हुए निकलते हैं। ज़ुबैर रज़ि॰ इब्ने अव्वाम आते हैं और और लशकर को लेकर निकलते हैं अबू ज़र गिफ़ारी रज़ि॰ आते हैं और लशकर को लेकर निकलते हैं और बुरीद बिन ख़ज़ीब आते हैं और लशकर को लेकर निकलते हैं। और बनू बक्र आते हैं लशकर को लेकर निकलते हैं और जैना क़बीला आता है। नौमान इब्ने मक़रन रज़ि॰ की सरकर्दगी में और लशकर को लेकर निकल रहा है लशकरों के लशकर निकल रहे हैं। अबू सुफ़्यान हैरान होकर देख रहा है और इतने में आवाज़ आती है और सारी गर्दो गुबार उठती है और कहने लगा ये क्या है? हज़रत अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं। ये अल्लाह का रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है जो मुहाजिरीन और अंसार में आ रहा है और जब लशकर सामने आता है तो एक आदमी की आवाज़ है। इस में कड़कदार आवाज़ है। अबू सुफ़्यान कहता है

कि किसकी कड़कदार आवाज़ सुन रहे हैं। अब्बास रज़ि० कहते हैं ये ख़त्ताब का बेटा उमर रज़ि० है। जिसकी तुम कड़कदार आवाज़ सुन रहे हो। अरे अल्लाह की क़सम ये बनू अदी ज़िल्लत और क़िल्लत के बाद आज बड़ी इज़्ज़त वाले हो गए। इस्लाम ने उमर रज़ि० को ऊंचा किया है उमर रज़ि० ऊंचा नहीं था इस्लाम ने उमर रज़ि० को ऊंचा किया है उस पर कहने लगा अरे अब्बास रज़ि० तेरे भतीजे का मुल्क तो बहुत बड़ा हो गया। हज़रत अब्बास रज़ि० ने कहा नहीं नहीं ये मुल्क नहीं है ये शाने नुबूव्वत है। बादशाह ऐसे नहीं हुआ करते। दस हज़ार का लशकर है और आपका माथा ऊंटनी के पालान के साथ टिका हुआ है सर ऊंचा नहीं झुका हुआ पालान से टिका हुआ और ज़बान से अल्फ़ाज़ अल्लाह एक अकेला तने तन्हा अकेला तने तन्हा। किसी दस हज़ार पर नज़र नहीं है अल्लाह की ज़ाते आली पर नज़र है मेरे भाइयो! हमें मादियत ने और दुनिया ने हलाक और बरबाद कर दिया। मुसलमान भी कहता है कि पैसा होगा तो काम चलेगा पैसा नहीं तो कोई तेरा कोई रिशतेदार नहीं। पैसा नहीं तो कोई सलाम करने वाला नहीं। पैसा नहीं तो कोई तेरा काम नहीं। तो मेरी और काफ़िर की सोच में क्या फ़र्क़ है। मैं और काफ़िर एक तराज़ू में आज बैठे हुए हैं कि मैं भी कहता हूँ कि मेरा काम पैसे से चलेगा तो काफ़िर से पूछो तेरा काम कैसे चलेगा कहता है। पैसे से चलेगा। तो मैं और काफ़िर एक पल्ड़े में बैठे हैं यक़ीन के ऐतबार से मैं नमाज़ भी पढ़ता हूँ रोज़ा भी रखता हूँ। मैं हज भी करता हूँ लेकिन मेरे अंदर की दुनिया और काफ़िर के अंदर की दुनिया एक हो चुकी है। मुसलमान ये नहीं कहता कि पैसा नहीं तो रिशता नहीं पैसा नहीं जो कोई जान वाक़फ़ियत नहीं पैसा नहीं तो कोई सलाम नहीं

करता। नहीं नहीं मुसलमान कहता है अल्लाह पाक साथ है तो सब हो जाएगा। तक़्वा आ जाए तो सब काम बन जाए तवक्कुल आ जाए तो सब काम बन जाएगा। ज़ुहद आ जाए सब काम बन जाएगा। दुनिया से नफ़रत हो जाए तो सब काम बन जाएगा नमाज़ पढ़नी आ जाए तो सब काम बन जाऐंगे। हम पैसे के मोहताज नहीं हुकूमत के मोहताज नहीं हुकूमत हमारी मोहताज है। हमें हुकूमत की ज़रूरत नहीं है हम नमाज़ पढ़ने वाले बन जाऐं। ऐसी नमाज़ सीख लें जो रब के ख़ज़ाने के दरवाज़े खुलवा दे। हमारा काम बन जाएगा अल्लाह मख़्लूक़ को छुपा देगा मख़्लूक़ को ताबे कर देगा। एक है तने तन्हा अल्लाह आज अपना वादा पूरा कर रहा है।

मेरे दोस्तो! दीन सस्ता नहीं है क्या ख़्याल है तुम सिर्फ़ कल्मा पढ़कर जन्नत में चले जाओगे। नहीं मेरी आज़माइश आएगी। मैं खरे खोटे को अलग अलग करूंगा। मैं दखूंगा कल्मे में कौन सच्चा है तुम्हें आज़माइश में डालूंगा आज़माइश आएगी मेरा कल्मा पढ़ने के बाद तुम्हें आज़माया जाएगा। एक तरफ़ दुनिया खड़ी कर दूंगा और एक तरफ़ कल्मा खड़ा कर दूंगा। दुनिया कहेगी मेरे तक़ाज़े पूरे कर। कल्मा कहेगा मेरा तक़ाज़ा टूट जाएगा। बीवी कहेगी मेरी ज़रूरत पूरी कर। कारोबार कहेगा मैं टूट जाऊंगा। मैं तेरी मईशत और अपने अम्र के मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा मैं तेरी ज़रूरत को और अपने हुक्म को मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा। मैं तेरी नफ़्सानियत को और अपने हुक्म को मुक़ाबले में खड़ा कर दूंगा। हुकूमत को देखना है तो मेरा अम्र क़ुर्बान होता है। मेरे अम्र को देखना है तो हुकूमत क़ुर्बान होती है तू कहाँ पर जाएगा तंबीह के लिये फ़रमा रहे हैं। तंबीह के लिये लो आज इस्लाम गर्दिश में बेहरकत है। तुम भी उसके साथ हरकत में रहना। गर्दिश में रहना

एक वक़्त आएगा। मेरी किताब अलग हो जाएगी हुकूमत अलग हो जाएगी। हुकूमत के चक्कर में मत पड़ना। हुकूमत के पीछे मत पड़ना। मेरी किताब को पकड़ लेना। आज़माइश डालूंगा अगर अल्लाह का अम्र लेता है तो हुकूमत गई। सारी तिजारत की छुट्टी होती नज़र आती है।

राबिआ बस्री रह० से मुलाक़ात

राबिआ बस्री रह० का इंतिक़ाल हो गया, तो ख़्वाब में अपनी ख़ादिमा को मिलीं, उन्होंने कहा कि अम्मां आपके साथ क्या हुआ? कहा मेरे पास मुन्किर नकीर आए, मुझसे कहने लगे من ربك तेरा रब कौन है? तो मैंने उनसे कहा कि सारी ज़िंदगी जिस रब को न भूली, चार हाथ नीचे ज़मीन पर आकर उसको भूल जाऊंगी? ये नहीं कहा कि ربى الله कहा कि जिस रब को सारी ज़िंदगी नहीं भूली, उसको चार हाथ ज़मीन के नीचे आकर भूल जाऊंगी। उन्होंने कहा कि छोड़ो इसका क्या हिसाब लेना।

कहने लगी कि आपकी गुदड़ी का क्या बना? गुदड़ी होती है एक लम्बा सा जुब्बा जो अरब पहनते हैं, हमारे हाँ इसका कोई दस्तूर नहीं तो हज़रत राबिआ रज़ि० ने कहा था कि मुझको कफ़न मेरी गुदड़ी में ही दे देना, मेरे लिए नया कपड़ा न लाना।

लेकिन उनकी ख़ादिमा ने देखा कि बहुत आलीशान पोशाक पहनी हुई, कहने लगी कि वह गुदड़ी कहाँ गई? कहा कि अल्लाह ने संभाल कर रख दी है कि क़यामत के दिन मेरी नेकियों में उसको भी तो लेगा उसका भी वज़न करेगा।

रक़्क़ासा का क़ुबूले इस्लाम

क़ेनेडा हमारी जमाअत गई थी, तो वहाँ एक कर्नल अमीरुद्दीन साहब हैं। हिन्दुस्तान के हैं लेकिन वहीं आबाद हैं तो Danvir में

एक क्लब मुसलमान का क्लब। जहाँ नाच गाना होता है तो वहाँ गश्त में गए। बूढ़े आदमी थे इसलिए उनको भेजा। वहाँ क्या हो रहा था? कि वहां एक लड़की स्टेज के ऊपर नंगी नाच रही थी और एक लड़का उसके साथ ड्रम बजा रहा था। यानी साथ साज़, और देखने वाले कौन थे? सारे मुसलमान बैठे हुए थे। अरब, शराब पी रहे हैं और ये हमारे कर्नल अमीरुद्दीन साहब थे, बड़े बारौब आदमी थे। इतना बड़ा चेहरा, सफ़ेद दाढ़ी फैली हुई है वैसे, रहे भी फ़ौजी थे तो उन्होंने जाते ही एक दम ज़ोर से डांटा, वह लड़की भी चुप हो गई और वह रक़्स भी रुक गया। जो शराब पी रहे थे वह एक दफ़ा हिल गए उनकी बारौब शख़्सियत। क्या बात है? बात सुनो मेरी, उनको दावत दी, और जब वह दावत देने लगे तो वह जो लड़की थी वह चुपके से स्टेज से उतरी और मेज़पोश जो होटल में पड़े होते हैं वह उतार उतार कर उसने अपने ऊपर बांध लिए। नीचे भी ऊपर भी और उसने अपना सारा जिस्म ऐसे छुपा लिया। उन्होंने दावत दी उनकी तो समझ नहीं आई वह तो सारे शराब में मस्त पड़े हुए थे उनको पता नहीं कि मेरे पीछे लड़की आकर खड़ी हो गई है। वह पीछे से बोलीं कि जो बात आप ने उनको समझाई है मुझे समझ में आ गई है......उनको नहीं आई। आप मुझे बताऐं मैं क्या करूं? मैं ये ज़िंदगी चाहती हूँ तो उन्होंने कहा बेटी हम कल्मा पढ़ने को कहते हैं। मुझे पढ़ा दें वह वहीं उसने कल्मा पढ़ा तो साथ कहने लगी कि ये मेरा ख़ाविंद है जो ड्रम बजा रहा था। इसको भी कल्मा पढ़ाओ। दोनों मियाँ बीवी ने कल्मा पढ़ा। अब हमें क्या करना है, कहने लगे कि हमारी जमाअत यहीं है तीन दिन हमारे पास आती रहो, हम बताते रहेंगे।

तो दोनों मियाँ बीवी आते रहे, और ये कर्नल साहब उनको

बताते रहे, फिर जब वापस जाने लगे तो उन्होंने फ़ोन नम्बर दिया। वहाँ Danvir में इस्लामिक सेन्टर का पता भी दे दिया कि जब कोई ज़रूरत पड़े तो हम से राबता कर लेना। दो महीने के बाद उस लड़की का फ़ोन आया Toranto में थे। हैलो मिस्टर कर्नल अमीरुद्दीन मेरा ख़्याल है वह रक़्क़ासा है जिनके साथ Danvir में बातचीत हुई थी। हाँ मैं वही हूँ। क्या हुआ? कहा एक मस्ला पैश आ गया है। क्या मस्ला पैश आया? कहने लगी बहुत ज़बरदस्त मस्ला है बताओ तो सही क्या हुआ है? तो कहती है कि जब मैं नाचती थी तो एक रात का पाँच सौ डालर लेती थी यानी तीस हज़ार रुपये एक रात का लेती थी। जब मैं इस्लाम में आई तो पता चला कि इस्लाम तो औरत को बाहर निकलने की इजाज़त नहीं देता। तो अब मैंने अपने ख़ाविंद से कहा कि अब तू कमा मैं घर में हूँ। तो उसको कोई तो शुग़ल नहीं आया उसने एक फ़ैक्ट्री में मज़दूरी शुरू कर दी है। उसको चालिस डालर रोज़ मिलते हैं यानी तीस हज़ार रुपये रोज़ाना। वह कहाँ पर आ गई थी, तक़रीबन तीन हज़ार रुपये पर आ गई। सत्ताईस हज़ार रुपये एक दिन की आमदनी घट गई। तो मेरा घर बिक गया। गाड़ियाँ बिक गईं। हमारा एक छोटा सा किराए का मकान है उसमें रहते हैं। दो कमरे का है।

हमारी पाकिस्तान की औरत के सारे बाज़ू नंगे होते चले जा रहे हैं और वह पूरी नंगे होने से इधर को आई कि चौथाई बाज़ू ग़ल्ती से उसका हटा तो मैं दोज़ख़ी तो नहीं हो गई रो पड़ी। मेरे भाइयो और बहनो! ये तब्लीग़ का काम है जो ऐसी फ़ाहिशा को ऐसा वली बना दे, बनाने वाला तो अल्लाह है लेकिन दुनिया दारुल अस्बाब है उससे होता है तो उन्होंने कहा कि बेटी ऐसे ग़म की

बात नहीं। रोने की कोई बात नहीं। अल्लाह बहुत रहीम व करीम है। बहुत मेहरबान है, तुम ग़म न करो ये तो सहवा हुआ है। जानबूझ कर नहीं हुआ है और दूसरा अल्लाह ने उसकी माफ़ी रखी है कि अगर ग़ल्ती हो जाए तो उसका इज़ाला हो जाएगा।

तो इसलिए हम मर्दों को भी कहते हैं औरतों को भी कहते हैं कि ये हो गया।

आपने कहा था कि हम औरों को जाकर इस्लाम की दावत दिया करें, रिश्तेदारों को दावत देना तो मुसलमानों मर्दों का काम है। औरतों का भी है? तो कहने लगी मैं और मेरे मियाँ दोनों जा रहे थे बस में तो बस के पीछे टेक को मैंने पकड़ा हुआ था तो एक जगह बस की लगी ब्रेक और मुझे झटका लगा। तो मेरा जो कुर्ते का आसतीन है ये पीछे हटा और मेरे बाज़ू का चौथा हिस्सा नंगा हो गया तो इस पर मैं दोज़ख में तो नहीं जाऊंगी। ये कह कर टेलीफ़ोन पर रोना शुरू कर दिया। सिर्फ़ दो महीने पहले वह लड़की औरत के लिए एक ज़िल्लत का निशान थी और सिर्फ़ दो महीने बाद वह इस पर रो रही है कि मेरे बाज़ू का चौथा हिस्सा नंगा हो गया। जमाअतों ने निकल कर ये सिफ़ात सीखीं जो मुख़्तसर मैंने आप की ख़िदमत में पैश की हैं। कि जिनको लिए बग़ैर न मर्द, मर्द बन सकता है, न औरत औरत बन सकती है। यानी न अल्लाह के राज़ी करने वाले मर्द अल्लाह के राज़ी करने वाली औरतें लोगों को सामने रख कर ज़िंदगी न गुज़ारें। हमारी औरतों के लिए नमूना आज की औरतें नहीं हैं।

हमारी औरतों के लिए तो नमूना अम्मां आयशा रज़ि॰ हैं। अम्मां ख़दीजा रज़ि॰ हैं, हज़रत फ़ातमा रज़ि॰ हैं, हज़रत मैमूना रज़ि॰ हैं।

अमरीका की नौ मुस्लिम औरतों की रायवंड में आमद

एक वाक़िआ सुनाता हूँ। अमरीका की नौ मुस्लिम औरतें आईं नया इस्लाम कुबूल किया। फिर वह रायवंड में चिल्ला लगाने आईं जैसे मर्द चालिस दिन का लगाते हैं। बाहर मुल्क से औरतें आ गईं और इसी तरह पाकिस्तान से जमाअतें बन कर बाहर जा रही हैं। अपनी बीवियों के साथ, और ख़ुद अपनी बीवी के साथ चार महीने के लिए दो दफ़ा बाहर जा चुका हूँ एक दफ़ा हमने चार महीने लगाए सऊदी अरब में, क़तर में इमारत में, एक दफ़ा हमने चार माह लगाए केनेडा में, अमरीका में यानी पाँच मर्द और पाँच औरतें छः मर्द और छः औरतें तो हमारे इस सफ़र से एक एक शहर में साठ सत्तर सत्तर औरतें तीन दिन में चार दिन में बुर्क़े में आकर जाती थीं नौकरियाँ छोड़ देती थीं। बुर्क़े में आने का मतलब ये नहीं है कि वह पहले बुर्क़ा नहीं करती थीं। अब बुर्क़ा कर लिया। बुर्क़े में आने का मतलब ये है कि वह कई कई हज़ार डालर महीने की तन्ख़्वाह लेती थीं। दफ़्तरों में काम करतीं थीं उनको छोड़ा बुर्क़ा पहन लिया।

ये औरतें आईं, इनका जहाज़ कराची से आया था। तो पीछे सारी मुसलमान औरतें खड़ी थीं। तो उसने अज़राह मज़ाक़ कहा कि ये पीछे भी मुसलमान खड़ी हैं। जिन बेचारियों के लिबास ही मुख़्तसर होते जा रहे हैं। तो इन औरतों ने कहा कि हमारे लिए ये औरतें नमूना नहीं हैं। हमने उनको देखकर तो इस्लाम कुबूल नहीं किया। हमारे लिए नमूना हमारे नबी की औरतें हैं। हम तुम्हें शक्ल नहीं दिखाएँगी। हमें उधर भेज दो। लड़कियाँ भी बैठी होती हैं तो उन्होंने अपने नक़ाब उठाए और वह पासपोर्ट से देखतीं तो फ़ौरन

अपने नक़ाब गिरा लेतीं। तो यह लड़की हैरान होकर कहने लगी। मुझसे क्यों पर्दा कर रही हो? मैं तो तुम्हारी तरह औरत हूँ।

तो ये नौ मुस्लिम औरतों ने कहा कि जो औरत बेपर्दा हो हमारा इस्लाम हमें उससे भी पर्दे में रहने का हुक्म देता है। इसी लिए हया आ गई।

साइल वली के दर पर

अबू अमामा याली रह० के दर पर साइल आया तो उनके पास कोई तीस दिरहम रखे हुए थे। उन्होंने सारे उठाकर उसको दे दिए। उनकी एक कनीज़ थी ईसाई। उनका रोज़ा था। उनकी बांदी कहती है कि मुझे बड़ा गुस्सा आया। कि अल्लाह के बंदे ने सारे उठा कर दे दिए। न अपने लिए कुछ छोड़ा न मेरे लिए कुछ छोड़ा। रोज़ा है। तो ये मुसीबतख़ाना खुद भी भूका मरा मुझे भी भूका मारा, असर का वक़्त आया तो मुझे रहम आया मैंने कहा कि अल्लाह का नेक बंदा है। तो चलो मैं उसके दरवाज़े का इंतिज़ाम करूं। तो पड़ोसन से उधार लेकर आई और उनके लिए इफ़्तारी की तय्यारी की। फिर उनका बिस्तर ठीक करने लगी। जब सिरहाना उल्टा तो उसमें तीन सौ दीनार पड़े हुए थे। कहने लगे अच्छा इसलिए सारा सदक़ा कर दिया। ये छुपा कर रखे हुए हैं मुझे बताया नहीं।

जब शाम को वापस आए कहने लगी अल्लाह के बंदे मुझे तो बता दे कि यहाँ पैसे पड़े हुए हैं मैं पड़ोसन से उधार लेकर आई हूँ। तो मैं उन्हें पैसों का सौदा ले आती। कहने लगे कि कौन से पैसे? कहने लगी कि जो सिरहाने के नीचे थे। कहने लगे अल्लाह की क़सम एक पैसा भी नहीं था। कहती है कि कहाँ से आए। कहने लगे मेरे रब की तरफ़ से आए, और कहाँ से आए, तो हमारी

औरतें बच्चों को भी उस पर लगाएं।

वली की ख़ैरात

एक वली की बीवी आटा गूंध कर पड़ोसन के पास गई आग लेने के लिए चूल्हा जलाने के लिए, पीछे फ़क़ीर आ गया उन्होंने सारी परात उठाकर उसको दे दी। और घर में कुछ था ही नहीं सिर्फ़ आटा ही था वापस आए तो आटा ग़ायब, बीवी ने कहा आटा कहाँ गया, कहा एक दोस्त आया था उसको पकाने के लिए दे दिया है थोड़ी देर गुज़र गई तो कोई भी न आया। कहने लगी कि मालूम होता है कि तूने सदक़ा कर दिया। कहने लगे हाँ, कहने लगी अल्लाह के बंदे एक रोटी का आटा तो रख लेते, रोटी में पका देती आधा तू खा लेता आधी में खा लेती, कहने लगा कि बहुत अच्छे दोस्त को दिया है फ़िक्र न कर, थोड़ी देर गुज़री तो दरवाज़े पर दस्तक हुई तो उनके दोस्त आए, तो उनके हाथ में गोश्त का प्याला भरा हुआ। और रोटियों की परात भरी हुई, तो हंसते हुए अंदर आए, कहने लगे मैंने तो सिर्फ़ दोस्त को आटा भेजा था। वह ऐसा मेहरबान निकला कि उसने रोटियाँ पका कर साथ गोश्त में भेजा है।

तो हम अपने बच्चों को भी अल्लाह के नाम पर ख़र्च करना सिखाएं ये कहते हैं बच्चा जमा कर, जमा कर बचा कर रख, कल तेरे काम आएगा, पैसे जोड़ो, लगाओ नहीं, लगाओ अल्लाह की क़सम वापस करता है।

औरतें ज़कात नहीं देतीं, ज़ेवर से उसकी ज़कात नहीं देतीं, तो यही ज़ेवर उनके लिए आग बन जाएगा, कितने मर्द हैं पैसा है ज़कात नहीं देते, तो ज़कात तो फ़र्ज़े ऐन है। उसके ऊपर दो फिर तमाशे देखो अल्लाह कैसे वापस करता है।

मेहमान ज़रियए निजात

एक बुर्ज़ुग हैं उनका नाम है हाशिम वह कहते हैं मैं सफ़र में था। तो मैं एक ख़ैमे में उतरा। मुझे भूक लगी हुई थी। उस ख़ैमे में एक औरत बैठी हुई थी। मैंने कहा बहन भूक लगी है खाना मिल जाएगा? कहने लगी कि मैं मुसाफ़िरों के लिए क्या खाने पकाने बैठी हुई हूँ? जा अपना रास्ता ले, कहने लगे कि भूक ऐसी थी कि मैं उठ न सका। मैंने सोचा कि यहीं से चला जाऊंगा। इतने में उसका ख़ाविंद आ गया। उसने मुझे देखा। मरहबा। कौन हैं? कहा मैं मुसाफ़िर हूँ। खाना नहीं खाया? नहीं ख़ाया, क्यों? मांगा था लेकिन मिला नहीं, कहा ज़ालिम तूने उसे खाना ही न खिलाया। उसने कहा मैं कोई मुसाफ़िरों के लिए बैठी हूँ। मुसाफ़िरों को खिला कर अपना घर ख़ाली कर लूँ। ऐसी बदअख़्लाक़ी में भी ख़ाविंद ने बीवी से बदतमीज़ी नहीं की। कहा कि अल्लाह तुझे हिदायत दे।

आप स॰ ने फ़रमाया कि बेहतरीन मर्द वह है जो बीवी के साथ अच्छा सुलूक करे। उन्होंने कहा अच्छा। तो अपना घर भर ले, फिर उसने बकरी ज़बह की उसको काटा उसका गोश्त बनाया। पकाया खिलाया और साथ माज़रत भी की और उनको रवाना किया।

चलते चलते आगे एक जगह पहुंचे, अगली मंज़िल पर भी एक ख़ैमा आया वहाँ पड़ाव डाला। तो एक ख़ातून बैठी थी, कहा बहन मुसाफ़िर हूँ खाना मिल जाएगा, उसने कहा। मरहबा। अल्लाह की रहमत आ गई। अल्लाह की बरकत आ गई अब मैं आप को सच बताऊं हमारी बूढ़ियाँ दादियाँ हमने अपनी परदादी को बचपन में देखा। कोई मेहमान आता तो वह खुश होकर कहती अल्लाह की बरकत आ गई, नौकरानियों को हटा कर खुद काम करना शुरू

कर देती। और अब जब सारी सहूलतें हैं इस वक़्त ये कहती हैं कि ये बेवक़्त आ गया। इनको वक़्त का ही एहसास नहीं होता। और आ जाते हैं। भाई मौत मेहमान का कोई वक़्त होता है?

तो उस ख़ातून ने कहा। माशा अल्लाह। मेहमान आ गया। बरकत आ गई। जल्दी से बकरी ज़बह की, पकाई और पका कर जब उसके सामने रखी तो इस पर उसका ख़ाविंद आ गया उसने कहा, कौन है तू? कहा जी मैं मेहमान हूँ ये अंगूठी कहाँ से ली? जी आप की बैगम ने दी। तो उसने अपनी बैगम पर चढ़ाई कर दी। तुझे शर्म नहीं आती। मेहमानों को खिला कर मेरा घर ख़ाली कर देगी?

तो उनकी हंसी निकल गई ज़ोर से क़हक़ा लगाया, तो वह कहने लगा क्यों हंसते हो? कहने लगे कि पीछे इसका उलट देखा था, कहने लगा कि जानते भी हो वह कौन है। कहा कि वह मेरी बहन है ये उसकी बहन है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की बरकत

हज़रत अली रज़ि॰ सर्दियों में बारीक कपड़ा पहनते, गर्मियों में मोटा कपड़ा पहनते। अबू याला के बेटे हैं अब्दुर्रहमान उन्होंने अपने बाप से कहा कि क्या बात है कि अमीरुल मोमिनीन उल्टा काम करते हैं। गर्मियों में मोटा लिबास पहनते हैं। सर्दी आती है तो बारीक लिबास पहनते हैं। तो उन्होंने कहा कि मैं पूछता हूँ। पूछकर बताता हूँ तो अबू याला ने हज़रत अली रज़ि॰ से पूछा। कि लोग पूछ रहे हैं। कि ये आप क्या करते हैं। उल्टा काम करते हैं। तो फ़रमाया क्या तुम ख़ैबर में मेरे साथ थे? जी हाँ। कहा कि जब हुज़ूर स॰ ने मुझे झंडा दिया था। तो मेरे लिए दुआ की थी। اللّٰهم

فیہ الحر والبرد۔ ऐ अल्लाह इसको गर्मी से भी बचा सर्दी से भी बचा। वह दिन और आज का दिन न मुझे गर्मी लगती है। न सर्दी लगती है। अल्लाह जिसकी चाहे दूर कर दे। उनको ज़रूरत नहीं है कि वह मोटा कोट पहनें। और ज़रूरत नहीं है कि बारीक कपड़ा पहनें। अल्लाह ने अंदर से गर्मी और सर्दी के निकलने की सिफ़त को निकाल लिया। अपने नबी स॰ की दुआ की बरकत से।

तो ये अल्लाह हर एक के लिए कर सकता है। सबके लिए कर सकता है। ये दुनिया अस्बाब की दुनिया है मोजिज़ात की दुनिया नहीं है। ये करामतों का जहान नहीं है। अस्बाब का जहान है। लिहाज़ा किसी ख़ास अलख़ास के लिए तो ये काम हो सकता है। आम के लिए नहीं हो सकता। उन्हें ज़र्सी पहननी पड़ेगी। जुराबें पहननी पड़ेगी। उन्हें हीटर चलाने पड़ेंगे। अस्बाब का जहान है। तो अल्लाह तआला की कुदरत है सारी।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का फ़ैसला

सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास एक बच्चे का झगड़ा आ गया, दो बच्चे खेल रहे थे एक झील में गिर कर मर गया। एक बैठा है। एक कहती है मेरा है दूसरी कहती है कि मेरा है। गवाह किसी के पास कोई नहीं। सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास लेकर आईं। दोनों कहें कि मेरा है। सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐसे तो फ़ैसला नहीं हो सकता। तो फ़रमाया कि इस तरह करते हैं कि छुरी लाओ और दो टुकड़े करके आधा एक को दे दो, आधा एक को दे दो, तो जो असल माँ थी वह कहने लगी कि इसको दे दो, इसको दे दो, दो टुकड़े न करो, सुलैमान अलैहिस्सलात ने फ़रमाया इसको दे दो, इसका बेटा है। इसलिए चीख़ पड़ी कि अपना था, ये कटता नहीं देख सकती थी। जिसका नहीं था वह चुप रही।

जिसका था वह चीख़ पड़ी।

माँ हो और वह अपने जज़्बात का इज़हार न करे। और ये अल्लाह है कि जो मुहब्बतें डालता है और दिल को नरम फ़रमाता है।

एक ज़मीनदार का क़िस्सा

एक हमारा ज़मीनदार था, अल्लाह ने सख़ावत का बड़ा जज़्बा दिया था। एक सीज़न का एक जोड़ा बनाता था। एक दिन किसी ने कहा कि मियाँ साहब अल्लाह ने इतना रिज़्क़ दिया है कोई चार जोड़े अपने भी बना लिया कर कहने लगा कि बेटा अगर अपने बनाना शुरू कर दूँ तो फिर ग़रीबों को देने का दिल नहीं चाहता।

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० की माफ़ी का अंदाज़

इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० को एक शख़्स ने गालियाँ दीं, उन्होंने मुंह उधर फैर लिया, उसने समझा कि उनको पता कोई नहीं, उनके सामने आकर कहने लगा कि तुम्हें गालियाँ दे रहा हूँ, कितना बड़ा जुर्म है, इमाम ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० को गाली देना, ये तो आले रसूल स० हैं ये तो अल्लाह के रसूल को गाली देना है। उसकी तो ज़बान खींच ली जाती, और वह जिनको गाली दी जा रही है मुंह फैर कर बैठे हुए हैं। वह कहने लगा कि तुम्हें गालियाँ दे रहा हूँ, इरशाद फ़रमाया मैं भी तुम्हें ही माफ़ कर रहा हूँ।

माफ़ करना सीखो भाइयो! इस गंदे मुआशरे ने हमें तबाह कर के रख दिया है। इसलिए माफ़ करना सीखो, भाई होकर भाई से दुकान के लिए लड़े, एक माँ की गोद में पल कर फिर पैसे पर

लड़े।

हुस्ने यूसुफ़ और हुस्ने मुस्तफ़ा स०

हज़रत आयशा रज़ि० ने फ़रमाया कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को देख कर औरतों ने हाथ पर छुरियाँ चलाई थीं। मेरे महबूब स० को देखतीं तो सीने पर छुरियाँ चला बैठतीं।

हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं, चौदहवीं का चाँद चमक रहा था। और अल्लाह का रसूल स० सुर्ख़ धारीदार चादर पहने हुए मस्जिदे नबवी के सहन में बैठे हुऐ थे, हम कभी चाँद को देखते। कभी आप स० के चेहरे को देखते। आप स० के चेहरे का जमाल चौदहवीं रात के चाँद से ज़्यादा रौशन है।

तो अल्फ़ाज़ ही कोई नहीं, लेकिन चूंकि ताबीर अल्फ़ाज़ से होती है। लिहाज़ा अल्फ़ाज़ ही बयान किए जाऐं। अल्लाह की अज़मत आएगी तो तब अल्लाह की मान कर चलेगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मत आएगी। तो तब उसकी सुन्नत पर चलेगा। अब हुज़ूर स० की अज़मत कोई नहीं, कि अल्लाह ने आप स० को कितना आली मक़ाम बनाया है।

रसूलुल्लाह स० के हाथों ऊंटों के ज़बह होने का शौक़

आप ज़िलहिज्जा की दस तारीख़ को तशरीफ़ लाते हैं। और सौ ऊंट लाए जा चुके हैं। हज़रत अली रज़ि० और हुज़ूर स० के ऊंट मुशतरका थे तो पाँच ऊंट आगे लाए जाते थे। एक आप स० के सामने खड़ा किया जाता था। तो आप स० उसको ज़बह फ़रमाते थे खड़े खड़े को, फिर दूसरा लाया जाता था। उसको ज़बह करते थे। जब पाँच ऊंटो में से एक ऊंट आगे आ जाता था।

ज़बह होने के लिए तो पीछे चार ऊंटों में से आगे हर एक बढ़ कर कहता कि पहले में ज़बह हो जाऊं, एक दूसरे को काटते थे और एक दूसरे को धक्का देते थे। ये मंज़र कायनात ने देखा कि क़ुर्बान होने के लिए ऊंट आगे बढ़ रहे हैं।

रसूलुल्लाह स. के बालों की बरकत

फिर उसके बाद आप ने मअमर बिन अब्दुल्लाह अंसारी को बुलवाया। उनको बुलवाया। उनके सामने ऐसे बैठ गए। इस तरह और सही। कि रसूल स. ने अपना सर तेरे आगे कर दिया है। बाल कटवाने के लिए और उस्तरा तेरे हाथ में है। वह कहने लगे इसमें मेरे अल्लाह और मेरे रसूल स. का एहसान है या रसूलुल्लाह स., इसमें मेरा कोई कमाल नहीं है। तो उससे आप स. ने बाल मुंडवाए, सामने अबू तल्हा खड़े थे सारे उनको हदिया दिए। अबू तल्हा पे झपटा मारा ख़ालिद बिन वलीद रज़ि. ने, और उनसे पैशानी के बाल छीन लिए। और फिर वह बाल उन्होंने अपनी टोपी में रख लिए थे। जब कभी किसी भी लड़ाई में शिर्कत करते पहले टोपी सर पर रखते, फिर ऊपर लोहे का ख़ुर्द रखते, फिर हमला किया करते थे।

और उलमा फ़रमाते हैं कि बड़े से बड़े लशकरों से ख़ालिद रज़ि. टकराए, और उनको ऐसे गाजर मूली की तरह काट कर रख दिया और उसमें बरकत अल्लाह के नबी स. के बालों की थी।

यरमूक की लड़ाई में हमला हो गया। और रूमी सर पर चढ़ आए। ख़ालिद रज़ि. ने कहा मेरी टोपी देखो, टोपी मिली नहीं। तो सारे सरदार जो साथ थे कहने लगे। दुशमन सर पर आ चुका है आप रज़ि. को टोपी की फ़िक्र पड़ी हुई है। तू टोपी बाद में देख लेना। हमने उन के हमले का जवाब देना है। सर को छोड़ वह

ख़ैमों पर भी चढ़ आए। और आप रज़ि॰ हैं कि टोपी देखो, वह भाग दौड़ अफ़रा तफ़री में पुरानी मैली टोपी निकल आई, सारे कहने लगे कि इस मामूली सी टोपी के लिए तुमने इतना ख़तरा मौल लिया है। दुश्मन सर पर चढ़ चुका है। कहने लगे कि अल्लाह के बंदो पता भी है इस टोपी में है क्या? इस टोपी में अल्लाह के नबी स॰ के बाल हैं। मैंने इसके बग़ैर कभी तलवार नहीं उठाई।

तज़किरा दो पैग़म्बरों का

यहया, ज़करिय्या, ये वह नबी अलै॰ हैं जिनसे अल्लाह ने कुर्आन पाक में ख़िताब किया। सवा लाख नबियों में से पच्चीस नबियों का नाम क़ुर्आन में है। पच्चीस में से नौ नबियों से अल्लाह ने बात की है। يـا آدم ،يـا نوح،يا ابراهيم،يا موسىٰ،يا داؤد،يا زكريا،يا يـحىٰ،يا عيسىٰ ابن مريم،يا ايها النبى- नौ नबियों से अल्लाह ने बात की है हमारे नबी स॰ के अलावा आठ नबी और हैं जिनसे अल्लाह ने ख़िताब किया है। सारे नबियों का ख़ुलासा पच्चीस हैं। और नौ का ख़ुलासा हमारे नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वआलेही वसल्लम हैं।

तो यहया अलै॰ और ज़करया दो बाप बेटा हैं, जिनसे क़ुर्आन ख़िताब करता है। يَازَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ يَا يَحْيٰ خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ एक बाप से ख़िताब, एक बेटे से ख़िताब, एक बेटे से ख़िताब लम्बा सलाम चलता है। ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا اِذْنَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا قَالَ رَبِّ اِنِّىْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّىْ وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا وَاِنِّىْ خِفْتُ الْمَوَالِىَ مِنْ وَّرَآئِىْ وَكَانَتِ امْرَاَتِىْ عَاقِرًا فَهَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا يَرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا अल्लाह बोला, पीछे ज़करया की दुआ। ये सारा क़ुर्आन, अल्लाह बोले। يَا زَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامِ ِاسْمُهٗ يَحْيٰ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا

(सूरह मरयम आयत 3ता7) तुझे बेटे की बशारत हो, नाम भी मैं रखता हूँ, यहया ये नाम किसी ने नहीं रखा, मैं रखता हूँ। दोनों बाप बेटा इतने ऊंचे, इतने ऊंचे एक नबी और फिर अल्लाह का खिताब, फिर कुर्आन में उनके तज़किरे बार बार।

उन दोनों बाप बेटे का क्या हुआ? यहूद के दरबार में हज़रत यहया अलै॰ को इस तरह ज़बह किया गया कि जैसे बकरे को ज़बह किया जाता है? सर अलग कर दिया गया धड़ अलग कर दिया। तो क्या यहया अलै॰ नाकाम हो गए? शिकस्त हुई है, नाकाम नहीं हुए। और यहूदी कामयाब हो गए? नहीं नहीं फ़तेह पाई है कामयाब नहीं हुए। और बाप के साथ क्या हुआ? ज़करया अलै॰ के सर पर आरा रखा। और यूँ चीर दिया गया जैसे लकड़ी को चीरा जाता है। दो टुक्ड़े करके फैंक दिया। क्या ये नाकाम हो गए? नाकाम नहीं हुए शिकस्त हुई है?

हज़रत बिलाल रज़ि॰ का शुक्र

हज़रत बिलाल रज़ि॰ को सुनो? हज़रत बिलाल रज़ि॰ कहा करते थे या अल्लाह तेरा शुक्र है तूने हिदायत अपने हाथ में रखी। अगर होती तेरे नबी स॰ के हाथ में तो पहले बनू हाशिम को देता। फिर कुरैश को देता, पता नहीं बिलाल रज़ि॰ का नम्बर आता या ना आता। पहले बनू हाशिम लेते फिर कुरैश लेते फिर मक्के वाले लेते फिर अरब लेते पता नहीं बिलाल रज़ि॰ का नम्बर आता कि न आता, मेरे मौला तेरा करम है तूने अपने हाथ में रखी, जिसे चाहा दे दिया।

दरख़्त की गवाही

दरख़्त को बुलाया, नहीं और सुनो, एक बद्दू आया आप स॰ ने पूछा मुझे नबी स॰ मानते हो, कहने लगा नहीं, आप स॰ ने फ़रमाया

कि ये जो खुजूर का दरख़्त है, वह टहनी, अगर मैं उसे कहूँ कि आकर मेरी गवाही दे तो फिर मुझे नबी स॰ मानेगा, कहने लगा हाँ मानूँगा। तो आप स॰ ने दरख़्त को नहीं बुलाया, उस टेहनी को इशारा किया, आजा, वह टेहनी अपनी जगह से टूटी, और खुजूर के तने के साथ लग कर ऐसे उतरी कि जैसे इंसान करता है और फिर अपने सिरे पर चलती हुई, आई ,और आकर आप स॰ के सामने ऐसे खड़ी हो गई, एक टेहनी आपने फ़रमाया। مــن انــا ـ कहा। اشهد انك رسول الله ـ मैं गवाही देती हूँ कि तू अल्लाह का रसूल स॰ है। आप ने तीन दफ़ा पूछा उसने तीन दफ़ा कहा तू अल्लाह का रसूल स॰, तू अल्लाह का रसूल स॰ तू अल्लाह का रसूल स॰ इन टूटी टेहनी को कौन जोड़े?

वह जो फ़स्ले ख़िज़ां में गई शजर से टूट
मुम्किन नहीं हरी हो सहाब बहार से

सहाबा रज़ि॰ के लिए दरिन्दों का जंगल ख़ाली करना

हज़रत उक़बा बिन नाफ़े दाख़िल हुए अफ़्रीका में तैवनस के साहिल पर और वहाँ से वापसी पर वहीं शहीद हुए वहीं क़ब्र बनी आज भी अल जज़ाएर में उस अल्लाह के बंदे की क़ब्र बता रही है कि कहाँ मक्का, कहाँ मदीना, कहाँ हिजाज़, वहाँ से निकल कर अपनी क़ब्र यहाँ बनवाई अल्लाह के बंदों को दीन में दाख़िल करने के लिए, और तैवनस में उन्होंने छावनी बनाई। जब ये अल्लाह के काम में थे तो अल्लाह उनके साथ थे। तैवनस में छावनी बनाई, वहाँ जंगल था। 11 किलोमीटर में फैला हुआ। तो वहाँ छावनी बनाई। तो इस बारह हज़ार के लशकर में 19 सहाबा रज़ि॰ भी थे। उनको लिया और एक ऊंची जगह पर खड़े हो गए। और ऐलान

किया।

ऐ जंगल के जानवरो! हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुलाम हैं तीन दिन की मोहलत है जंगल से निकल जाओ, इसके बाद जो जानवर मिलेगा हम उसको क़त्ल कर देंगे।

तीन दिन में सारे अफ़्रीक़ा ने देखा कि शैर भाग रहे हैं, चीते भाग रहे, साँप भाग रहे, अज़दहे भाग रहे, भेड़िये भाग रहे, हाथी भाग गए, ज़ैबरे भाग गऐ ज़िराफ़े भाग गए। पूरा जंगल तीन दिन में ख़ाली हुआ। कितने हज़ार बरबर क़ौम इस मंज़र को देख कर मुसलमान हो गए। कि इनकी तो जानवर भी सुनते हैं। हम क्यों न सुनें।

सहाबा रज़ि॰ के लिए जानवरों का बोलना

आसिम इब्ने अमर अंसारी रज़ि॰ को सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि॰ ने भेजा मुसलमानों की तरफ़ और साथ कहा कि रास्ते में लशकर के लिए ग़ल्ला भी लेकर आओ। खाने का सामान भी लेकर आओ। ईरानियों को पता चला कि उन्होंने अपने गाय के रेवड़े और बकरियाँ सब जंगल में छुपा दीं जब मुसलमान पहुंचे तो कुछ भी नहीं तो उनसे कहने लगे ईरानियों से कि भाई यहाँ हमें कुछ जानवर मिल जाऐंगे? उन्होंने कहा कि यहाँ कुछ नहीं मिलता तो जंगल से आवाज़ आई जानवरों की। ههنا نحن، ههنا نحن، ههنا نحن आओ, हमें पकड़ लो हम जंगल में खड़े हुए हैं। तो वह ईरानी भी हैरान हुए जब गए तो सब खड़े हुए।

जब हज्जाज बिन यूसुफ़ के सामने ये वाक़िआ बयान किया गया। उसने कहा कि मैं नहीं मानता कि ऐसा हो सकता है। उसने कहा कि एक आदमी उस लशकर का अभी ज़िंदा है उसको बुला

कर पूछो। तो उस आदमी को बुलवाया, बड़ी दूर रहते थे, उनको बुलवाया, उसने कहा कि सुनाऐं क़िस्सा कैसे हुआ? उन्होंने सारा क़िस्सा सुनाया। तो इस पर हज्जाज कहने लगा कि ये उस वक़्त मुम्किन है। हो सकता है। जब पूरे लशकर में कोई अल्लाह का नाफ़रमान न हो, तो फिर ये सब कुछ हो सकता है। तो वह हज्जाज से कहने लगे उनके अंदर का हाल तो मैं नहीं जानता लेकिन मैं उनके ज़ाहिर का हाल तुम्हें बताता हूँ कि उनसे ज़्यादा रातों को उठकर रोने वाला कोई न था। और उनसे ज़्यादा दुनिया से बेज़ार कोई न था।

उस लशकर में तीन आदमियों पर शक किया गया। कि उनकी नियत ठीक नहीं। ये वह लोग थे कि जो पहले मुसलमान थे। फिर मुरतद हो गए। फिर दोबारा मुसलमान हुए। कैस इब्ने मलसूअ। उमर इब्ने मादी लेरब, तल्हा बिन ख़ुवैलद रज़ि०। ये तीनों बड़े लोग थे। ता जब हुज़ूर स० का इंतिक़ाल हुआ। तो ये मुरतद हो गए। फिर दोबारा अल्लाह ने तौबा की तौफ़ीक़ दी फिर मुसलमान हो गए। तो हज़रत उमर रज़ि० ने कहा था कि इन पर निगाह रखना, और इनको इमारत न देना तो इस लशकर में इन तीनों को, उनके हालात मालूम करने के लिए हज़रत सअद रज़ि० ने जो तहक़ीक़ करवाई। तो वह रावी कहते हैं कि वह तीन जिनके बारे में शक था। उनका हाल ये था कि उन जैसा कोई रात को रोता नहीं था। और उन जैसा कोई दुनिया से कोई बेदार नहीं था। जिन पर शक था उनका ये हाल था। जो शुरू से भी पक्के चले आ रहे थे। वह कहाँ पहुंचे होंगे?

अगर वह पूरी दुनिया की बख़्शिश मांगता तो मैं माफ़ कर देता

एक किस्सा सुना कर बात ख़त्म करता हूँ बनी इस्राईल में एक नौजवान था। बड़ा बदमाश शराबी जुआरी जैसे होते हैं तो शहर वालों ने उसे शहर से निकाल दिया कि निकाल दो, बुरे आदमी को जब बुरा कहा जाएगा तो वह और बुरा हो जाता है।

नबियों का तरीक़ा ये है कि बुरे को बुरा न कहो उससे मुहब्बत करो, उसको क़रीब करो, फिर उसको समझाओगे तो समझ जाएगा। इंसानी फ़ित्रत ये नहीं है कि उसको डन्डे से मारो कि तू ये करता है, ये करता है। इंसानी फ़ित्रत ये है कि तुम उससे मुहब्बत करो, मुहब्बत के साथ उसको बात समझाओ, बहुत से लोग बेदीनी फैला रहे हैं।

मौलाना यूसुफ़ रह० फ़रमाते थे कि बहुत से दीनदार बेदीनी फैला रहे हैं जो नफ़रत करते है तो उससे और दूर हो जाते हैं लोगों से मुहब्बत करोगे तो लोग क़रीब आ जाऐंगे लोगों ने उसको शहर से निकाल दिया उन्होंने कहा ठीक है मैं भी पक्का, अपनी बात पर जाकर उसने डेरा लगा दिया बाहर और वहाँ न कोई साथी न संगी, न कोई ग़िज़ा, न कोई दवा, तो आहिस्ता आहिस्ता अस्बाब टूटे बीमार हो गया फिर मरने लगा तो मौत के आसार महसूस किये तो आसमान को देखा दाँऐं देखा, बाँऐं देखा, कुछ नहीं नज़र आया फिर आसमान को देख कर कहने लगा।

ऐ अल्लाह। अगर मुझे ये पता होता कि मुझे अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा हो ज़ाएगा। और माफ़ कर देने से तेरा मुल्क घट जाएगा। तो या अल्लाह मैं तुझसे माफ़ी न माँगता और अगर मुझे

अज़ाब देने से तेरा मुल्क ज़्यादा नहीं होता तो मुझे अज़ाब न दे, माफ़ कर दे और माफ़ करने से तेरा मुल्क घटता नहीं तो ऐ अल्लाह मुझे माफ़ कर दे, ऐ अल्लाह मेरा किसी ने साथ नहीं दिया सबने छोड़, कोई भी मेरा साथी नहीं बना, ऐ अल्लाह सबने जो साथ छोड़ दिया। या अल्लाह तू, तो मत छोड़ ये कह कर उसकी जान निकल गई।

अल्लाह तआला ने मूसा अलै॰ को इरशाद फ़रमाया कि मेरा एक दोस्त फ़लाँ जंगल में मर गया। उसको जाकर गुसल दो, कफ़न दो, जनाज़ा पढ़ो और सारे शहर में ऐलान कर दो आज जो जो अपनी बख़्शिश चाहता है उसके जनाज़े में शिर्कत करे उसको भी माफ़ करता हूँ।

सारे लोग भागे भागे आए, आगे जाकर देखा तो वही शराबी जुआरी, ज़ानी, डाकू, बदमाश, लोग कहने लगे। या मूसा अलै॰ आप क्या कह रहे हैं ये तो ऐसा था कि हमने तो इसे शहर से निकाल दिया था। ये आपका रब क्या कह रहा है। कि ये तो मेरा दोस्त है। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह तेरे बंदे कह रहे हैं कि ये तेरा दुशमन है। तू कह रहा है कि मेरा दोस्त है आख़िर यह बात क्या है।

तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि वह भी ठीक कह रहे हैं। मैं भी ठीक कह रहा हूँ। ये ऐसा ही था। मेरा दुश्मन था। लेकिन मौत के वक़्त जब उसने देखा पड़ा हुआ हूँ। दाँऐं देखा। فلم يرا اقرباء कोई भी रिशतेदार नज़र नहीं आ रहा। فنظر شماله फिर उसने बाँऐ देखा। فلا يرا قرباء कोई नज़र न आया। तो जब चारों तरफ़ से उसको बेबसी नज़र आई। तो उसने मुझे पुकारा तो मुझे शर्म आई कि इस अकेले तन्हा को मैं उसके गुनाहों की वजह से

पकड़ूं। وعـــزتـــی मुझे मेरी इज़्ज़त की क़सम वह तो छोटा सवाल कर बैठा अगर वह उस वक़्त मुझसे पूरी दुनिया की बख़्शिश माँगता तो मैं सबको माफ़ कर देता।

ऐसी करीम ज़ात से हमारा वासता है। इसलिए अल्लाह के वासते तौबा करो, यहाँ रहते हुए मुसलमान बनके रहो और ईमान की दावत देते हुए चलोगे तो अल्लाह दुनिया भी बनाएगा। और आख़िरत भी बनाएगा। अल्लाह हम सबको अमल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन।

एक बद्दू का वाक़िआ

एक बद्दू आया और कहने लगा, ऐ मुहम्मद स॰ मैंने तेरी बातें बड़ी अजीब सुनी हैं। आप स॰ ने फ़रमाया, कौनसी? एक तो ये कि आप कहते हैं, ये अरब अपने बाप दादा का दीन छोड़ देंगे, दूसरा तू ये कहता है कि क़ैसर व किस्रा के ख़ज़ाने फ़तेह हो जाएंगे। मुर्दे फिर ज़िंदा होंगे, फिर कोई जन्नत में जाऐंगे, कोई जहन्नम में जाऐंगे। ये बातें तो समझ में तो आती नहीं।

आप स॰ ने इरशाद फ़रमाया कि तू एक दिन देखेगा कि सारा अरब मेरे दीन में आएगा, क़ैसर व किस्रा फ़तेह होंगे और क़यामत के दिन जब तू खड़ा होगा तो मैं तेरा हाथ पकड़ के ولا ذكـــرتك مقالتك هذه، मैं तेरा हाथ पकड़ के ये तेरी बात याद दिलाऊंगा।

उसने कहा मैं नहीं मानता। वह चला गया। फिर उसने देखा कि अरब मुसलमान हो गए और उसने देखा कि क़ैसर व किस्रा के ख़ज़ाने फ़तेह हो गए। फिर वह मुसलमान हो गया। फिर वह मदीना मुनव्वरा आ गए तो हज़रत इमरान रज़ि॰ उनके लिए खड़े हो जाते थे। उनका इकराम फ़रमाते थे कि भाई तो वह है कि तेरा हाथ हुज़ूर स॰ पकड़ लेंगे और जिसका हाथ हुज़ूर स॰ ने पकड़

लिया तो जन्नत से पहले छोड़ेंगे नहीं, जन्नत में ले जाकर ही छोड़ेंगे।

मेरे वालिद (मौलाना तारिक़ जमील) साहब जन्नत के तख़्तों पर

मेरे वालिद कभी कभी रोया करते थे कि हमने तुम्हें जना, किस काम आया? एक बेटी फ़ैसलाबाद, एक लाहौर, तू हर वक़्त तब्लीग़ में, और चौथा डाक्टरी में, कभी मुल्तान, कभी कहीं, कभी कहीं, हम दोनों अकेले के अकेले। मुझे भी कभी कभी रोना आ जाता। मैं उनसे कहता: अब्बाजान! बस चंद दिनों की बात है, फिर अल्लाह ऐसा इकट्ठा करेगा कि जिसके बाद कभी जुदाई न होगी। जब उनका इंतिक़ाल हुआ तो हमारे साथी ने उनको ख़्वाब में देखा कि जन्नत में एक ख़ूबसूरत गुंबद नुमा बारा दरी है जिसमें बैठे हुए हैं। उन्होंने कहा: मियाँ साहब! आप कहाँ चले गए? (अचानक इंतिक़ाल हुआ था) उन्होंने फ़रमाया: فی جنت النعیم علی سرر متقبلین- हम तो भाई जन्नत के तख़्तों पर हैं, आमने सामने बैठे हैं। उन्होंने कहा: आप हमें छोड़ कर चले गए। कहने लगे: नहीं नहीं अंक़रीब हम सब इकट्ठे हो जाएंगे।

असल ज़िंदगी जन्नत की ज़िंदगी है

मौलवी फ़ारूक़ साहब सुनाने लगे, वह हमारे साथी हैं और अक्सर साल, छः सात महीने अल्लाह के रास्ते में रहते हैं कि मेरी बीवी ने एक दफ़ा बड़ा गिला किया, तुमने तो घर को अच्छा मुसाफ़िरख़ाना बना रखा है, इधर आए, उधर चले गए, ये कोई ज़िंदगी है, तो मैंने उससे कहा, अल्लाह की बंदी घबरा नहीं, जन्नत में जाने के बाद पहले तीन सौ साल कोई मुझसे मिलने गिलने के लिये न आए तो बता, यह तीन सौ साल हैं, ये साठ

सत्तर साल की ज़िंदगी कोई ज़िंदगी है। आज मरे कल मरे। कहा तीन सौ साल कहीं नहीं जाऊंगा, तेरे पास ही बैठा रहूंगा, सारे गिले शिक्वे दूर हो जाऐंगे। तो बैठने की जगह भी जन्नत है, रहने की जगह भी जन्नत है, आराम की जगह भी जन्नत है, राहत की जगह भी जन्नत है, खाने पीने की जगह भी जन्नत है और लुत्फ़ अंदोज़ होने की जगह भी जन्नत है। जवानी कामिल बुढ़ापा नहीं, ज़िंदगी कामिल, मौत नहीं, सेहत कामिल, बीमारी नहीं, ख़ुशियाँ कामिल, ग़म नहीं, मुहब्बतें कामिल, नफ़रत कोई नहीं, ख़ुशियाँ ही ख़ुशियाँ हैं, एक ज़र्रा बराबर परेशानी कोई नहीं, ग़म कोई नहीं, पैशाब कोई नहीं, पाख़ाना कोई नहीं, थूक कोई नहीं, बलग़म कोई नहीं। ये कोई ज़िंदगी है जिसके पीछे फ़िक्र का डर, मौत का डर, बीमारी का डर, दुशमन का डर, नफ़रतों का डर, डर हीं डर में मारे पड़ें हैं, ये कोई ज़िंदगी है।

ज़िंदगी तो वह है जहाँ अल्लाह भी पर्दे हटा दे, बैठे बैठे जन्नत में नूर की चमक उठ रही है, आँखें ऊपर उठ रही हैं, क्या देख रहे हैं कि अर्श के दरवाज़े खुलते चले जा रहे हैं और अर्श के पर्दे उठते चले जा रहे हैं, उठते उठते अल्लाह अपने हुस्न व जमाल के साथ फ़रमा रहे हैं। "سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبٍّ رَّحِيمٍ" फ़रिशतों के सलाम तो तुमने ले लिए, अब अपने रब का सलाम भी कुबूल कर लो। अपने रब का सलाम भी ले लो तुम्हारा रब तुम्हें सलाम कहता है। तो इस ज़िंदगी के चाहने वाले बन जाऐं, इसके लिए फिरने वाले बन जाऐं।

अमीरे शरीअत रह॰ की फ़रियाद

अता उल्लाह शाह़ बुख़ारी रह॰ कहा करते थे, ऐ हिन्दुस्तान वालो: (ये तक़सीम से पहले की बात है) तुम्हें इतना कुर्आन सुनाया

कि

मैं सर सर को सुनाता तो सबा बन जाती, मैं पत्थरों को सुनाता तो मोम हो जाते, मैं दरयाओं को सुनाता तो तूफ़ान थम जाते और मैं मौजों को सुनाता तो उनकी तुग़यानी रुक जाती।

पता नहीं तुम किस चीज़ से बने हो? किस ख़मीरे से बने हो? तुम्हारे सीनों में दिल नहीं हैं पत्थर हैं और पत्थर से भी ज़्यादा कोई सख़्त हैं। पत्थर के मुतअल्लिक़ कुर्आन में हैं اَشَدُّ قَسْوَةً مِّنَ الْحِجَارَةِ पत्थर भी अल्लाह की हैबत से लरज़ता है और कांपता है पर तुम कौनसे इंसान हो, कैसे सीनों में दिल लिए फिरते हो? कि पाँच दफ़ा इतना बड़ा बादशाह तुम्हें पुकारे। حَتّٰى عَلَى الصَّلٰوةِ एक थानेदार पुकारे लाहौर वालों को सारा लाहौर भागे, डी॰ सी॰ पुकारे तो काम छोड़ के भागे और तुम्हारा ज़मीन आसमान का बादशाह तुम्हें दिन में पाँच दफ़ा पुकारे और कानों पे जूँ न रेंगे और आठवें दिन मस्जिद को आ रहे हो क्या आठवें दिन खाना खाया है? क्या आज ही पानी पिया है? क्या आज ही चाय पी है? ये ऐसी जफ़ा अपने आप से करते, शैतान से करते, मुल्क व माल से करते, अपनी दो कानों से करते, ये बेवफ़ाई अल्लाह से क्यों की हुई है?

इज़्ज़त और सुकून इन चीज़ों में नहीं बल्कि इज़्ज़त तो मुहम्मदी बनने में है।

तो अगर क़ब्र हशर की मंज़िलों को इज़्ज़त के साथ और सलामती के साथ तै करना है तो मुहम्मदी बनना पड़ेगा, इसके अलावा कोई रास्ता नहीं हज़रत मुहम्मद स॰ के साँचे में ढलना होगा, अपने साँचे तोड़ने होंगे।

इंसानी मिज़ाज की रिआयत रखने पर एक वज़ीर का वाक़िआ

मुशताक़ गौरमानी साहब हमारे हाँ पंजाब का गवर्नर था। अंग्रेज़ वज़ीरे आज़म बरतानिया का आ रहा था। इसलिए पहले मालूम करवाया कि पता करो उसको पसंद क्या है। पता चला उसको कुत्तों का बड़ा शौक़ है। उसके आने से पहले पहले गौरमानी साहब ने कुत्तों की सारी क़िस्मों का मुताला किया फिर उसको कौनसी पसंद है इसका मुताला किया। जब वह सफ़र से वापस गया तो लिख गया था कि पूरे पाकिस्तान में एक पढ़ा लिखा आदमी है वह है गरमानी, क्यों? उसने उसके मिज़ाज की रिआयत की। क्या हम इस तरह लोगों के मिज़ाज पहचान कर उनके क़रीब होने की कोशिश करते हैं लेकिन वह अल्लाह जो मेरे काम बनाने बल्कि हर क़िस्म के काम अगर मेरा काम मुक़द्दमा का है तो वकील और जज के मुतअल्लिक़ है वह डाक्टर हल नहीं कर सकता। अगर मेरे पेट में दर्द है तो वकील कोई काम नहीं आ सकता। अगर दीवार गिर गई है तो जज कोई काम नहीं आ सकता। हर ज़रूरत के लिए हमें अलग अलग तअल्लुक़ की ज़रूरत है। तब हमारी गाड़ी चलती है और अल्लाह वह ज़ात है जो हर क़िस्म की ज़रूरत को पूरा करने के लिए अकेला काफ़ी है। तो उससे हमें कितना तअल्लुक़ चाहिए। जो तमाम काम हमारे करने पर कुदरत रखता हो फिर उसकी सिफ़त ये है कि उसको कुछ करने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता और देने के लिए किसी को कहना नहीं पड़ता।

उमर सानी रहमतुल्लाह अलैह

हज़रत उमर रहमतुल्लाह अलैह की ख़िलाफ़त का ज़माना, ये

वह उमर रहमतुल्लाह अलैहि है, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैहि जब गली में गुज़रता था तो उसकी खुशबुओं के हल्ले घरों में बैठे हुऐ लोगों को पता चलता था कि उमर गली से गुज़र रहा है, ऐसा हुस्न व जमाल था चेहरे पर आँखें नहीं टिकती थीं और ऐसी नख़रे वाली चाल थी जो देखता था वह दंग रह जाता और लम्बी उबा होती थी कि घसीटती हुई जाती थी एक दफ़ा एक बुर्ज़ुग ने रास्ते में टोक दिया, ऐ उमर रहमतुल्लाह अलैहि देखो अपने टख़ने से कपड़ा ऊंचा करो। उन्होंने कहा अगर जान की ख़ैर है तो आईंदा ये बात मत कहना मुझे, वरना गर्दन उड़ा दी जाएगी एक वक़्त ये है और जब आए ख़िलाफ़त पर जो आदमी वज़ारत की तलब करने लगा और जो आदमी हुकूमत की तलब करेगा और जो आदमी माल की तलब करेगा जब उसके हाथ में माल आएगा तो फ़िरऔन बनेगा और जो आदमी उससे भागेगा और उससे जान छुड़ाएगा और उससे पल्ला बचाएगा जब उसके पास माल आएगा तो वह उसके ज़रिए से जन्नत कमाएगा।

सुलैमान मरने लगा तो रजा इब्ने हैवा ने कहा कोई ऐसा काम कर जिससे तेरी आख़िरत बन जाए। कहा क्या करूं? कहा ख़िलाफ़त के लिए किसी इंसान का इंतिख़ाब कर।

सोच में पड़ गया, उसका इरादा था, बेटे को ख़लीफ़ा बनाने का कहने लगा इंशा अल्लाह ऐसा काम कर जाऊंगा कि जिससे मेरे नफ़्स और शैतान का कोई हिस्सा नहीं होगा, कहा लिखो "मैं उमर को ख़लीफ़ा बनाता हूँ" और उसको लपेटा और माचिस की एक डिबिया में डाला, कहा जाओ इस पर लोगों से बैत लो, जब रजा ने बैत ली तो हज़रत उमर दौड़ कर आए, ऐ रजा तुझे अल्लाह का वासता अगर इसमें मेरा नाम है तो इसको मिटा दे।

मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए उसने कहा जाओ जाओ मेरा सर न खाओ मुझे नहीं पता किसका नाम है, आगे हिशाम इब्ने अब्दुल मलिक मिला। उसने कहा रजा अगर इसमें मेरा नाम नहीं तू इसमें लिख दे एक कहता है मेरा नाम मिटा दे, एक कहता है मेरा नाम लिख दे।

जब बारे ख़िलाफ़त आ पड़ा जब डिबिया पर बैत ली और खुला उसको कहा आओ भई, ऐ उमर! उठो तुझे ख़लीफ़ा बनाया जाता है, तो उमर खड़े नहीं हो सके दो आदमियों ने सहारा देकर उठाया और लड़खड़ाते हुए मिंबर पर आए और कहा मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए, तुम अपने फ़ैसले से किसी और को बना दो, उन्होंने कहा नहीं अमीरुल मोमिनीन ने कह दिया है।

एक बद्दू का सवाल कि जन्नत में खुजूर है

एक बद्दू आया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जन्नत में बैर हैं और उसमें कांटे होते हैं। कांटे तक्लीफ़ देते हैं और जन्नत में तक्लीफ़दह कोई चीज़ नहीं। आप स॰ ने फ़रमाया अरे अल्लाह के बंदे अल्लाह कांटों को हटाएगा इस पर फल लगाएगा और वह फल पक कर फटेगा और उसके बहत्तर टुक्ड़े हो जाऐंगे हर टुक्ड़े का रंग अलग, ज़ाएका अलग और ख़ुशबू भी अलग होगी। खाओगे तो पैशाब व पाख़ाना नहीं।

एक बद्दू आया या रसूलुल्लाह स॰ जन्नत में घोड़े हैं फ़रमाया याकूत के ऐसे घोड़े जो तुझे लेकर हवा में उड़ेंगे। दूसरा बोला या रसूलुल्लाह स॰ जन्नत में ऊंट हैं। फ़रमाया ऐसे सितारों की तरह चमकते हुए कि तुझे लेकर हवा में उड़ें। तीसरा बोला या रसूलुल्लाह स॰ जन्नत में खुजूर हैं फ़रमाया हाँ जिसका एक दाना बारह हाथ लम्बा है जिसका तना सोने का, शाख़ें ज़मर्द की और

जिसका पता जन्नत वालों के लिए सौ सौ जोड़ा बन कर गिरेगा। एक बोला या रसूलुल्लाह स॰ जन्नत में सहरा है। आप स॰ ने फ़रमाया सहरा है लेकिन रेत का नहीं मुश्क और याक़ूत का है। ये अरब सहराई लोग हैं आज भी उनके महल्लात में जाऐं तो एक कोने में रेत पत्थर और कंकर रखे हुए हैं। ये बद्दू बद्दू ही हैं। पाँचवाँ बोला या रसूलुल्लाह स॰! जन्नत में गाना बजाना है। दुनिया में तो हराम आगे इजाज़त हो जाएगी। आप स॰ ने फ़रमाया अल्लाह के बंदे तू क्या कहता है। जन्नत में एक दरख़्त है जिसका नाम "फ़ैज़" है लोग गाने बजाने की ख़्वाहिश करेंगे तो एक हवा चलेगी जिसका नाम "मसीरा" है वह पत्तों और टेहनियों को टकराऐगी उनमें एक ऐसी ख़ूबसूरत मौसीक़ी (Music) निकलेगी।

لم يسمع الخلائق مثلها۔ लोगों ने कभी ऐसा गाना सुना न होगा। और يستفرغ قلوبهم عن نعيم الجنة۔ उस गाने को सुनकर अल्लाह की क़सम जन्नत वालों को जन्नत भूल जाएगी। बीवी को ख़ाविंद भूल जाएगा। ख़ाविंद को बीवी भूल जाएगी। मस्त होकर सुनेंगे। अगर वह दरख़्त हज़ार साल गाता रहे तो एक दूसरे को पूछेंगे नहीं तुम कहाँ हो मैं कहाँ हूँ। ऐसी जाज़बियत है। अच्छा इस गाने को छोड़ो।

शाम के गवर्नर का खाना हज़रत उमर रज़ि॰ का रोना

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि॰ मुल्के शाम के गवर्नर हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ से मिलने गए और ख़ैमे में मुलाक़ात की। मुलाक़ात के वक़्त फ़रमाया, अबू उबैदा! तेरे ख़ैमे में चिराग़ कोई नहीं? फ़रमाया, ऐ अमीरुल मोमिनीन! दुनिया में गुज़ारा ही तो

करना है, दुनिया कौनसी रहने की जगह है, गुज़ारा ही तो करना है, फिर हज़रत उमर रज़ि॰ ने कहा, अपना खाना तो खिलाओ। तो अबू उबैदा रज़ि॰ कहने लगे, मेरा खाना खाओगे तो रोओगे। कहने लगे नहीं नहीं। हालांकि हज़रत उमर रज़ि॰ का खाना मशहूर था कि उनका खाना कोई खा नहीं सकता था। इतना सख़्त खाना था। हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने कोने में से लकड़ी का प्याला उठाया जिसमें रोटी पानी में भिगोई पड़ी थी, ख़ुश्क रोटी उस पर थोड़ा सा नमक डालकर हज़रत उमर रज़ि॰ के सामने रखा। हज़रत उमर रज़ि॰ ने लुक़्मा उठाया, बेइख़्तियार आँखों से आँसू निकले।

अरे अबू उबैदा रज़ि॰! मुल्के शाम के ख़ज़ाने फ़तेह हुए और तू न बदला। उन्होंने कहा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अहद कर चुका था कि जिस हाल पर छोड़ कर जा रहे हैं उसी हाल पर आप स॰ से मिलूँगा। जब आप स॰ ने फ़रमाया था, जिस हाल पे छोड़कर जा रहा हूँ, उसी हाल में तुमने मेरे पास आना है। दुनिया के चक्कर में न आना और दुनिया के धोके में न आना, मुसलमान के लिए इतना काफ़ी है गुज़ारे के लिए उसके पास रोटी खाने को मिल सके।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ क़रीबुल मर्ग

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के बारह रह॰ बेटे थे। जब उनका इंतिक़ाल होने लगा तो उनके साले मुसल्लमा बिन अब्दुल मलिक कहने लगे अमीरुल मोमिनीन! आपने बच्चों पर बड़ा ज़ुल्म किया है कहा उनके लिए जो छोड़कर जा रहे हैं वह दो रुपये फ़िक्स है तेरे बच्चों को विरासत में दो रूपयें (यानी दो दिरहम) मिलेंगे तो ये क्या करेंगे? उनका तूने कुछ न बनाया तो ज़हर ने

असर कर लिया था कहने लगे कि मुझे बैठा दो। उन्हें बैठा दिया गया। कहने लगे बात सुनो। मैंने उनको हराम कुछ नहीं खिलाया और हलाल मेरे पास था ही नहीं तो लिहाज़ा मैं इसका मुकल्लफ़ ही नहीं हूँ कि उनके लिए में जमा करूं वह कहने लगे कि एक लाख रूपया मैं देता हूँ मेरी तरफ़ से बच्चों को हदिया कर दो कहने लगे वादा करते हो कहने लगा हाँ अच्छा ऐसे करो जहाँ जहाँ से तुमने जुल्म और रिशवत से पैसा इकट्ठा किया है ना। उन लोगों को वापस कर दो मेरे बच्चों को तुम्हारे पैसों की ज़रूरत कोई नहीं फिर कहा मेरे बच्चों को बुलाओ, सबको बुला लिया तो उसके बाद इरशाद फ़रमाया। ऐ मेरे बेटो! मेरे सामने दो रास्ते थे एक ये था कि मैं तुम्हारे लिए दौलत जमा करता चाहे हलाल होती, चाहे हराम होती। लेकिन इसके बदले में मैं दोज़ख़ में जाता, दूसरा रास्ता ये था कि मैं तुम्हें तक़्वा सिखाता, अल्लाह से लेना सिखाता और ख़ुद जन्नत में जाता मेरे बच्चो मैं तुम्हारा बाप दोज़ख़ की आग नहीं बर्दाश्त कर सकता, लिहाज़ा मैंने तुम्हें हराम नहीं खिलाया न हराम जमा किया मैंने तुम्हें दूसरा रास्ता सिखा दिया है तक़्वे वाला जब कभी ज़रूरत हो मेरे अल्लाह से मांगना मेरे अल्लाह का वादा है। وهو يتولى الصالحين कि मैं नेकों का दोस्त हूँ नेकों का वाली हूँ फिर अपने साले से कहा मुसल्लमा अगर ये मेरे बेटे नेक रहे तो अल्लाह इन्हें ज़ाए नहीं करेगा और अगर ये नाफ़रमान हुए तो मुझे उनकी हलाकत का कोई ग़म नहीं है, फिर इस ज़मीन आसमान ने वह दिन देखा कि उमवी शहज़ादे मुसल्लमा की औलादें और सुलैमान बिन अब्दुल मलिक की औलादें जो एक बच्चे के लिए उस ज़माने में दस दस लाख दिरहम छोड़ के मरे उनकी औलाद मस्जिद की सीढ़ियों पर बैठकर भीक मांगा

करती थी जैसे अभी जुमे के बाद भिकारी यहाँ भीक मांगेंगे। और उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ की औलाद एक एक मजलिस में सौ सौ घोड़े अल्लाह के नाम पर ख़ैरात किया करते थे। हम ताजिर बाद में है मुसलमान पहले हैं, हम अफ़्सर बाद में हैं और मुसलमान पहले हैं। किसी बच्चे के बाप बाद में हैं मुसलमान पहले हैं। किसी बीवी के ख़ाविंद बाद में हैं मुसलमान पहले हैं। किसी बच्चों की माँ वह औरत बाद में है मुसलमान पहले है। किसी की बीवी बाद में है मुसलमान पहले है अल्लाह को राज़ी करते हुए सब कुछ कुर्बान करने का हुक्म है ये नहीं है कि अपनी ख़्वाहिश पे हुक्म कुर्बान हो। हमें ये हुक्म है कि मेरे हुक्म पे अपनी ख़्वाहिश को कुर्बान करो।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का अहद

हज़रत उमर रज़ि॰ की ख़िलाफ़त का ज़माना ये वह उमर है, उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब गली में गुज़रता था तो उसकी ख़ुशबुओं के हल्ले घरों में बैठे हुए लोगों को पता चलता था कि उमर गली से गुज़र रहा है। ऐसा हुस्न व जमाल था कि चेहरे पर आँख नहीं टिकती थी और ऐसी नख़्रे वाली चाल थी कि जो देखता था वह दंग रहता था और लम्बी उबा होती थी कि घसिटती हुई जाती थी। एक दफ़ा एक बुर्ज़ुग ने रास्ते में टोक दिया! ऐ उमर देखो अपने टख़्ने से ऊंचा करो कपड़े को, उन्होंने कहा अगर जान की ख़ैर है तो आईंदा मत कहना मुझे ये बात, वरना गर्दन उड़ा दी जाएगी। एक वक़्त ये है और जब आए ख़िलाफ़त पर दुनिया की तलब में जो आदमी वज़ारत की तलब करने लगा और जो आदमी हुकूमत की तलब करेगा और जो आदमी माल की तलब करेगा और उससे जान छुड़ाएगा और

उससे पल्ला बचाएगा जब उसके पास माल आएगा वह उसके ज़रिए जन्नत कमाएगा। सुलैमान मरने का तो जा इब्ने जबवा ने कहा कोई ऐसा काम कर जिससे तेरी आख़िरत बन जाए। कहा क्या करूं? कहा ख़िलाफ़त के लिए किसी इंसान को चुनना। सोच में पड़ गया उसका इरादा था कि बेटे को ख़लीफ़ा बनाने का। कहने लगा इंशा अल्लाह ऐसा कर जाऊंगा जिससे मेरे नफ़्स और शैतान का कोई हिस्सा नहीं होगा। कहा लिखो मैं उमर को ख़लीफ़ा बनाता हूँ और उसको लपेटा और माचिस की डिबिया में डाला कहा जाओ इस पर लोगों से बैत लो, जब रजा ने बैत ली तो हज़रत उमर दौड़ कर आए, ऐ रजा तुझे अल्लाह का वासता अगर इसमें मेरा नाम है तो उसको मिटा दे, मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए उसने कहा जाओ मेरा सर न खाओ मुझे नहीं पता किसका नाम है। आगे हिशाम इब्ने अब्दुल मालिक मिला। उसने कहा रजा अगर उसमें मेरा नाम नहीं है तो इसमें लिख दे। एक कहता है कि मेरा नाम मिटा दे। एक कहता है कि मेरा नाम लिख दे। जब डिबिया पर बैत ली और खोला उसको, कहा आओ भई ऐ उमर, उठो तुझे ख़लीफ़ा बनाया जा रहा है तो उमर खड़े नहीं हो सके। दो आदमियों ने सहारा देकर उठाया और लड़खड़ाते हुए मिंबर पर आए और कहा मुझे ख़िलाफ़त नहीं चाहिए तुम अपने फ़ैसले से किसी और को बना दो, उन्होंने कहा नहीं अमीरुल मोमिनीन ने कह दिया है, हिशाम की चीख़ निकली, एक शामी ने तलवार निकाल ली। आईंदा तूने बात की तो तेरी गर्दन उड़ा दूंगा तो अमीरुल मोमिनीन के हुक्म के सामने आवाज़ निकालता हैं। जब आए तो यूँ कहा, अब से आख़िरत को कमा के दिखाऊंगा ताकि सारी दुनिया के इंसानों को पता चल जाए कि ये बादशाहत में भी

आख़िरत कमाई जा सकती है। फिर वह वक़्त आया ईद के दिन से एक दो दिन पहले की बात और वहीं छोटे छोटे बच्चे रो रहे हैं। कहने लगे बच्चे क्यों रोते हैं। बीवी ने कहा बच्चे ये कह रहे हैं। हमारे सारे दोस्तों ने नए नऐ कपड़े बनवाए हैं ईद के लिए। हमारा बाप तो अमीरुल मोमिनीन है हमारे कपड़े फटे हुए हैं। हमें भी तो कपड़े लेकर दो, हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया मेरे पास तो पैसे ही नहीं हैं। मैं कहाँ से लेकर दूं। वज़ीफ़ा लेते थे बैतुल माल से जो तमाम मुसलमानों का था, वह रोटी का ख़र्च बड़ी मुशकिल से पूरा होता था तो बीवी ने कहा अब क्या करें? बच्चों को कैसे समझाऐं? ख़ुद तो सब्र कर सकते हैं बच्चे तो नहीं जानते। बच्चों पर आदमी ईमान को बेचता है। हाँ फिर वह औलाद बाप की गुस्ताख़ी बनती है। बाप से कहती है तूने हमारे लिए क्या किया है। क्या कमाया है हमारे लिए। चूंकि उसकी जड़ों में हराम का डाला गया इसलिए ये अब कभी माँ बाप की फ़रमांबरदार बन कर नहीं चलेगी। ये माँ को भी जूते मारेगा और बाप को भी जूते मारेगा। हज़रत उमर रज़ि॰ ने कहा मैं कहाँ से दूँ। मेरे पास तो पैसे नहीं हैं। तो उसने कहा कि क्या करें? उनको कैसे समझाऐं, उन्होंने कहा तो फिर मैं कैसे समझाऊं? बीवी ने कहा मुझे एक तरकीब समझ में आई है। आप अपना वज़ीफ़ा एक माह पैशगी ले लें। जो महीने का वज़ीफ़ा मिलता है हमारे बच्चों के कपड़े बन जाऐंगे। हम सब्र कर लेंगे। उन्होंने कहा ये ठीक है। अपना ख़ादिम नहीं गुलाम है, गुलाम ज़रख़रीद मज़ाहम उसे बुलाया, ख़ज़ानची था कहा। अरे एक बात अर्ज़ करूं, क्या आप मुझे ज़मानत देते हैं कि आपका एक महीना ज़िंदा रहेंगे जो आप मुसलमानों का माल लेना चाहते हैं? अगर आप एक महीने की ज़मानत दे सकते हैं कि मैं महीना ज़िंदा

रहूंगा तो आप बैतुल माल में से मुझसे ले लें और अगर ज़मानत नहीं दे सकते तो आपकी गर्दन पकड़ी जाएगी क़यामत के दिन, हज़रत उमर की चीख़ निकली। नहीं। كم من مقبل يوما لا يكمله كم من مستقبل لغد لا يدركه हुज़ूर स॰ फ़रमा रहे हैं कि كم من مقبل يوما لا يكمله कितने ही हैं दिन देखने वाले जो सूरज का ग़ुरूब होना नहीं देख पाते और क़ब्रों में चले जाते हैं। कहा ऐ बच्चो! सब्र कर लो जन्नत में ले लेना जा के मेरे पास इस वक़्त कुछ नहीं। अम्र को नहीं तोड़ा बच्चे की ख़्वाहिश को तोड़ दिया। अपने जज़्बात को तोड़ दिया। अल्लाह के अम्र को नहीं तोड़ा। ज़रूरत को क़ुर्बान कर दिया। अम्रे इलाही को क़ुर्बान नहीं किया ये है लाइलाहा इल्लल्लाह कि मैं अल्लाह का ग़ुलाम हूँ मैं बिक चुका हूँ। मैं बीवी बच्चों का ग़ुलाम नहीं हूँ। मैं कारोबारी नहीं हूँ। मैं ताजिर नहीं हूँ। मैं ज़मीनदार हाकिम और वज़ीर नहीं हूँ। मैं अपने अल्लाह का ग़ुलाम हूँ। मुझे अल्लाह के अम्र को देखना है। मुझे यह नहीं देखना कि कौन क्या करता है। घर में आए बेटियाँ मुंह पर कपड़ा रख कर बात करें। हज़रत उमर रज़ि॰ कहने लगे बेटी क्या बात है? मुंह पर कपड़ा क्यों रखती हो? फ़ातमा ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन आज तेरी बेटियों ने कच्चे प्याज़ से रोटी खाई है। इसलिए उनके मुंह से बदबू आ रही है। हाँ अमीरुल मोमिनीन कि जिसका अम्र तीन बर्रे आज़म पर चलता है और अरबों मख़्लूक़ात उसके सामने गर्दन झुकाए खड़ी हो। दमिश्क़ से लेकर मुलतान तक और दमिश्क़ से लेकर कर इस्तंबुल तक और दमिश्क़ से लेकर काशग़र तक और दमिश्क़ से लेकर मिस्र तक, दमिश्क़ से लेकर चाड तक और दमिश्क़ से लेकर उन्दुलुस तक। पुर्तगाल और फ़्रांस तक जिसका अम्र चल रहा हो। उसकी बेटी कच्चे प्याज़

से रोटी खा रही है। आज हमारे तो छाबड़ी वाले की बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी नहीं खाती और इतने बड़े बाइक़्तिदार की बेटी प्याज़ से रोटियां खाती हैं। हज़रत उमर रज़ि० रोने लगे हाय मेरी बेटी मैं तुम्हें बड़े अच्छे खाने खिला सकता था लेकिन तेरा बाप दोज़ख़ की आग बर्दाश्त नहीं कर सकता। मेरे सामने दो रास्ते हैं। तुम्हें हलाल हराम इकट्ठा कर के खिलाता, खुद दोज़ख़ में जाता, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मौत का वक़्त आया, मुसल्लमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन का लिबास तो तब्दील कर दो, मैला हो गया है, अपनी बहन से कहा साला है। हज़रत फ़ातमा ने कहा बीवी थी, ऐ मेरे भाई अल्लाह की क़सम अमीरुल मोमिनीन के पास एक ही जोड़ा है। तब्दील कहाँ से करूं एक ही जोड़ा है। मुसल्लमा ने कहा अमीरुल मोमिनीन ये आप के बच्चे हैं। फ़क्र व फ़ाके की हालत में आप इन्हें छोड़ कर जाते हैं। फ़रमाया मेरे से एक लाख रुपया ले लीजिए। अपने बच्चों को दे दीजिए। मेरे भांजे हैं। उसने कहा हाँ तो फ़रमाया चलो एक लाख रुपया वापस कर दो जहाँ से तुमने उसको जुल्म और रिशवत से कमाया है। मेरे बच्चों को हराम नहीं चाहिए फिर बेटों को बुलाया और कहा बेटो! मेरे सामने दो रास्ते थे मैं तुम्हारे लिए माल जमा करता और खुद जहन्नम में जाता और दूसरा रास्ता ये था मैं तुम्हें तवक्कुल सिखाता और खुद जन्नत में जाता, मेरे बेटो! मैं जहन्नम तो सह नहीं सकता था, मैंने तुम्हें अल्लाह से मांगना सिखा दिया, ज़रूरत पड़े तो उससे मांग लेना, वह तुम्हारा कफ़ील होगा। वह कहता है وهو يتولى الصالحين मैं नेक आदमियों का वाली।

जब मौत आई और जनाज़ा उठा क़ब्रिस्तान पर रखा गया तो आसमान से एक हवा चली। उसमें से एक काग़ज़ का पर्चा गिरा।

उस कागज़ को उठाया गया उस पर लिखा था بسم الله الرحمن الرحيم برائة من الله لعمر ابن عبدالعزيز من النار بسم الله الرحمن الرحيم और ये अल्लाह तआला की तरफ़ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के लिए आग से निजात का परवाना है, हमने उमर को दोज़ख़ से निजात दे दी, सारी दुनिया को बता दिया कि सुन लो हमने उमर को दोज़ख़ से निजात दे दी और उस परवाने समेत हज़रत उमर रज़ि॰ को क़ब्र में कामयाब हो गए और तीसरी रात है और कोरूम के इलाक़े में चलते हुऐ और उनके आठ साथी क़त्ल हो चुके थे। ये नौवें बच गए थे ये वहाँ से भाग कर आ रहे थे तो पीछे से घोड़े के टापों की आवाज़ आई। समझने लगे कि बस मैं तो पकड़ा गया हूँ पीछे आए पकड़ने वाले पीछे देखा जो मुड़के एक ने आवाज़ दी, हबीब अरे ये मेरा नाम कैसे जानता है? हबीब क़रीब आए तो देखा वह साथी जो क़त्ल हो गए थे। घोड़े पर सवार, अरे اليس قد قتلتم अरे तुम तो सारे क़त्ल हो गए थे फ़रमाया हाँ तुम्हें ख़बर है क्या हुआ कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ का इंतिक़ाल हो चुका है और अल्लाह तआला ने तमाम शोहदा से कहा है कि उनका जनाज़ा पढ़ो जाकर, हम सब वहाँ जा रहे हैं तुमने घर जाना है। ये रूम है घर जाना है कहते हैं हाँ! तो उसने कहा नावलनी हाथ पकड़ाओ मेरा हाथ पकड़ और अदफ़नी और मुझे पीछे घोड़े पर बिठाया, उसका घोड़ा चंद क़दम चला होगा ख़फ़्ती ख़फ़्ता उसने मुझे ज़ोर से कोहनी मारी और मैं उलट कर गिरा तो घर से दरवाज़े के सामने पड़ा था, रूम से इराक़ ये इस्तक़्बाल है ये इस्तक़्बाल हो रहा है। تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ نَحْنُ اَوْلِيَاءُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ-

(सूरह हाम्मीम सज्दा आयत30ता32) अल्लाह की तरफ़ से मेहमानी हो रही है। फ़रिशते आ रहे हैं, हज़रत उमर का जब विसाल होने लगा तो कहने लगे हट जाओ कुछ लोग आ रहे हैं। जो न जिन्नात में हैं और ज़बान पर आयत आ गई تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا فَسَادًا ये वह जन्नत का घर है हमने बनाया है। अपने बंदों के लिए जो दुनिया में बड़ाई नहीं चाहते जो बड़ाई चाहते हैं उन्हें पस्त किया जाता है जो बड़ाई नहीं चाहते उन्हें उठाया जाता है। फ़रिशते आते हैं हज़र इज़्राईल अलैहिस्सलाम आते हैं और चार फ़रिशते आते हैं, दो फ़रिशते पाँव दबाते हैं, दो फ़रिशते हाथ दबाते हैं, हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम खुशख़बरी देते हैं। يَا اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْحَمِيْدَةِ كَانَتْ فِيْ جَسَدِ الْحَمِيْدِ ऐ मुबारक रूह मुबारक जिस्म के अंदर थी उख़रजी अब आओ बाहर अब आप के बाहर आने का वक़्त आ गया وابشر د بروح وريحان ورب راض عنك غير عضبان अब आप खुश हो जाओ जन्नत आप के लिए तय्यार है और अल्लाह आप पे राज़ी हो चुका है और अल्लाह जन्नत का दरवाज़ा खोलता है जब आँख पलटती है, देखा नहीं आपने आंख पलट जाती है। जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है या जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। एक मंज़र देख रहा है या जहन्नम देख रहा है जो ग़ायब था वह मुशाहदे में आ गया और जो मुशाहदे मैं था, वह ग़ैब में चला गया। فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَائَكَ (सूरह काफ़ आयत22) आज हमने तेरी आँखों से पर्दा हटाया और उस वक़्त इज़्राईल अलैहिस्सलाम कहते हैं اَنْ رُدُّكَ اِلٰى ذَالِكَ الدُّنْيَا तुझे वापस भेज दें, अब वह जन्नत को देख चुका है और वहाँ की नेमतें नज़र आ रही हैं। कहता है ऐ अल्लाह के बंदे! इज़्राईल क्या कह रहे हैं। الى دار الهموم والاحزان मुझे ग़मों

और मुसीबतों के घर में भेजना चाहते हो नहीं मुझे आगे को ले चलो, चाहे जवान चाहे बूढ़ा वह कहता है आगे ले चलो आगे ले चलो, मैं तो अगला मंज़र देख चुका हूँ। अब उसकी रूह निकलती है। सारे आलम में ख़ुशबू फैल जाती है और उसको लेकर पहले आसमान पर जाते हैं, दरवाज़ा खटखटाते हैं तो आसमान के फ़रिशते पूछते हैं कौन? فلان ابن فلان هاں نعم العبد فلان ابن فلان बेशक वह फ़लाँ बड़ा अच्छा आदमी है उसने तो कहा था اخرجی निकलो। वह फ़रिशते कहते हैं ادخلی आइए अंदर आइए ادخلی अंदर आइए। وابشرو بروح و ريحان ورب راض عنك غير غضبان अब अंदर आ जाइए। आलमे आख़िरत में आ जाइए और ख़ुशख़बरी ले लीजिए कि अल्लाह आप पर राज़ी हो चुका है और जन्नत आप के लिए तय्यार हो चुकी है।

मेरे मुहतरम भाइयो और दोस्तो! मुसलमान अल्लाह का सफ़ीर है ये आख़िरत का दाई है जन्नत का दाई है। मेरे भाइयो! जहन्नम से डराने वाला आप स० के तरीक़ों को वजूद देने वाला रबी इब्ने आमिर खड़ा होकर कह रहा है लोगों की गुलामी से निकाल कर अपने मौला की गुलामी पर डालने के लिए आए हैं हम काश्तकार नहीं, ज़मीनदार नहीं हम ताजिर नहीं, हम अल्लाह के दीन के दाई हैं। इस वक़्त मुसलमान से अल्लाह के दीन की दावत छूट चुकी है, दावत वाला काम छोटा है, मुसलमान दाई था दाई, ओहो इस मेहनत पर अल्लाह ने इस उम्मत को रुत्बा दिया, इस दावत पर अल्लाह ने इस उम्मत को उठाया। अगर ये उम्मत बैठती है अगर ये अपने मक़सद से हट जाती है, अपनी क़ीमत खो देती है ये मुसलमान जब दावत के मैदान में हरकत कर रहे थे और इसका एक एक सांस अल्लाह पाक के दीन के लिए वक़्फ़ था और इसका

एक एक रुपया अल्लाह के दीन पर कुर्बान था और इसकी तमन्ना अल्लाह के नाम पर मरने की और अल्लाह के रास्ते में क़ब्र बनाने की थी तो मेरे भाइयो! इनकी दुआऐं अर्शे मुअल्ला से टकरा रही थीं और उनका रोना फ़रिशतों को रुलाता था। एक नौजवान सहाबी नमाज़ पढ़ रहा है और नमाज़ में रोया। आपने फ़रमाया لقد ابكيت اعتين ملاء الملائكة كثيرا आज तेरे रोने ने बेशुमार फ़रिशतों को भी रुला दिया। ऐसा जवान था, जब यह अल्लाह के दीन की मेहनत में उतर रहा था ये वह जवान था कि फ़रिशते इस पर फ़ख़्र कर रहे थे। आप स॰ ने फ़रमाया कि ऐसी क़ीमती उम्मत है لولا شباب خشاع अगर तेरे से बढ़ने वाले नौजवान न हों وشيوخ عقع और दीन में बुढ़ापे को पहुंच कर कमरें झुक गईं, माज़ूर हो गए अगर ऐसे बूढ़े न हों। واطفال رضع दूध पीते बच्चे न हों वलबहाइम रुका और चरने वाले जानवर न हो صب عليكم العذاب صبا मैं तुम पर बारिशों की तरह अज़ाब को बरसा दूँगा तो इस उम्मत का नौजवान ऐसा क़ीमती है कि अगर ये अल्लाह पाक की इताअत पर आ जाता है तो मेरे भाइयो के निकले हुए ख़ौफ़ के आंसू अल्लाह के अज़ाब को उड़ा देते हैं और इस उम्मत का बूढ़ा इतना क़ीमती है कि अगर ये झुकी हुई कमर के साथ क़दम उठाता है तो अल्लाह का फ़र्श भी हिलता है और आए हुए अज़ाब भी उठ जाते हैं। इस उम्मत के साथ अल्लाह का ख़ुसूसी मामला था। اذا بلغ عبدى خمسين سنة حاسبة يسيرا जब ये मेरा बंदा पचास बरस का हो जाए मेरे नबी का कल्मा पढ़ता तो मैं उसका हिसाब आसान कर देता हूँ। واذا بلغ متين سنة حبيت اليهم انابا और जब ये साठ बरस का हो जाए तो मैं इसे अपनी मुहब्बत देना शुरू कर देता हूँ कि अब तो मेरे आने के क़रीब हो गया है। अब

तू दुनिया से निकल, दुकान में बैठना जाएज़ नहीं है। अब तू निकल حبت اليهم انايا अब तू साठ बरस का हो गया, मेरी तरफ़ आ, आ मैं अपनी तरफ़ रुजू देता हूँ। واذا بلغ سبعين احب الله واهل السماء जब सत्तर साल का हो जाता है तो अल्लाह तआला कहते हैं। फिर मैं भी और मेरे फ़रिशते भी मुहब्बत करते हैं कि सत्तर बरस का बूढ़ा हो गया है। दाढ़ी सफ़ेद हो गई है واذا بلغ ثمانين سنة जब अस्सी बरस का हो जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ابناء الثمانين استحمي ان اعبهم بالنار अस्सी बरस के बूढ़े को दोज़ख़ का अज़ाब देते हुए मुझे वैसे ही शर्म आती है। अल्लाहुअक्बर कि मैं कैसे अज़ाब दूं कि ये बूढ़ा हो गया। हाँ كتب حسانته والقيت سيئاته अल्लाह तआला कहता है भाई अब इसकी नेकियाँ ही लिखते रहे बस सठया गया। बूढ़ा हो गया, फ़र्ज़दक एक शाइर गुज़रा है शाइर आज़ाद ही होते हैं आम तौर पर। लेकिन इस ज़माने में का आज़ाद से आज़ाद भी आज बड़े कुतुब ग़ौस से भी ऊंचा दर्जा रखता है।

डाइजेस्ट न पढ़ें

हज़रत बशीर इब्ने अकरमा एक सहाबी हैं। उनके बाप अल्लाह के रास्ते में गए वहाँ शहीद हो गए माँ पहले इंतिक़ाल कर गई थीं। ये अकेले थे जब लशकर वापस आया तो अपने बाप के मिलने के शौक़ में मदीने से बाहर जाकर खड़े हो गए कि बाप को जाकर मिलूं तो जब सारा लशकर गुज़रा तो बाप नज़र नहीं आया तो फिर भागे हुए हुज़ूर स० की तरफ़ आप आगे आगे जा रहे थे पैदल ही थे। आगे जाकर खड़े हो गए। या रसूलुल्लाह माज़ा फ़अला अबी या रसूलुल्लाह मेरे बाप नज़र नहीं आ रहे। तो आप स० ने नज़रें चुरा। फ़ाअर्ज़ अन्नी तो आप ज़ब्त न कर सके और

आँसू बहने लगे तो हज़रत बशीर फ़रमाते हैं मैं आपकी टाँगों से लिपट गया और मैंने रोना शुरू कर दिया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी माँ पहले चली गई बाप भी चला गया अब मेरा दुनिया में कोई नहीं है तो हुजूर स॰ ने फ़ौरन फ़रमाया اما ترضا ان يكون رسول الله ابا كم عائشة امك क्या तू राज़ी नहीं कि आज के बाद अल्लाह का रसूल तेरा बाप हो आयशा तेरी माँ हो। तो हम अपने पहलों की कहानियाँ पढ़ें डाइजेस्ट न पढ़ें। सहाबा रज़ि॰ की ज़िंदगियाँ पढ़ें उन्होंने किस तरह अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाया और लोग हमसे कहते हैं कहाँ लिखा हुआ है कि बीवी छोड़ के चले जाना मैं उनसे कहता हूँ जहाँ लिखा है वहाँ आप पढ़ते नहीं और जहाँ आप पढ़ते हैं वहाँ लिखा नहीं। जंग अख़बार में तो नहीं लिखा होगा और डाइजेस्ट में तो नहीं लिखा होगा। ये तो कुर्आन में लिखा होगा हदीस में लिखा होगा। सहाबा की सीरत में लिखा होगा। कैसे कैसे उन्होंने अल्लाह के कल्मे को फैलाने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगाई और इन नस्लों तक इस्लाम पहुंचाया। तो आप भाई बहनें भी इसके इरादे करें कि आज के बाद ऐ अल्लाह तेरी मान कर चलेंगे और तेरे हुक्मों पर चलेंगे।

मौलाना तारिक़ जमील का तब्लीग़ में जाना

1971ई॰ में तीन दिन के लिए गया था कालेज में। तीन दिन के लिए गया और वहीं तीन दिन से चार महीने हो गए तो हमारे इलाक़े में मशहूर हो गया कि भई वह मियाँ अल्लाह बख़्श के बेटे को मौलवी अग़वा करके ले गया ये सारे इलाक़े में ख़बर मशहूर हुई। एक वह दौर था कि तब्लीग़ में जाना समझते थे कि भई अग़वा हो गया और फिर जब मैंने कालेज छोड़कर मदरसे में

दाख़िल होने का इरादा किया तो वालिद ने डंडा उठा लिया और माँ ने कहा तुम्हें आक़ कर देंगे। तुम्हें घर से निकाल देंगे। तू मुल्ला बनना चाहता है। हमारी नाक कटवाना चाहता है। हम किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं। तुझे लाहौर पढ़ाया तुझ पर इतने हज़ारों रुपये ख़र्च किये। अब तू कहता है कि मैं फ़लाँ बनूंगा। हरगिज़ इसको बर्दाश्त नहीं करेंगे। ये आज से 26 साल पहले का दौर बता रहा हूँ। आज ऐसे घरों में अल्लाह दीन की दावत को पहुंचा रहा है। शहज़ादों की औलाद उठ उठ कर हमारे मदरसों में आके अरब की औलाद दीन पढ़ रही है। शहज़ादों के बेटे चटाइयों पर बैठे हुए कुर्आन पढ़ रहे हैं। हदीस पढ़ रहे हैं। या वह दौर था कि ज़मीनदार का बेटा तो उसके लिए सारे जनाब आ जाते मेरे वालिद के डेरे पर ओ मियाँ साहब तेरे बेटे को मौलवियों ने बरबाद कर दिया। एक दफ़ा सियालकोट हमारी जमाअत गई। 1972ई॰ की बात है ऐसे ही एक घर था रमज़ान शरीफ़ था तो उस ताजिर ने हमारी दावत की वह नेक आदमी था। उसने हमारी इफ़्तार की दावत कर दी तो उसके घर के दो लान थे एक में उसने हमें बिठाया। नीचे एक तरफ़ शहर के ताजिर वग़ैरा दूसरी तरफ़। उस वक़्त में ये 1972ई॰ की बात है रमज़ान शरीफ़ नवम्बर में था। हम बैठे हुए थे मिसकीनों की तरह और वह हमें देख देख कर मज़ाक़ उड़ाऐं और हंसें। अब मुझे गुस्सा भी चढ़े कि इन्होंने क्या समझा है। हमें फ़क़ीर समझते हैं और हिम्मत भी न हो कि उनसे बात कर सकूँ तो मैंने अपने अमीर से कहा अमीर साहब कभी ऐसा दिन आएगा कि इन लोगों को भी हम दे सकेंगे मुझसे कहने लगे बेटा ग़रीबों में काम करते रहो यहीं से आग़ाज़ अल्लाह तआला हर घर में पहुंचा देगा। अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से

अदना से आला तक को अल्लाह तआला ने इस मेहनत में उठा दिया है। तो इसके लिए बताओ भाई नाम लिख कर भाई इरादे करो भाई। हाँ भाई बोलो। भाई लिखो भाई कोई तय्यार करो बहनो को।

क़ाबिले फ़िक्र हदीस शरीफ़

ये तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है اذا تخذ الفئی ادولا...... जब हुकूमत के माल में हुकूमत के कारिंदे ख़्यानत करेंगे या जब माल चंद हाथों में आ जाएगा, जब लोग दौलत समेट लेंगे, सूद के निज़ाम से, सट्टेबाज़ी के निज़ाम से, जुए के निज़ाम से, ज़ख़ीरा अंदोज़ी के निज़ाम से जब दौलत चंद हाथों में होगी। والامانة مغنما अमानत खाएंगे, कोई अमानत वाला नहीं रहेगा...... والزكوة مغرما कोई ज़कात देने वाला नहीं होगा। ज़कात को टेक्स कहेंगे, ज़मीनदार कहेंगे हमारे ख़र्चे पूरे नहीं होते, हम अश्र कहाँ से दें? ताजिर कहेंगे हमने खुद कमाया है क्यों ग़रीब को दें? हमारी ज़ाती मेहनत की कमाई है।

وتعلم لغير الدين...... और जब ये उम्मत इल्मे दीन को दुनिया कमाने के लिए पढ़ेगी, अल्लाह के लिए नहीं पढ़ेगी। واطاع الرجل زوجته...... लोग अपनी बीवियों की फ़रमाँबरदारी करेंगे।

وعق امه...... और माओं की नाफ़रमानी करेंगे।

وادنى صديقه...... अपने दोस्त को गले लगा के मिलेंगे।

واقصى اباه...... बाप को देख के राह बदल जाएंगे कि कहीं बाप से बात न करनी पड़े।......وساد القبيلة فاسقهم क़बीले का सरदार शराबी होगा, नाफ़रमान होगा।

وكان رئيس القوم ارذلهم...... हुकूमत नाअहल और ज़लील इंसानों के हाथ में होगी।

واكرم الرجل مخافه شره...... एक दूसरे को सलाम करेंगे मगर अल्लाह के लिए नहीं, उसके शर से बचने के लिए। وارتفعت الاصوات في المساجد...... सज्दों में लड़ाईयाँ होंगी, ऊंची आवाज़ें होंगी।...... وظهرت القينات गाने वालियाँ मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम हो जाएंगी, गाने वालियों को शोहरत मिल जाएगी। ......والمعازف और गाना बजाना आम हो जाएगा।

وشربت الخمور...... और शराब पी जाएगी और उसको गुनाह नहीं समझा जाएगा।

ولبس الحرير...... और मर्द रेशम पहनेंगे।

ولعن اخرهذه الامة اولها...... और आज के लोग पहले के लोगों को बुरा कहेंगे। वह ऐसे ही हैं अनपढ़ ज़माना था। आज तरक़्क़ी का ज़माना है वह ऊंटों का दौर था आज रॉकिट का दौर है जब ये पंद्रह काम ये उम्मत करेगी। हालाँकि इससे ज़्यादा सख़्त गुनाह काफ़िर के ऐसे हैं मगर उनको छुट्टी है उनके मुक़ाबले में छोटे काम हैं।

कौनसा अमल फ़ज़ीलत वाला है?

एक दफ़ा हज़रत अब्बास रज़ि॰ कहने लगे मैं हाजियों को पानी पिलाऊं मेरे लिऐ काफ़ी है। हज़रत हम्ज़ा रज़ि॰ ने कहा मैं बैतुल्लाह में बैठ कर इबादत करूं मेरे लिए काफ़ी है हज़रत उमर रज़ि॰ ने कहा कि भाई पूछ लेते हैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से। वह क्या फ़रमाते हैं कि अल्लाह को क्या पसंद है। जुमा का दिन था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुत्बे और नमाज़ से फ़ारिग़ हुए हज़रत उमर रज़ि॰ ने पूछा तो अल्लाह ने ख़ुद जवाब दिया अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जवाब देने से पहले।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجَاهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِ الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (सूरह तौबा आयत नम्बर19) कि मेरे रास्ते में जिहाद करने वाला और हाजियों को पानी पिलाने वाला और बैतुल्लाह में इबादत करने वाला ये आपस में बराबर नहीं हैं और इनको बराबर समझना भी ज़ुल्म है। وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ का ये मतलब है कि जो अल्लाह के रास्ते में फिरने वाले और मस्जिद में बैठकर इबादत करने वाले को बराबर समझता है वह भी ज़ालिम है और ज़ालिम को हिदायत नहीं मिलती।

अल्लाह तआला फिर आगे फ़रमा रहे हैं कि जो ईमान लाए और जो हिज्रत के लिए घर छोड़े। وجاهدوا और अल्लाह के दीन को ज़िंदा करने के लिए अपनी जान व माल से जिहाद किया। मेहनत करके दीन को ज़िंदा करने के लिए जान व माल की कुर्बानियाँ दीं। यही लोग हैं बुलंद मरतबे वाले।

इस उम्मत को नबियों की तरह आलीशान मक़ाम मिला

अल्लाह तआला ने किसी उम्मत के ज़िम्मे ये नहीं लगाया कि मेरा पैग़ाम तुमने आगे भी पहुंचाया है। इस उम्मत के ज़िम्मे ये लगाया कि नबियों की तरह मेरे पैग़ाम को आगे पहुंचाओ और किसी के ज़िम्मे नहीं लगा हमारे ज़िम्मे लगा जैसे अल्लाह तआला ने नबियों को आलीशान मरतबा अता किया इसी तरह अल्लाह तआला ने इस उम्मत को भी नबियों की तरह बहुत अज़ीम आलीशान मक़ाम अता फ़रमाया। ये मक़ाम क्यों और किस वजह से मिला?

उनकी दावत की वजह से कि लोग अल्लाह की तरफ़ बुलाते

हैं। उसके लिए घर छोड़ते हैं। काम छोड़ते हैं। बीवी बच्चों को छोड़ते हैं और सारी दुनिया में फिरते हैं ये सुन्नत अंबिया की थी एक लाख चौबीस हज़ार नबियों की थी। अल्लाह तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आख़िरी नबी बना कर ये ज़िम्मेदारी उम्मत की तरफ़ मुंतक़िल फ़रमा दी। अब फिरने वाला बैठने वाला आपस में बराबर नहीं हो सकता।

एक रात का पहरा देने से जन्नत वाजिब होगी:

जंगे हुनैन के मौक़े पर आप स. ने फ़रमाया आज रात पहरा कौन देगा तो हज़रत अनस बिन मुर्शिद अलग़नमी रज़ि. ने कहा या रसूलुल्लाह मैं पहरा दूंगा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा जा चला जा। इस घाटी पर खड़ा हो जा वह गए और रात का पहरा दिया जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई सलाम फैरने के बाद पूछा।

भाई वह हमारे पहरेदार का क्या बना तो लोगों ने कहा अभी आया नहीं फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दूर देखा तो मिट्टी उड़ रही थी आप स. ने कहा वह आ रहा है अभी आप मुसल्ले से नहीं उठे थे कि वह आकर आप स. के सामने खड़ा हो गया। घोड़े पर सवार था आप स. को सलाम किया। आप स. ने फ़रमाया कैसा रहा जी मैंने सारी रात पहरा दिया आप स. ने पूछा घोड़े से उतरा कहा जी नहीं उतरा नमाज़ पढ़ने के लिए उतरा हूँ या इसतिंजे के लिए उतरा हूँ इसके अलावा नहीं उतरा तो आप स. ने फ़रमाया مَاعَلَيْهِ اَنْ لَّا يَعْمَلَ بَعْدَهٗ۔

आज के बाद अगर तू कोई अमल भी न करे तो जन्नत तो जन्नत तेरे लिए वाजिब हो गई एक रात का पहरा देने से कहा कहा तेरे लिए जन्नत हो गई सारी ज़िंदगी घर में इबादत करे

इससे जन्नत वाजिब होने की खुशखबरी नहीं लेकिन अल्लाह के रास्ते में एक रात का पहरा दे दे सारी ज़िंदगी के लिए जन्नत वाजिब हो गई।

इस अमल को अल्लाह तआला ने हमारे लिए तिजारत बना दिया

अगर एक आदमी बैतुल्लाह शरीफ़ में हज्रे असवद के सामने खड़ा हो और लैलतुल क़द्र हो। फिर लैलतुल क़द्र में हज्रे असवद के सामने सारी रात नफ़िल पढ़े। बैतुल्लाह में एक रात एक लाख के बराबर और वह एक रात हज़ार महीने से ज़्यादा बेहतर तो उधर एक लाख को एक हज़ार से ज़रब दी जाए तो दस करोड़ महीने की इबादत से ज़्यादा बेहतर है एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़े हो जाना।

दूसरी रिवायतः एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़ा हो जाना। सारी ज़िंदगी की इबादत से बेहतर है।

तीसरी रिवायतः एक घड़ी अल्लाह के रास्ते में खड़ा हो जाए तो सत्तर साल की इबादत से बेहतर है एक घड़ी की जब इतनी क़ीमत है तो भाई साल की कितनी होगी चार महीने की कितनी होगी चिल्ले की कितनी होगी तीन चिल्ले की कितनी होगी। कितनी ताक़त होगी एक घड़ी की जब इतनी होगी तो कितनी घड़ियाँ बनती हैं एक घड़ी में बीस मिनट की कहते हैं लोग। बीस मिनट को एक घड़ी कहते हैं। बीस मिनट का इतना अजर तो साल लगाने का चार महीने लगाने का चिल्ला लगाने का सारी ज़िंदगी देने का हर साल तीन चिल्ले देने का कितना अल्लाह तआला नसीब फ़रमाएगा। लिहाज़ा इसके बराबर अल्लाह तआला ने अमल कोई नहीं बनाया फिर इस अमल को अल्लाह तआला ने

हमारे लिए तिजारत बनाया और नमाज़ को तिजारत नहीं कहा रोज़े को तिजारत नहीं कहा हज को तिजारत नहीं कहा ज़कात को तिजारत नहीं कहा। ख़ैरात को तिजारत नहीं कहा तहज्जुद को तिजारत नहीं कहा। भाई इल्म सीखने सिखाने को तिजारत नहीं कहा इसको तिजारत कहा है।

هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ـ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَ تُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ـ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ـ

(सूरह अलसफ़ आयत10–11)

मैं तुम्हें एक तिजारत बताता हूँ जो तुम्हें बड़े अज़ाब से बचाएगी। मेरे और मेरे रसूल पर ईमान लाओ। और अपनी जान व माल के साथ मेरे रास्ते में फिर कर जिहाद करो। ये तुम्हारे लिए बड़ी आला चीज़ है अगर तुम्हें पता चल जाए।

पूरे टीन में थोड़ा सा घी बाक़ी मिट्टी

दौरे अव्वल की हुकूमतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिआ थीं, उनकी तिजारतें इस्लाम के फैलाने का ज़रिआ थीं। हमारी तिजारतें इस्लाम को मिटाने का ज़रिआ हैं। यमन में हमारी जमाअत गश्त कर रही थी तो कराची के अब्दुर्रशीद साथ थे वह गश्त में बात कर रहे थे। एक ताजिर की बड़ी दुकान थी। हमने उससे कहा कि हम आपके भाई हैं, पाकिस्तान से आए हैं। उसने एक दम गिरेबान से पकड़ लिया और कहा तुम पाकिस्तानी हो और फिर ज़ोर से झटका दिया। तो सारे घबरा गए पता नहीं क्या चक्कर है? उसको घसीटता हुआ पीछे स्टोर में ले गया। पीछे बहुत बड़ा स्टोर था। उसमें घी के कनस्तर लगे हुए थे। कहने लगा ये सारा घी पाकिस्तान से आया है। उसने एक खोला और उल्टा दिया, और

थोड़ा सा घी बाक़ी सारी मिट्टी भरी हुई थी। उसने पैसा तो कमा लिया लेकिन ये नहीं सोचा कि इसके साथ कितने जहन्नम के बिच्छू मेरी क़ब्र में आ गए।

गूंगे दाई बन गए

हमारे तलंबे में गूंगों की एक जमाअत आई, एक गूंगा दूसरे गूंगे को तय्यार कर रहा था मैं उसको देख रहा था, वह कहता तो चल, वह था चर्सी, वह कहता मैं नहीं जाता, अब जब सारे हरबे बेकार हो गए तो उसने उसको कहा तू मर जाएगा, उसने कंधे का इशारा किया, फिर कहा तेरी क़ब्र खोद रहे, अब वह उसको देख रहा, फिर कहा तुझे डाल रहे, फिर ऊपर मिट्टी आ गई, फिर आगे सांप का इशारा किया, तब्लीग़ हो रही है, क़ुर्बान जाऐं अल्लाह के रसूल पर, अश्शाहिद ने गूंगे भी खींच लिए और अल्लाह ने ज़िंदा करके दिखा दिया, काम करके दिखाया कि लफ़्ज़ शाहिदी ही यहाँ फ़िट था, अब वह सांप की आवाज़ निकाल रहा, अपने हाथ के इशारे से उसको एक डंग इधर मारा, एक उधर मारा, फिर उसने तीली जलाई, फिर कहा आग तेरी क़ब्र में जल रही है अब उसका रंग एक आ रहा है, एक जा रहा है, फिर कहने लगा तूने बिस्तर उठाया और हमारे साथ चला तो उसने कोई इशारा किया जन्नत का, वह तो मुझे याद नहीं रहा लेकिन अगला इशारा याद रहा, हूर का, कोके का इशारा क्या मतलब हूर और बड़ी ख़ूबसूरत हूर, कहा तुझे मिलेगी, मेरे सामने वह तीन दिन के लिए तय्यार हो गया।

दयानतदारी का बेमिसाल नमूना

मुबारक एक गुलाम है उसके आक़ा बाग़ में आते हैं। अनार का बाग़ है। "आक़ा ने कहा एक अनार तोड़ कर लाओ" लाए तो

खट्टा। कहा भाई खट्टा है और लाओ। वह दूसरा ले आए दूसरा भी खट्टा भाई और लाओ। वह तीसरा लाए वह भी खट्टा। कहा तुम अजीब आदमी हो दस साल हो गए बाग़ में काम करते हुए तुम्हें इतना पता नहीं खट्टा कौनसा है और मीठा कौनसा है। कहा आपने मुझे चखने की इजाज़त थोड़ा दी है? दस साल से काम कर रहा हूँ और मुझ पर हराम है एक दाना भी चखा हो। मुझे क्या पता खट्टा कौनसा है और मीठा कौनसा है। तो उसकी आँखें फट गई। ये दयानत थी एक गुलाम की।

अल्लाह तआला से जुड़ने का रास्ता मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं

अल्लाह की ज़ात से जुड़ने का रास्ता मुहम्मद स॰ हैं। अल्लाह ने अपने नाम के साथ नबी स॰ का नाम जोड़ा हुआ है। आप स॰ मेराज तशरीफ़ ले गए। अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! इब्राहीम अलै॰ आप के ख़लील हैं, मूसा कलीम हैं, दाऊद के लिए आप ने लोहा नरम किया। सुलैमान अलै॰ के लिए आप ने हवाऐं ताबे कीं। ईसा अलै॰ के लिए आपने मुर्दे ज़िंदा किए। ऐ अल्लाह मेरे लिए क्या है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया ऐ मेरे हबीब! आपको मैंने सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई है। क़यामत तक तेरा नाम मेरे नाम के साथ रहेगा। तेरा नाम मेरे नाम से हट नहीं सकता। ये मैंने तुझे सबसे आला चीज़ अता फ़रमाई है। अल्लाह से जुड़ने का रास्ता मुहम्मद स॰ हैं। आप स॰ की ज़िंदगी, घर की भी, मस्जिद की भी, बाज़ार की भी, मआशरत की भी, मईशत की भी, हुकूमत की भी, अदल की भी, अख़्लाक़ की, इबादत की हर रात की, पूरी ज़िंदगी हुज़ूर स॰ वाले तर्ज़ में ढल जाए। यहाँ काले गौरे की शर्त नहीं, अजम व अरब की शर्त नहीं, तरीक़ा अल्लाह के नबी का होना चाहिए।

सबसे ऊंचा नबी स.। ये सबसे अफ़ज़ल नबी स. है। अल्लाह ने कुर्आन में किसी नबी की क़सम नहीं खाई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो क़समें खाई हैं आपकी जान की क़सम ये नशे में फिर रहे हैं لعمرك انهم لفی غمرتهم يعمهون अल्लाह ने कुर्आन पाक में दो सौ सत्ताईस मर्तबा हुज़ूर स. को पुकारा है। एक दफ़ा भी या मुहम्मद और अहमद नहीं कहा, लक़ब से पुकारा है। मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की "अल्लाह! मेरा सीना खोल दे" अल्लाह ने अपने हबीब को बिन मांगे फ़रमाया हमने आपका सीना खोल दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की मेरा काम आसान कर दे। अल्लाह ने अपने हबीब को बिन मांगे फ़रमाया "हमने आपका बोझ हटा दिया" इब्राहीम अलै. ने दुआ की "ऐ अल्लाह! आने वाले लोगों में मेरा ज़िक्र अच्छा कर दे" अल्लाह ने अपने हबीब को बिन मांगे फ़रमाया "हमने आप के ज़िक्र को ऊंचा कर दिया وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ (सूरह अलम नशरा)

एक नौ मुस्लिम की नसीहत आमूज़ वसियत

1978ई. में एक पादरी फ़्रांस से आया वह मुसलमान हुआ तैवनस की जमाअत को देख कर अब्दुल मजीद उसका इस्लामी नाम रखा उसने जमाअत के अमीर के नाम पर अपना इस्लामी नाम रखा जब वह रायवंड आया तो उस पादरी की उम्र अस्सी(80) साल के दरमियान थी तो उसने बताया कि मैं तीस बरस से कुर्आन पढ़ता था लेकिन कुर्आन के मुताबिक़ किसी को देखता नहीं था। मुझे यक़ीन था कि कुर्आन मजीद हक़ है तो जमाअत को देख कर मुझे अच्छी ख़ुशबू आई उनको अपने गिरजे में ठहराया कुछ वसियतें कीं। उसने पाकिस्तान आकर कहा कि मैं आप को दो बातों की वसियत करता हूँ।

(1) आपका ये जो लिबास है पगड़ी, दाढ़ी, शलवार और कुर्ता इसको हरगिज़ हरगिज़ न छोड़ें आप चाहे जहाँ हों जो आपका ज़ाहिरी हुलिया है उसमें वह ताक़त है जो किसी और चीज़ में नहीं।

(2) यूरप में फिरें तो आज़ान देकर बाजमाअत नमाज़ पढ़ें। ये दो बातें खंजर की तरह मेरे सीने में लगती हैं ये पादरी पछत्तर बरस की उम्र में अपने इल्म का निचोड़ बता रहा है फिर वह दुआ किया करता था कि या अल्लाह मेरी मौत फ़्रांस में न आए किसी मुसलमान मुल्क में आए चिल्ले के लिए तैवनस गया था वहीं इंतिक़ाल हुआ वहीं दफ़न हुआ।

हुज़ूर की जुदाई में सुतून का रोना और चीख़ना

जिस खुजूर के सुतून पर आप स॰ टेक लगा कर ख़ुत्बा दिया करते थे जब आप स॰ के लिए मिम्बर बना दिया गया और आप स॰ हुज्रा मुबारक से तशरीफ़ लाए और मिम्बर पर क़दम रखने लगे तो सुतून ने देखा कि आप स॰ आगे चले गए हैं और मुझे छोड़ दिया। فحن حنين العشار तो वह ऐसा चीख़ा जैसे दस माह कि गाभिन ऊंटनी चीख़ती है, इतनी ज़ोर से चीख़ा कि सारी मस्जिद में उसकी आवाज़ सुनाई दी, आप स॰ वापस मुड़े और उसको सीने से लगाया और फ़रमाया क्या तू राज़ी नहीं कि जन्नत में चला जाए और जन्नत वाले तेरा फल खाएं? तो वह ऐसे ख़ामोश हुआ कि उस की सिसकियों और हिचकियों की आवाज़ आ रही थीं आप स॰ ने फ़रमाया والذين نفسي محمد بيده،لولم التزمه अगर मैं उसको अपने सीने से न लगाता। مازال باكيا خطباحتى يوم القيامة حزنا على فراق رسول الله، तो ये मेरी जुदाई के सदमे में क़यामत तक रोता रहता ऐसी बेजान चीज़ों को भी

आप स॰ की रिसालत का इक़रार है और फिर आगे रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं बाज़ में आता है कि आप स॰ ने फ़रमाया कि जाओ इसको दफ़न कर दो और इसको मस्जिद से निकाला गया और बाज़ में आता है कि ज़मीन फट गई और वह उसके अंदर ग़ायब हो गया तो सारी मख़्लूक़ात पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबूव्वत छाई हुई थी।

सरकश ऊंट हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़दमों में गिर पड़ा

एक अंसारी सहाबी रज़ि॰ आए कि या रसूलुल्लाह स॰ मेरे दो ऊंट सरकश हो गए हैं, आप स॰ ने फ़रमाया कि मुझे ले चलो, बाग़ में तशरीफ़ ले गए तो दरवाज़ा बंद था, एक ऊंट सामने खड़ा था बिलबिला रहा था, आप स॰ ने फ़रमाया दरवाज़ा खोलो उसने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझे डर लगता है कि आप स॰ को नुक़सान पहुंचाऐंगे। आप स॰ ने फ़रमाया मुझे कुछ नहीं कहेंगे दरवाज़ा खोलो जब ऊंट की निगाह आप स॰ पर पड़ी दौड़ कर आया क़दमों में गिर गया। आप स॰ ने रस्सी से बांध लिया कि ले ये कभी तेरा नाफ़रमान नहीं होगा दूसरे की तरफ़ देखा तो वह भी उसी तरह आया और आप स॰ के क़दमों पर सर डाल दिया आप स॰ ने उसको भी रस्सी से बांध दिया कि लो ये भी नाफ़रमानी नहीं करेगा जानवरों को भी पता है कि ये अल्लाह के रसूल स॰ हैं।

जन्नतुल फ़िरदौस को अल्लाह तआला ने अपने हाथ से बनाया

अल्लाह तआला ने जन्नत में एक जन्नत ऐसी बनाई है

जिसको अपने हाथ से बनाया है एक जन्नत अल्लाह ने बनाई है अपने अम्र कुन के साथ वह बन गई। एक जन्नत अल्लाह ने बनाई है अपने हाथ के साथ उसका नाम जन्नतुल फ़िरदौस रखा है इसमें भी दो दर्जे हैं। और एक दूसरे दर्जे के दरमियान इतना सफ़र है जितना ज़मीन व आसमान का फ़ासला है और वह जन्नत इतनी ऊंची है कि नीचे वाले जन्नती जब इस जन्नत को देखेंगे तो उनको इस तरह नज़र आएगा जिस तरह आसमान पर हमें आज एक सितारा नज़र आता है तो नीचे वाले जन्नती कहेंगे वह जन्नतुल फ़िरदौस है।

हज़रत मूसा अलै॰ के ज़माने में क़ारून का ज़मीन में धंसना

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने में क़ारून नामी एक शख़्स था उसने हज़रत मूसा अलै॰ पर बदकारी की तोहमत लगाने का प्रोग्राम बनाया, मगर जिस औरत ने रक़म वसूल करके भरी महफ़िल में इल्ज़ाम लगाना था उसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ आ गया और उसने असल हक़ीक़त से लोगों को आगाह कर दिया। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जलाली पैग़म्बर थे गुस्से से कांपने लगे और दुआ की कि ऐ अल्लाह मैं तेरा पैग़म्बर हूँ और मुझ पर ये इल्ज़ाम? अल्लाह ने फ़रमाया ऐ मूसा ज़मीन तेरे ताबे है तेरा हुक्म मानेगी मूसा ने कहा ज़मीन इसको पकड़ ले ज़मीन फटी और क़ारून के पाँव ज़मीन के अंदर धंस गए उसने माफ़ी मांगी मूसा ने कहा और पकड़ घुटनों तक चला गया फिर रोया और माफ़ी मांगी आप अलै॰ ने फ़रमाया और पकड़ तो कमर तक चला गया फिर बहुत रोया और माफ़ियाँ मांगता रहा आप अलै॰ ने फ़रमाया और पकड़। फिर गर्दन तक अंदर चला गया फिर बहुत

ज़्यादा रोया और बहुत ज़्यादा माफ़ियाँ मांगी। आप अलै॰ ने फ़रमाया और पकड़। क़ारून सारा ज़मीन के अंदर धंस गया और ज़मीन ऊपर से बंद हो गई।

अल्लाह ने फ़रमाया ऐ मूसा जिस तरह रो कर गिड़गिड़ा कर तुझ से ये माफ़ियाँ मांगता रहा अगर इस तरह मुझसे एक मरतबा भी माफ़ी मांग लेता तो मैं माफ़ कर देता ये अल्लाह का क़ानून है कि पहले दावत वाले को भेज कर समझाया जाता है फिर पकड़ा जाता है।

मेराज रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वाक़िआ

रसूले करीम स॰ हज़रत अली रज़ि॰ की बहन उम्मे हानी रज़ि॰ के घर लेटे हुए हैं। जिब्रईल अलैहिस्सलाम आते हैं और फ़रमाते हैं या रसूलुल्लाह स॰ आसमान सजाए जा चुके हैं। मेराज की रात है। जन्नत को सजाया गया है। हुक्म हुआ सातों आसमानों को सजाया जाए। बुराक़ पर सवार हैं पहला क़दम पहले आसमान पर है हज़रत आदम अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं दूसरें पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं तीसरे आसमान पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं चौथे आसमान पर हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं। पाँचवें आसमान पर हज़रत हारून अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं। छठे आसमान पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस्तक़्बाल कर रहे हैं। सातवें आसमान पर बैतुल्लाह देखा। एक ज़मीन पर बैतुल्लाह एक आसमान पर बैतुल्लाह। एक बड़े मियाँ टेक लगा कर दीवार के साथ बैठे हुए हैं। ये बड़े आदमी खड़े हुए। मेंरे नबी स॰ ने कहा मरहबा नेक भाई मरहबा मेरे नेक नबी। इस बड़े

आदमी ने कहा "मरहबा मेरे नेक बेटे!"

हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा कि ये बुज़ुर्ग कौन हैं। जवाब मिला कि ये आप स. के दादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। सिदरतुल मुन्तहा पर जिब्रईल अलै. भी रुक गए। या रसूलुल्लाह आगे मैं भी नहीं जा सकता। अल्लाह ने तख़्त नीचे उतारा। अर्श के सत्तर हज़ार पर्दे हैं जिन पर कोई मख़्लूक़ नहीं पहुंच सकी। सत्तर हज़ार पर्दों को चीर कर अल्लाह तआला ने अपने सामने खड़ा किया। इतना बड़ा ज़र्फ़ दिया। दिल में इतनी ताक़त दी कि मूसा अलैहिस्सलाम एक तजल्ली पर बेहोश हो गए यहाँ आमना सामना है। इसके बावजूद अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं ऐ मेरे हबीब स.! मेरे क़रीब आ जाओ। ثُمَّ دَنٰى فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ
قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى (सूरह अन्नजम आयत9) इतना बड़ा ज़र्फ़ इतना
बड़ा कुशादा सीना। इतनी बड़ी ताक़त। जिस नबी स. के हम
मानने वाले हैं। इतना अज़ीमुश्शान नबी स. उसकी कुर्बानियों का
कुछ तो हम सिला दें। क्या हम सिला दे सकते हैं? ताइफ़ के
पत्थरों का कोई सिला दे सकता है। कितने मील पत्थर बरसते
रहे। कितने मील दौड़े ख़ून एक दो पत्थरों से नहीं निकलता।
पहले चमड़ी नीली होती है फिर रिस्ती है फिर फटती है और फिर
ख़ून निकलता है और ऐसा बेबसी का आलम है। गुलाम के कंधों
पर डाला है। दुशमन के बाग़ में पनाह लेने पर मजबूर हो जाते हैं।
जंगे बदर में दुशमनों का झंडा जिसके हाथ में है वह भी कहने
लगा कि देखो देखो अब्दुल मुत्तलिब के बेटे का क्या हाल हो गया
है। जिसकी हालत को देख कर दुशमनों के भी दिल पसीज गए
आज हमने उसी की ज़िंदगी को उठा कर फैंक दिया। रिसालत
की अज़मत के वास्ते से दिल भरा हुआ। हमें ये पता हो कि दीन

कैसे आया है कि इतनी भी क़दर नहीं है।

मसअब बिन उमैर रज़ि॰ तीन सौ दिरहम का जोड़ा पहनते थे

सहाबा रज़ि॰ कहते थे कभी तो हम भी पेट भर के खाना खाएंगे। मसअब बिन उमैर रज़ि॰ सामने से गुज़रे। मक्के में ऐसे मालदार के बेटे थे कि उस ज़माने में तीन सौ दिरहम का जोड़ा पहनते थे और जब मुसलमान हो गए तो आप स॰ की महफ़िल के सामने से गुज़रे तो टाट पहना हुआ था। उसमें भी चमड़े का पैवंद लगा हुआ था। टाट भी पुराना था। हुजूरे अक्रम स॰ उसको देख कर रोने लगे। कहा देखो इस नौजवान को मक्के में इसका क्या हाल था और आज क्या है। फिर आप स॰ ने फ़रमाया तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम सुबह को जोड़ा बदलोगे। शाम को जोड़ा बदलोगे। खाने की एक क़िस्म दस्तरख़्वान पर आएगी, वह उठेगी तो दूसरी लाई जाएगी। उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा? सहाबा रज़ि॰ ख़ुशी से कहने लगे "या रसूलुल्लाह स॰! फिर तो बड़े मज़े होंगे, मशक़्क़त हट जाएगी फिर तो हम अल्लाह ही अल्लाह करते रहेंगे" आप स॰ ने फ़रमाया तुम आपस में टकराओगे, माल की हवस में एक दूसरे की गर्दनें काटोगे।

मैं ख़ूबसूरत हूँ और मेरा शौहर दूसरी शादी करना चाहता है

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के पास एक औरत आई। कहा हज़रत अगर पर्दे का हुक्म न होता तो मैं आप को अपना चेहरा दिखाती। लेकिन अल्लाह ने हराम क़रार दिया है कि मैं अपना नक़ाब उठाऊं लेकिन अगर इजाज़त होती तो मैं

आपको अपना चेहरा ज़रूर दिखाती कि मैं इतनी ख़ूबसूरत हूँ, इसके बावजूद मेरा ख़ाविंद दूसरी शादी करना चाहता है तो शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह ग़श खा के गिर गए। लोग बड़े हैरान हुए कि किस बात पे ग़श आ गया। उनके पास एक औरत अपनी बात लेकर आई है। अपनी ग़ैरत का तक़ाज़ा लेकर आई है। जब होश आया तो फ़रमाया। ऐ लोगो। ये मख़्लूक़ है जो मुहब्बत में ग़ैर को शरीक नहीं कर रही। अल्लाह अपनी मुहब्बत में किसी ग़ैर की शिर्कत कैसे बर्दाश्त करेगा। मख़्लूक़ बर्दाश्त करती नहीं लेकिन अल्लाह ने बर्दाश्त किया हुआ है। इस दिल में कितने बुत बिठाए हुए हैं। मगर अल्लाह करीम है कि बर्दाश्त करके चल रहा है।

हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के नाबीना होने की हिक्मत

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को अपने बाप से चालिस बरस जुदा रखा फिर चालिस साल के बाद मिलाया। रो रो के आँखें सफ़ेद कर दीं। وابيضت عيناه من الحزن فهو كظيم सफ़ेद हो गई आँखें। जब मिल गए नाँ तो फिर अल्लाह तआला कहने लगे। बताऊं क्यों दूर किया था। कहा बताइए। कहा एक दफ़ा तू नमाज़ पढ़ रहा था। यूसुफ़ अलै॰ बच्चा तेरे पास लेटा हुआ था। नमाज़ के दौरान ये रोने लगा। तेरी तवज्जो मुझसे हट कर उधर चली गई। उस ग़ैरत ने जुदा किया था कि मेरा नबी हो नमाज़ में खड़ा होकर अपने बच्चे को सोचे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से क्यों कहा कि इस्माईल अलैहिस्सलाम पर छुरी चला दे (हमें बताने के लिए) कि तूने नबी के तरीक़े पे आना है। यही हमारी मेराज है। यही

हमारा मक़्सद है इस पर जान चली जाए मंज़ूर है जान बच जाए अलहम्दु लिल्लाह।

एक अरब फ़रिश्तों का हाफ़िज़े कुर्आन को अल्लाह का सलाम

नुबूव्वत भी आप स. की मुकम्मल की जा रही है और किताब भी मुकम्मल की जा रही है जिन सीनों में ये कुर्आन उतरेगा उनको जहन्नम की आग खा नहीं सकती चाहे वह बदअमली की वजह से जहन्नम में जाए लेकिन कुर्आन के अल्फ़ाज़ को सीनों में लेने की बरकत ये होगी कि आग उसको नहीं जला सकती, सांप काटे बिच्छू काटे फ़रिश्ते पिटाई करें ये सब कुछ हो सकता है क्योंकि उनके अंदर कुर्आन के अल्फ़ाज़ हैं, अमल कोई नहीं अल्फ़ाज़ की क़ीमत है अल्फ़ाज़ की यह क़ीमत है अल्फ़ाज़ को भी अंदर ले लें और अमल को भी अंदर ले लें।

ان فی الجنة نهر اسمه،ریان علیه مدینه من مرجان له سبعون الف باب میں ذهب وفضة لحامل القرآن۔

जन्नत में एक नहर है जिसका नाम रय्यान है जिसमें सत्तर हज़ार दरवाज़े हैं जो सोने चांदी के हैं ये हामिले कुर्आन के लिए हैं यहाँ हाफ़िज़े कुर्आन के बजाए हामिले कुर्आन फ़रमाया है कि ये कुर्आन को लेकर चल रहे हैं उसमें उलमा भी दाख़िल हो जाऐंगे और हुफ़्फ़ाज़े किराम भी दाख़िल हो जाऐंगे जो कुर्आन को लेकर चलते हैं अमल की शर्त नहीं सिर्फ़ अल्फ़ाज़ की बरकत से जहन्नम की आग नहीं जलाऐगी और अगर अमल को भी ले लिया अल्फ़ाज़ को भी ले लिया और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी को भी ढाल दिया तो "नूरुन अला नूर" ये सिर्फ़ एक महल दिया जा रहा है जिसके सत्तर हज़ार दरवाज़े हैं फिर जब फ़रिश्ते उसको उस महल में

बिठा देंगे तो पहला दरवाज़ा खुलेगा उसमें से सत्तर हज़ार फ़रिशते निकलेंगे कहेंगे अल्लाह पाक आप को सलाम भेजते हैं और ये है आप का हदिया सत्तर हज़ार उसको पैश करेंगे वह कहेगा रख दो। वह चले जाऐंगे दूसरा दरवाज़ा खुलेगा उस में से एक लाख चालिस हज़ार फ़रिशते आऐंगे और आकर सलाम करेंगे और कहेंगे कि ये हदिये अल्लाह ने आप को दिये हैं एक लाख चालिस हज़ार हदिये। वह फ़रिशते चले जाऐंगे।

फिर तीसरा दरवाज़ा खुलेगा उसमें से दो लाख अस्सी हज़ार फ़रिशते दाख़िल होंगे कहेंगे अस्सलामु अलैकुम आप को अल्लाह ने सलाम भेजा है और ये दो लाख अस्सी हज़ार हदिये हैं जो आप को पैश किए जा रहे हैं वह कहेगा ठीक है रख दो। वह चले जाऐंगे।

चौथा दरवाज़ा खुलेगा उस में से पाँच लाख साठ हज़ार फ़रिशते आऐंगे वह आकर सलाम करेंगे और पाँच लाख साठ हज़ार हदिये देंगे वह कहेगा रख दो।

फिर पाँचवाँ दरवाज़ा खुलेगा उस से दो गुने उस में से निकलेंगे फिर सातवाँ उस से दो गुने फिर आठवाँ उस से दो गुने फिर सारे सत्तर हज़ार दरवाज़े खुलेंगे तो उस में अरब हा अरब फ़रिशते दाख़िल होंगे और कितने हदिये लेकर आऐंगे इस हामिले कुर्आन की यह क़ीमत अल्लाह लगा रहे हैं लोग बेशक न लगाऐं लोग तो कहेंगे बेचारा इमामे मस्जिद और ये बेचारे मौलवी। लोगों के टुक्ड़े खाकर ज़िंदगी गुज़ारते हैं लोगों में तो ये बात चलेगी।

मुर्दा गोह (जानवर) ने आप स॰ की नुबूव्वत की गवाही दी

एक बद्दू आप स॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उसके हाथ

में मरी हुई एक गोह थी जो आप स॰ के सामने फैंकी और कहने लगा जब तक ये तेरी रिसालत की गवाही न दे उस वक़्त तक मैं तेरी रिसालत की गवाही देने के लिए तय्यार नहीं हूँ वह गोह भी मुर्दा थी आप स॰ ने उस से इरशाद फ़रमायाः ऐ गोह! गोह ने कहा لبيك وسعديك يا مزين ماوفى يوم القيامة! लब्बैक मैं हाज़िर हूँ ऐ क़यामत के दिन को ज़ीनत बख़्शने वाले जितने भी क़यामत में आऐंगे सबको ज़ीनत बख़्शने वाले, आप ने फ़रमाया تعبد؟ तू बंदगी किसकी करती है? ये मुर्दा है शिकारशुदा है गोह ने जवाब दिया। من فى السماء عرشه وفى الارض سلطانه وفى البحر سبيله وفى الجنة رحمته وفى النار عقابه۔ मैं उसकी बंदगी करती हूँ, जिसका अर्श आसमानों में। सलतनत ज़मीनों में, और उसके बनाए हुए रास्ते समन्दर में। रहमत जन्नत में और अज़ाब जहन्नम में है, आप स॰ ने फ़रमाया। من انا؟ मैं कौन हूँ? गोह ने जवाब दिया। انت رسول رب العالمين وخاتم النبيين आप स॰ अल्लाह के रसूल हैं और ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं, قد افلح من صدقك وقد خاب من كذبك आपके मानने वाले कामयाब और न मानने वाले नाकाम।

एक मवहिद से अल्लाह ने पूछा मेरे लिए क्या लाए हो?

एक बुर्जुग का इंतिक़ाल हुआ, किसी को ख़्वाब में मिले पूछा क्या हुआ तेरे साथ? कहने लगे अल्लाह ही ने मेहरबानी फ़रमा दी वरना मैं तो हलाक हो गया था पूछा कैसे? कहा अल्लाह ने पूछा मेरे लिए क्या लाए हो? मैंने अर्ज़ किया या अल्लाह मैं तेरे लिए सत्तर साल की तौहीद लाया हूँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया अच्छा फ़लाँ रात तेरे पेट में दर्द हुआ था पूछने वाले ने पूछा था ये दर्द क्यों हुआ तूने कहा दूध पिया जिसकी वजह से दर्द हुआ उस वक़्त

ये तौहीद कहाँ चली गई थी मेरे भाई हमें तो कहते हुए डर लगता है वरना हमारे अंदर शिर्क की जड़ें पता नहीं कहाँ तक गहराइयों में जा चुकी हैं।

मसाकिने तय्यबा क्या हैं?

एक आदमी ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ि॰ से पूछा मसाकिन तय्यबा क्या होते हैं? आप रज़ि॰ ने फ़रमाया जन्नत में एक महल है जिसके अंदर सत्तर हवेलियाँ हैं सुर्ख़ याकूत की। फिर हर हवैली में सत्तर कमरे हैं सब्ज़ ज़मर्द के। फिर हर कमरे में सत्तर चारपाइयाँ हैं हर चारपाई इतनी लम्बी है कि उस पर सत्तर बिस्तर लगे हुए हैं।

हर बिस्तर पर एक लड़की जन्नत की हूर बैठी हुई है वह ऐसी ख़ूबसूरत है कि सूरज को उंगली दिखा दे तो सूरज नज़र न आए समन्दर में थूक डाले तो समन्दर मीठा हो जाए। मुर्दे से बात करे तो मुर्दा ज़िंदा हो जाए सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म नज़र आता है। बीमार न हो बुढ़ापा न आए। ग़म न आए। परेशानी न आए। पैशाब नहीं पाख़ाना नहीं। हैज़ नहीं और उसको अल्लाह तबारक व तआला ने गारे मिट्टी से नहीं बनाया मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान से बनाया है। फिर हर कमरे में सत्तर दस्तरख़्वान हैं। हर दस्तरख़्वान पर सत्तर क़िस्म के खाने हैं। हर कमरे में सत्तर नौकर नौकरानियाँ हैं। इतना लम्बा चौड़ा एक घर है और फिर अल्लाह तआला क्या ताक़त देगा ईमान वाले को दीन से मुहब्बत करने वाले को। अल्लाह पाक ईमान वाले को दीन की मेहनत करने वाले को ऐसी ताक़त देगा कि आधे ही दिन में सारी बीवियों के पास जा सकता है सारे खाने खा सकता है। कुछ भी नहीं होगा। ताक़त भी जवान सेहत भी जवान ये है मसाकिन तय्यबा।

भलाई फैलाने वाले के साथ ऐना का निकाह

हदीसे पाक में आया है कि जन्नत में एक हूर है जिसका नाम ऐना है। जब वह चलती है उसके दाऐं तरफ़ सत्तर हज़ार ख़ादिम। उसके बाऐं तरफ़ सत्तर हज़ार। एक लाख चालिस हज़ार ख़ुद्दाम अंदर खड़ी होती है दरमियान में सत्तर हज़ार इधर। सत्तर हज़ार उधर और वह कहती है।

भलाइयों के फैलाने वाले और बुराइयों के मिटाने वाले कहाँ हैं।

अल्लाह ने मेरा हर उसके साथ निकाह कर दिया है जो दुनिया में भलाई फैलाएगा बुराई मिटाएगा तब्लीग़ का काम करेगा। मैं उसकी बीवी हूँ इसका मतलब ये नहीं कि वह एक है जितने तब्लीग़ का काम करने वाले पैदा हो जाऐंगे उतनी ही अल्लाह ऐना पैदा करता चला जाएगा। तो कहा जब मैं चौथी नहर भी पार कर गया तो उन्होंने भी कहा हम नौकरानियाँ हैं मैं आगे चला गया आगे देखा तो सफ़ेद मोती का ख़ूबसूरत ख़ैमा जो जग्मगा रहा था रौशन चमकदार उसके दरवाज़े पर एक लड़की खड़ी है सब्ज़ लिबास पहन कर उसने जब मुझे देखा तो उसने मुंह अंदर किया और अंदर कर के कहा।

ऐना तुझे ख़ुशख़बरी हो तेरा ख़ाविंद आ गया। ऐना तेरा ख़ाविंद आ गया तेरे घर वाला आ गया तो मैं अंदर गया सारा ख़ैमा नूर से रौशन और ख़ैमे के अंदर दरमियान में तख़्त पड़ा हुआ था तख़्त पर गावतकिये लगे हुए क़ालीन बिछे हुए और उसके ऊपर एक लड़की बैठी हुई थी ऐसा हुस्न व जमाल जिसको देख कर आदमी का कलेजा ही फट जाए न बर्दाश्त की ताक़त न देखने की ताक़त जब मैंने उसे देखा तो मैंने कहा अच्छा ये है ऐना

तो उसने मुझे कहा।

ऐ अल्लाह के वली तेरा मेरा मिलाप अब क़रीब है तेरे मिलने का वक़्त अब क़रीब आ गया है कहा मैं तो उसको देख कर आगे बढ़ा कि उसके पास बैठूँ उसको गले लगाऊं तो उसने मुझे कहा। नहीं सब्र करो सब्र करो। अभी तू ज़िंदा है।

लेकिन आज तेरा रोज़ा मेरे पास इफ़्तार होगा। कहा अब तो मेरी आँख खुल गई है अब मैं वापस नहीं जाना चाहता। अगर आप भी एक झलक ऐना की देख लें तो सारे ही वापस राएवंड चले जाओ तो उन्होंने कहा अब तो मैं बस जान देना चाहता हूँ टक्कर हुई सबसे पहले ये बच्चा शहीद हुआ। अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने देखा वह हंस रहा और मर रहा था, मर भी रहा और हंस भी रहा। जब वापस आए तो उस बच्चे की माँ आई उसने आकर कहा अब्दुल वाहिद मेरे हदिये का क्या बना वह अपने बेटे को कह रही है हदिया। अल्लाह को हदिया दिया था। अल्लाह के रास्ते में उस वक़्त माएें ऐसी थीं कहा मेरे हदिये का क्या बना। कुबूल हो गया कि मरदूद हो गया। यानी मर गया तो कुबूल हो गया वापस आ गया तो मरदूद हो गया। कहा भाई। कुबूल है कि मरदूद है। तो उन्होंने कहा कि मक़्बूल है। रात को माँ ने ख़्वाब देखा तो उसका बेटा जन्नत में तख़्त पर बैठा है ऐना उसके साथ बैठी है वह कह रहा अम्मां अल्लाह ने तेरा हदिया कुबूल किया है और ऐना उसके साथ बैठी है वह कह रहा है अम्मां अल्लाह ने ऐना से मेरा निकाह कर दिया है। उसे मेरी बीवी बना दिया है मुझे उसके घर वाला बना दिया है तो जो दावत की मेहनत में अपनी जान माल को खपाएगा ऐसे ऊंचे दरजात में हो जाएगा।

अबू रिहाना रज़ि॰ का नमाज़ में खुशू और खुज़ू

हज़रत अबू रिहाना रज़ि॰ सफ़र से आए बीवी बड़े इंतिज़ार में है कि चलो आज तो ख़ाविंद घर में आया ये भी एक ज़माना था कि कल्मे के लिए फिरा करते थे उसको फैलाते थे। जब ये वापस आऐ तो कहा दो रकअत नफ़िल पढ़ लूं जब नमाज़ में खड़े होकर कुर्आन पाक शुरू किया तो फ़जर की अज़ान हो गई अब आप बताऐं जब आदमी दूर से आए तो उसकी बीवी का कितना इश्तियाक़ होगा, बीवी के साथ ही खड़े होकर फ़जर की अज़ान तक नमाज़ में मसरूफ़ रहे बीवी कहने लगी या अबा रिहाना غضبت ورجعت وتعبدت امالنا منك نصيب؟ अबू रिहाना ये क्या सितम है एक तो फिरते फिराते रहे वापस आए तो सारी रात खड़े होकर नफ़िल पढ़ते रहे क्या मेरा कोई हक़ नहीं है कहने लगे نسيت والله अल्लाह की क़सम मैं भूल गया कहने लगी अल्लाह के बंदे बाहर होते तो भूलना ठीक था मेरे कमरे में और मेरे साथ खड़े होके कैसे भूल गया कहने लगे जब मैंने अल्लाहुअक्बर कह कर कुर्आन पढ़ना शुरू किया तो जन्नत और दोज़ख़ में ग़ौर करना शुरू किया और जन्नत और दोज़ख़ मेरी आँखों के सामने खुल गई तो उसी में मगन रहा मुझे ख़्याल ही नहीं रहा, ऐसी नमाज़ थी, हमें फ़िक्र ही नहीं कि हमें नमाज़ भी ठीक करनी है दुकान को डेकोरेशन, दरवाज़ा लगा दो शीशे लगा दो, कुर्सियाँ रख दो उसके ऊपर पता नहीं क्या बिछा दो, लाइटें लगा दो ऐयर कंडीशन लगाओ और पता नहीं क्या क्या होता है दुकान ख़ूबसूरत होगी लोग ख़्वाह मख़्वाह आऐंगे। भाइयो अल्लाह भी कहता है कि मेरी बारगाह में आता है तो नमाज़ की शक्ल ठीक कर ले। अल्लाह को लूला लंगड़ा अमल टिकाया और दुकान में आया तो ख़ूब सजाया

अल्लाह के सामने आया तो गदा होके मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के लाए हुए अहकामात पर अमल करने के लिए एक आदमी नमाज़ पढ़ने जा रहा है कोई ज़कात दे रहा है उससे पूछा ऐ मियाँ ये पैसे का क्या कर रहे हो? उसने कहा ज़कात दे रहा हूँ। पूछा क्यों? उन्होंने कहा मुहम्मद स॰ को अल्लाह का रसूल माना है उन्होंने फ़रमाया कि ज़कात दो अब ज़मीनदार उश्र निकाल रहा है क्योंकि मैंने मुहम्मद स॰ की रिसालत का इक़रार कर लिया है अब मेरी आमदनी घटे या बढ़े मेरा ख़र्चा पूरा हो या न पूरा हो मुझे उश्र निकालना है ये नहीं देखना कि मेरी ज़रूरत क्या है ये देखना है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह स॰ ने क्या फ़रमाया है।

ऐ मेरी बेटी तीन दिन से मेरे घर में चूल्हा नहीं जला

जिसने कल्मा पढ़ा है उसके लिए जन्नत तो है। मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलना है उनके पेट पर पत्थर बंधे हुए थे मेरे पेट पर पत्थर तो नहीं बंधे उनके बच्चे पर सात सात दिन तक फ़ाके पहुंचे हैं और वह फ़रयाद करते हुए पहुंचता है कि या रसूलुल्लाह फ़रिशते तस्बीह पढ़कर पेट भरते हैं फ़ातमा क्या चीज़ खाए?

आपने फ़रमाया बेटी! उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे नबी बरहक़ बना कर भेजा है तीन दिन हो गए हैं मेरे घर में भी चूल्हा नहीं जला इसलिए आप स॰ ने सादा ज़िंदगी का मेयार मुंतख़ब किया ताकि ये कोई न कह सके कि गुज़ारा कैसे करें? पत्थर बांधने की गुंजाइश है। नबी में चालिस आदमी की ताक़त होती है और जन्नत में एक आदमी में सौ आदमियों की ताक़त होगी ख़ातिमुल अंबिया की ताक़त कितनी होगी?

तीन बर्रे आज़मों का हुक्मरान और बेटियाँ कच्चे प्याज़ से रोटी खाऐं

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ घर में तशरीफ़ लाए तो बेटियाँ कपड़ा मुंह पर रख कर बात करती हैं कहने लगे क्या करती हो? मुंह पर कपड़ा क्यों रखा हुआ है? तो ख़ादिमा रोने लगी, कहने लगी अमीरुल मोमिनीन कुछ ख़बर है कि तेरी बेटियों ने आज कच्ची प्याज़ से रोटी खाई है, तीन बर्रे आज़म का वाली और हुक्मरान और उसकी बेटियाँ कच्चे प्याज़ से रोटी खाऐं हमारे हाँ मज़दूर की बेटी कच्चे प्याज़ से रोटी नहीं खाती इतने बड़े हाकिम की बेटियाँ प्याज़ से रोटी खाऐं और आपको बदबू से नफ़रत है इसलिए कपड़े से मुंह को ढांपे हुए हैं हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़िअल्लाहु अन्हु रोने लगे कौन चाहता है कि उसकी औलाद मुसीबत में रहे मेरी बेटियो! मैं तुम्हें बड़े लज़ीज़ खाने खिला सकता था, लेकिन मैं जहन्नम की आग को बर्दाशत नहीं कर सकता सब्र करो अल्लाह अच्छा खिलाएगा फ़ाक़ों पर अल्लाह का वादा है कि अल्लाह पालते हैं नेकी पर अल्लाह का वादा है कि अल्लाह पालते हैं हराम पर अल्लाह का वादा नहीं, इस पर तो वादा ये है कि ज़लील व ख़्वार करूंगा, उनकी नस्लें रोती हैं जो हराम कमाई औलाद के लिए छोड़ कर मरते हैं वह क़ब्रों में औलाद को रोते हैं औलाद रोती है दुनिया में वह क़ब्रो में रोते हैं, अब यहाँ गुज़ारा कैसे होगा।

फ़्रांस में तब्लीग़ी जमाअत का एक अहम वाक़िआ

फ़्रांस में एक जमाअत पैदल चल रही थी तीन लड़कियों ने

अपनी गाड़ी जमाअत वालों के पास खड़ी कर दी और बाहर निकलीं जेब से रुपये निकाले और जो आगे चल रहा था उसको दिए और जो अरब वहाँ जाकर आबाद हैं जिनमें जाकर जमाअतें काम करती हैं और उनको अपने साथ चलाते हैं इसी तरह वह मकामी अरब भी साथ चल रहा था उन लड़कियों ने उनको पैसे दिये कहने लगीं शायद आप लोगों के पास किराया नहीं है इसलिए ये किराया हमसे ले लें तो उस अरब ने कहा उनके पास किराया और अपने अपने पैसे हैं वह कहने लगी फिर आप को सवारी नहीं मिली होगी? हम आपके लिए शहर जाते हैं और ख़ाली वैगन आपके लिए लाते हैं उस पर बैठकर जहाँ चाहे चले जाएें उसने कहा वैगन उनके पास अपनी है वह तो सामान लेकर आगे चली गई है ये पैदल चल रहे हैं वह कहने लगीं ये पैदल क्यों चल रहे हैं? तो उन्होंने कहा कि जी अब आप हज़रात जवाब दो, इस जमाअत में जो आलिम थे उनसे पूछा गया कि उनको क्या जवाब देना है (बाज़ जमाअतो में कोशिश होती है कि उनकी जमाअत में एक आलिम ज़रूर हो तो वह ज़बान बनता है) उन्होंने कहा उनसे कहो कि हम लोगों की ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हैं कि सारी दुनिया में अमन हो जाए और अल्लाह पाक अपने बंदों से राज़ी हो जाए। लड़कियों ने कहा अच्छा हमारी भी ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हो, कहा हाँ, आप की भी ख़ैरख़्वाही के लिए चल रहे हैं और हम दुआ करते हैं कि अल्लाह सारी दुनिया के इंसानों से राज़ी हो जाए। कहा हमारे लिए भी दुआ करते हैं? कहा हाँ आप के लिए भी दुआ करते हैं अब उनमें से एक लड़की ने कहा कि अब मुझे पता चल गया कि आप कौन हैं? हम कौन हैं? कहा आप सब नबी हो। अल्लाहुअक्बर हाँ ये काम ख़त्मे नुबूव्वत की पहचान है काश

हम इसको समझ लें, उन्होंने पूछा कि आप को किस तरह पता चला कि हम नबी हैं? उन्होंने कहा हमने अपनी मज़हबी किताबों में पढ़ा है कि नबी लोगों की ख़ैरख़्वाही के लिए फिरते थे और उनके पीछे पीछे फिरते थे तो ये सारी बातें हमने आप में देखीं लिहाज़ा आप नबी हैं तो उन्होंने कहा की उनसे कहो कि हम नबी नहीं हैं हम ऐसे नबी की उम्मत हैं उस नबी के बाद कोई नबी नहीं आएगा और इस उम्मत के ज़िम्मे नबी का काम लगा है क्योंकि हमारे नबी के बाद और कोई नबी नहीं आएगा। इस वजह से हम उनके पैग़ाम को लेकर दुनिया में फिर रहे हैं उन्होंने कहा ठीक है ठीक है हमारे लिए भी दुआ करें मेरे भाई अल्लाह की तरफ़ बुलाना उसकी अज़मत और बुर्ज़ुगी का बोलना रिसालत की तरफ़ बुलाना और अपने दिल से लगाना मख़्लूक़ से कुछ न चाहना ये वह काम है जो बतलाया गया ये लोग आख़िरी नबी के उम्मती हैं पहले लोगों में जब बिगाड़ आता था तो नेक लोग नबियों का इंतिज़ार करते थे, हमें नबियों के इंतिज़ार का हुक्म नहीं मिला हमें ये हुक्म मिला कि नबी के कल्मे को लेकर फिरते चले जाओ ये तब्लीग़ का काम ख़त्मे नुबूव्वत की पहचान है अगर उम्मत इस काम को छोड़ती है तो ये ख़त्मे नुबूव्वत का अमली इंकार है अमली इंकार से आदमी फ़ासिक़ हो जाता है ऐतिक़ादी इंकार से काफ़िर होता है अगर हम बैठ जाएं भाई! कि बस नमाज़ पढ़ो अल्लाह अल्लाह करो हलाल रोटी खाओ बीवी बच्चों के हुक़ूक़ का ख़्याल करो, बच्चों की तालीम व तरबियत का ख़्याल करो बस इतना करो तो तुम्हारे लिए काफ़ी है ये एक ज़हन चल रहा है हर मुसलमान का तक़रीबन यही ज़हन है।

अल्लाह की रहमत कितनी वसी है

जब फ़िरऔन ग़र्क़ होने लगा तो उसने कल्मा पढ़ा जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने आगे बढ़कर उसके मुंह में मिट्टी डाल दी कि कहीं अल्लाह तौबा कुबूल न कर ले। जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह स०! जब फ़िरऔन ने कल्मा पढ़ा तो मुझे ये डर लगा कि अल्लाह की रहमत इतनी वसी है कि कहीं फ़िरऔन की तौबा कुबूल न हो जाए और उसके ज़ुल्म देख कर दिल ने ये सोचा कि ये ख़बीस कहीं तौबा कर के न मर जाए। मैंने मुंह बंद कर दिया कि तौबा न कर सके।

क्या पाकिस्तान में इस्लाम फैल गया है?

मानचिस्टर में एक आदमी से मिले सय्यद हाशमी से हज़रत हसन रज़ि० की औलाद में से थे। बेटा इसाई दो बेटियाँ इसाई बीवी भी इसाई सारा शज्रा नसब घर में लटका हुआ था शैख़ अब्दुल क़ादिर रज़ि० का दरमियान में नसबनामा आता था। मैंने उसके बेटे से पूछा तुम मुसलमान हो? कहा नहीं? मैं कैथोलिक हूँ। मैंने कहा क्यों तेरा बाप तो मुसलमान है? कहा मेरी माँ कैथोलिक है मैं भी कैथोलिक हूँ। हम उससे मिलने गए तो उसने ऐसी चढ़ाई की कि अच्छा पाकिस्तान में इस्लाम फैल गया कि इंगलिस्तान में तब्लीग़ करने आ गए वहाँ रिशवत है, ज़िना है, ये है वह है जाओ वहाँ तब्लीग़ करो, हमारा वक़्त ज़ाए न करो, अगर तुम्हारे पास पैसे ज़्यादा हैं तो हमें दे दो यहाँ भी अब बेरोज़गारी बढ़ रही है। हम यहाँ लोगों में तक़सीम कर देंगे इतनी बेइज़्ज़ती की रब का नाम, इतने में उसकी बीवी आ गई, उसने हेलो हेलो करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो हमने हाथ मिला कर सलाम नहीं किया और

हमने कहा भाई हम तो ग़ैर औरत से हाथ नहीं मिलाते, तो इतना गुस्से में आया कि तूने मेरी बीवी की तौहीन कर दी, हमारे सामने ही खड़े होकर उसके गले लग के चूमने लगा, ये बड़े जाहिल लोग हैं इनको तुम्हारा पता नहीं, इनको आदाब का ही नहीं पता, मैंने कहा, अल्लाह करे हम ऐसे जाहिल ही रहें। दो दिन के बाद मैंने उसे फ़ोन किया। कहा हज़रत! आप हमारा खाना पसंद फ़रमाऐंगे। सिर्फ़ आप को खाने के लिए बुलाना है। पंद्रह मिनट मैंने उसकी मिन्नत समाजत की कि आप खाना आकर खा जाऐं। आख़िर वह तय्यार हो गया कि अच्छा ठीक है लेकिन मुझे लेकर जाओ। हम गए उसको लेकर आए। कोई मेरे ख़्याल में पंद्रह बीस लाख का उसने ज़ेवर पहना हुआ था। सोने का, जवाहिरात का और हीरों का और पता नहीं क्या क्या ये कम से कम में बता रहा हूँ, मुम्किन है इससे ज़्यादा हो। हमने उसे मस्जिद में बिठाया। उसने बयान सुना जब हम उसे छोड़ने के लिऐ गए तो कहने लगा सत्ताईस साल के बाद पहली दफ़ा मस्जिद में आया हूँ। मैंने कहा काम बन गया, जो कह रहा है कि मैं सत्ताईस साल के बाद मस्जिद में आया हूँ तो मालूम होता है कि इसका पुराना ईमान जाग रहा है, फिर दो दिन बाद दोबारा उससे मिलने गए फिर उसको मस्जिद में लाए खाना खिलाया बात सुनाई फिर दो दिन छोड़ के फिर उसको लाए। तीसरे दिन खड़ा हो गया। कहा मेरा नाम लिखो तीन दिन के लिए। सुबह सुबह उसका टेलीफ़ोन आया मुझे मस्जिद में क्या जादू कर दिया है तुम लोगों ने, मैंने कहा क्या हुआ? कहा मेरी ज़बान से ज़ोर ज़ोर से कल्मा निकल रहा है। मैं अपने आप को रोक भी रहा हूँ मुश्किल से कि मुझे क्या हो गया है। मैंने कहा ईमान ज़िंदा हो गया है, और कुछ भी नहीं हुआ। हाँ

फिर जो उसने हमारे साथ वक़्त लगाया वह जो रोता था उसको रोता देख के हम भी रोते थे। फिर उसके बाद उसका ख़त आया, कहा वह दिन और आज का दिन उसकी तहज्जुद क़ज़ा न हुई। उस दिन से उसकी नमाज़ क़ज़ा हुई है न रोज़ा क़ज़ा हुआ है। सत्ताईस साल की ज़कात पाकिस्तान में देकर गया है। और पहले दिन कहा था मैं कोई फ़ालतू हूँ कि यहाँ आया हूँ वक़्त ज़ाए करने, फिर जो उसका ख़त आया उसमें लिखा था, आप इंगलिस्तान आ जाऐं। सारा ख़र्चा मेरे ज़िम्मे, यहाँ आके तब्लीग़ करो, यहाँ के मुसलमानों में तब्लीग़ की बहुत ज़रूरत है, ऐसे लाखों करोड़ों हीरे बिखरे पड़े हुए हैं। आगे सुनिए फिर कहने लगा मेरी बीवी को दावत दो। हमने कहा। तीस साल तो तूने उसके सामने गुज़ारे हमारी बात उसे कैसे समझ में आएगी। कहा नहीं तुम दावत तो दो। हम ख़ैर गए उसकी बीवी से बात की वह कहने लगी पहले ये मुझे मुसलमान बनके दिखा दे फिर मैं भी मुसलमान हो जाऊंगी।

मुफ़्ती साहब से एक जाहिल ने कहा सूफ़ी जी हर जगह नमाज़ हो जाती है

मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन साहब रह० मोहतमिम दारुल उलूम फ़ैसलाबाद कहते हैं कि मैं रेल गाड़ी में सफ़र कर रहा था मग़रिब की नमाज़ का वक़्त हो गया तो मैं उठा क़िब्ला रुख़ देखने के लिए बाहर जाने लगा एक आदमी कहने लगा सूफ़ी जी हर जगह नमाज़ हो जाती है सीट पर बैठकर पढ़ लो जैसे आपने देखा होगा रेल गाड़ी में सीट पर बैठे बैठे नमाज़ पढ़ रहे हैं न क़िब्ला रुख़ न क़याम ये दोनों फ़र्ज़ हैं लोग कहते हैं हो जाती है। नापाक सीट पर बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे होते हैं उनको कहो कि नमाज़ नहीं होती तो कहते हैं कि तुम्हें क्या ख़बर हो जाती है उनको क्या पता

कि मैं मुफ़्ती से बात कर रहा हूँ, मुफ़्ती कहने लगा कि भाई अभी मैंने फ़त्वे का काम तुम्हारे सिपुर्द नहीं किया वह क़िब्ला नुमा देख कर नमाज़ पढ़ने लगा तो उसने किसी से पूछा ये कौन है? तो कहा ये मुफ़्ती ज़ैनुल आबिदीन हैं फ़ैसलाबाद के और वह आदमी भी फ़ैसलाबाद का था वह उनके नाम को जानता था लेकिन शक्ल से नहीं जानता था वह जब नमाज़ पढ़ के आए तो कहने लगा माफ़ कर देना मुझे पता नहीं था कि आप हैं उन्होंने कहा आप का कुसूर नहीं आज सारी उम्मत ही मुफ़्ती है लोग क्या क्या बातें बनाते हैं? उसको देखो ये कहाँ की तब्लीग़ है? बूढ़े माँ बाप छोड़ कर जाओ। माँ के क़दमों तले जन्नत है उनकी ख़िदमत करो यही जन्नत है हलाल खाओ ये भी जन्नत है नमाज़ पढ़ो ये भी जन्नत है ये ख़त्मे नुबूव्वत का ख़्वाह मख़्वाह झगड़ा डाला हुआ है फिर ख़त्मे नुबूव्वत की भी छुट्टी छः अरब इंसानों पर जुल्म हो रहा है वह जहन्नम में जा रहे हैं हम कहते हैं हमारे ज़िम्मे नहीं है अच्छा हमारे ज़िम्मे नहीं तो किसके ज़िम्मे है? कौन जाए? उन्होंने कहा किताब भेज दो किताब तो मुर्दा चीज़ है उसे ज़िंदगी कैसे समझ में आएगी किताब तो नुकूश हैं इससे पता चलेगा कि अख़्लाक़ किसे कहते हैं?

हज़रात हस्नैन रज़ि॰ का भूक की वजह से तड़पना और रोना

अबू तल्हा अंसारी रज़ि॰ बाग़ात के मालिक एक दिन घर में आए तो तमाम बाग़ात उज्ड़े हुए हैं और घर में एक आदमी के लिए भी रोटी नहीं अंसारे मदीना थे और पेट पर पत्थर बांधे हुए हैं ये उनका आलम है कि उनके बाग़ात क्यों लुट गए वह घाटे क्यों पड़े नबी की ख़त्मे नुबूव्वत की मेहनत की वजह से घाटे आए ख़त्मे

नुबूव्वत के काम की वजह से नुक़सान हुआ अगर ख़त्मे नुबूव्वत की मेहनत और दीन के काम का मिज़ाज ये हाता कि अपने कारोबार को भी ठीक रखो और अपने घर के काम से फ़ारिग़ हो जाओ तो दीन का काम भी करो। अगर दीन का मिज़ाज ये होता ख़त्मे नुबूव्वत का मिज़ाज ये होता पहले बीवी बच्चों को रोटी खिला लो फिर तब्लीग़ करो, तो फिर किसी सहाबी को पेट पर पत्थर बांधने की ज़रूरत न पड़ती, हज़रत फ़ातमा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा के सात दिन के फ़ाक़े का कोई दुख नहीं। तो हज़रत हसन व हुसैन रज़ि॰ का भूक की वजह से तड़प तड़प के रोना कोई समझ में नहीं आता ये बाग़ात उजड़ गए घर के घर वीरान हो गए ये क्यों हुआ? हालांकि इन्हें आला और अदना की तमीज़ थी, हमें तमीज़ नहीं है वह अदना पर कुर्बान करते थे हम कुर्बान नहीं कर रहे ये ख़त्मे नुबूव्वत की लाइन का सबसे आला काम है ज़द पड़ गई नुक़सान आ गया घाटा आ गया फ़र्ज़ करो अव्वल तो ये बहुत लोग हैं और जिनके साथ ये होता है वह बड़े मुक़र्रब लोग हैं اشد الناس بلاء الانبياء सबसे ज़्यादा मशक़्क़त में अंबिया होते हैं और ये नुक़सान और घाटे बिला एवज़ नहीं हैं इस पर इतना मिलेगा कि उसकी और नबी की जन्नत के दरमियान सिर्फ़ एक एक दर्जे का फ़र्क़ होगा।

बू अली सीना का एक बुर्ज़ुग के पास जाना

बू अली सीना आए और एक बुर्ज़ुग के पास बैठे रहे जब वह गए तो कहने लगे अख़्लाक़ नदारद, बदअख़्लाक़ आदमी है जब उसे पता चला कि मेरे बारे में यूँ कहा है तो उसने अख़्लाक़ पर एक पूरी किताब लिखी और उनकी ख़िदमत में भेज दी उन्होंने कहा कि मैंने कब कहा था कि अख़्लाक़ नदानद मैंने तो कहा था

नदारद मैंने कब कहा था अख़्लाक़ नहीं जानता जानता तो सब कुछ है लेकिन हैं नहीं मैंने कहा था उसे मालूम नहीं है किताब कैसे बताएगी कि क़ुर्बानी किसे कहते हैं किताब कैसे बताएगी कि मआशरा किसे कहते हैं। किताब तब मददगार होती है जब मआशरा क़ायम हुआ एक मईशत चल रही है एक ज़िंदगी चल रही है इसमें किताब मददगार है पूरी सतह हस्ती पर, पूरी धरती पर एक बस्ती कोई दिखा दें कि जिसमें हुज़ूरे अक्रम स० की पूरी ज़िंदगी और पूरा दीन ज़िंदा है? तो हम कहेंगे ठीक है छोड़ दो तब्लीग़ के काम को हम ख़्वाह मख़्वाह धक्के खाते फिरते हैं सात बर्रे आज़म हैं पाँच अरब इंसान हैं एक बस्ती दस घरों पर मुशतमिल है।

——ख़त्म शुद ——